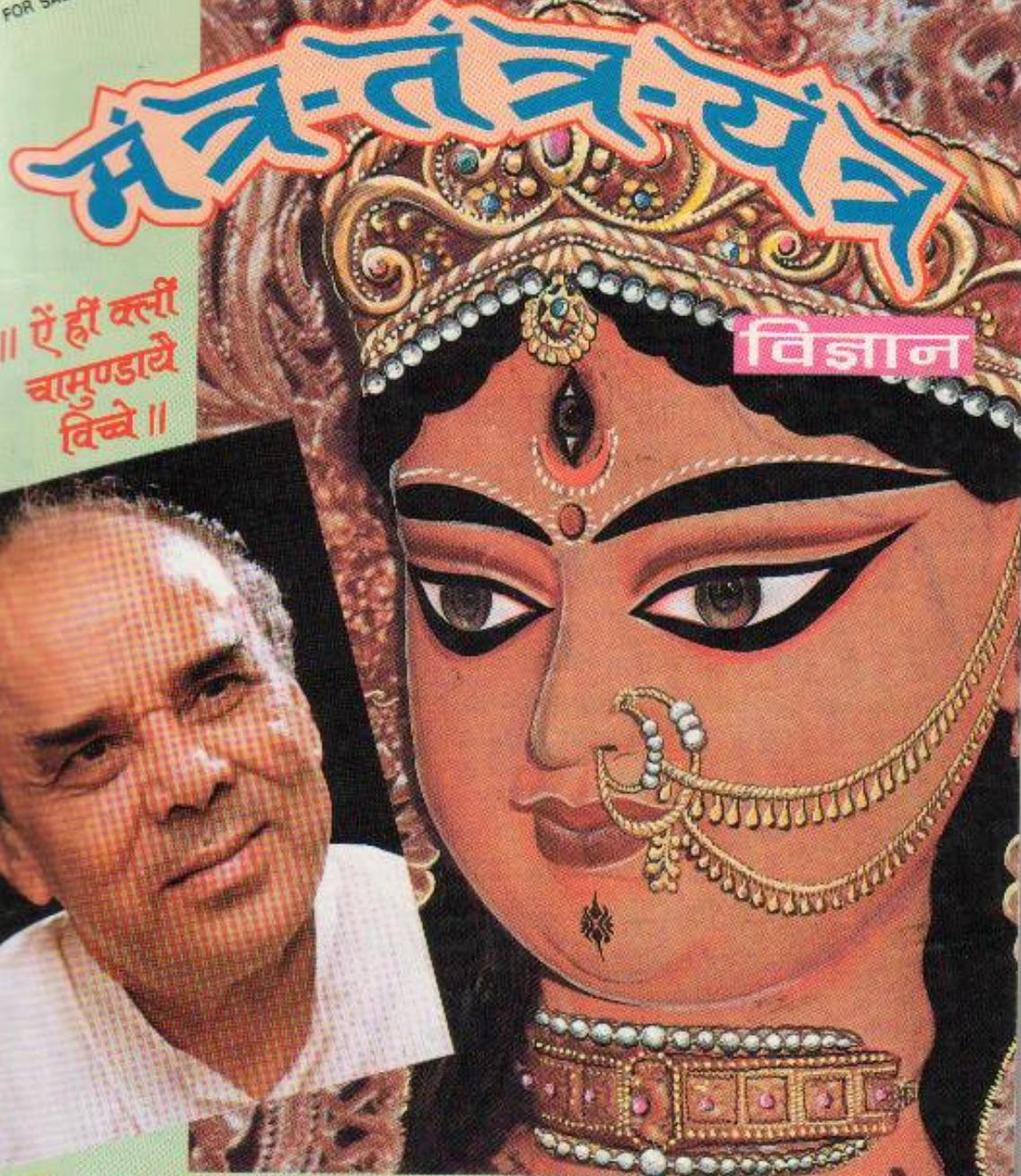


सितम्बर : 98

NOT FOR SALE

# नवार्ण साधना सिद्धि विशेषांक

मूल्य : 18/-



- \* विद्याट शक्ति नवार्ण मंत्र
- \* शास्त्रोक्त नवदूजि पूजन
- \* नवार्ण नवदूजि नवरी वार्णना विज्ञान
- \* महायोगी का महाप्रयाण
- \* काल भैश्वर साधना



**COLLECTION OF VARIOUS**  
→ HINDUISM SCRIPTURES  
→ HINDU COMICS  
→ AYURVEDA  
→ MAGZINES

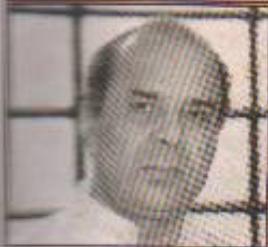
**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

Made with  
  
By  
**Avinash/Shashi**

[creator of  
**hinduism**  
**server!**]

आगे नदा क्रतो यन्तु दिशा  
मात्र जीव की सर्वोन्मुखी प्रकृति, पवित्री और भवतीय एवं विद्याओं से सच्चिदा महसिल कविता

# आर्क-प्रकाश



## सदगुणदेव

- ननुजा मन की असौं खोल 5
- तुक शास्त्रवत् शक्ति है 11
- तुक तुम अमृत कुम्ह हो 42
- Divine Wonder-worker 74

## स्त्रीभ

- ब्राह्मनिडिर ने कहा 31
- लाघक राधी हैं 48
- मैं समय दूँ 50
- नहात्रों की बाणी 71
- इस मास दिल्ली 73
- एक दृष्टि में 84



रो. 18 अंक 6  
सितंबर 1998 पृष्ठ 6

## साधना

शक्ति तंत्र	25	नवार्ण दीक्षा	35
काल गैरव साधना	29	Magic Key	81
शाकभूमी साधना	36		
पिराट शक्ति नवार्ण मंत्र	55		
मानें न मानें	58		
उर्वशी	61		
स्वारथ्य सरिता	64		
दिव्यात्मा साधना	67		
Just Try and See	77		
Blossoming of Life	78	कविरा गुरु गरवा	45
The Divine Goddess	79		

## महाप्रयाण

शोक तर्पणम्	10	मां जगदम्बे शत शत	21
महायोगी का महाप्रयाण	14	बजरंग बाण	40
श्रद्धांजली	82		

## पूजन

दुर्गा पूजन विधान	19	नवरात्रि	53
Bless me Mother	76		
गुरु मासिक आद्व	83		

## विशेष

सम्पादकीय	3
-----------	---

## दीक्षा



## उपन्यासिका

कविरा गुरु गरवा	45
-----------------	----

## तथ्य

मां जगदम्बे शत शत	21
बजरंग बाण	40

## आह्वान



**प्रधान सम्पादक**  
श्री नवदिक्षीर श्रीमाली  
**कालप्रयाणक सम्पादक**  
एव सांवादक  
श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली

**सम्पादक मण्डन**  
डॉ. इयानल कुमार बनर्जी,  
श्री वसना पाटिल, श्री अविल  
जोशी, श्री प्रदीप जोशी,  
श्री अशोक लिह, श्री गुण  
लेवक, श्री रोजन जेम्स,  
श्री एम. आर वाशिष्ठ

**विरोध सत्ताकार**  
श्री अरविन्द श्रीमाली

**वर्किंग सेवक**  
श्रीमती कलक पाण्डेय,  
सुशी पिजयलक्ष्मी,  
श्री प्रभार गौड़  
श्री विद्यापति सहाय

**प्रकाशक एवं स्वामित्व**  
श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली

झारा

विमा पब्लिकेशन्स  
प्रा. लिमिटेड  
D-160 B, सेक्टर VII,  
नोएडा से मुद्रित  
तथा  
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,  
हाईकोर्ट कॉलोनी,  
जोधपुर से प्रकाशित।

**मूल्य (भारत में)**  
एक प्रति : 18/-  
वार्षिक : 195/-

सिंहाश्रम, 308 कोहाट एन्डलेव, गोतमगुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-7182248, टेली फैक्स: 011-7198700  
ग्रन्ति-देव वित्त, डॉ. श्रीमाली गांगे, लक्ष्मीकर्ट कलानी, जोधपुर-342001 (राजस्थान), फोन: 0291-32209, टेली फैक्स: 0291-32010

## नियम

पत्रिका में प्रकाशित वर्षी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मन्त्र-तत्त्व-यत्न विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। हर्दि-कुलन करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को अन्य समझें। विद्या नाम स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, वहि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाए, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक पुनर्वाचन सामूहिक होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना समझन नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में बाद-विवाद या टर्क मान्य नहीं होगा और न की इसके लिए लेखक, प्रकाशक, गुडग या सम्पादक जिम्मेदार होगे। किसी भी सम्पादक को लिखने भी जानकार का परिव्रक्षिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकाशक के बाद-विवाद में बोधपुर न्यायालय भी मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पठक की से भी जाप कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय के समाजने पर हम कप्ती तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यत्न भेजते हैं, पर किर पी उनके बाद में असती या नकली के बारे में अथवा अधिक होने या न होने के बारे में उमरी जिम्मेदारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मिलायें। सामग्री के गूढ़ पर टर्क या बाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का बार्चिक शुल्क बर्तमान में १९५/- है, पर यदि किसी विशेष दर अपरिहार्य कारणों से पत्रिका के ब्रेंगिंग का बंद करना पड़े, तो विलगे भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आलिंगन या आलोचना किसी भी रूप में रखी जानी जाएगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है, यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बंद करना पड़े, तो अजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जाएगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधन में सापलंता-असापलंता, हानि-लाभ की जिम्मेदारी साधक की स्वयं की होती रहा साधक कोई भी ऐसी उपस्थिति, जब या गंत्र प्रयोग न करे, जो नैतिक, सामग्रिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संघर्षी सेल्फों के विचार गत्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्तव्यों की तरफ से होता है। जाहों की भाषा पर इस अंक में पत्रिका के प्रियले लेखों जा भी ज्यों का व्याप्ति सामावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठ सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के अधार पर जो गंत्र, तत्र या गंत्र (ऐसी ही तैयारीय व्याख्या के बहर ही) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पूर्ण पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेदारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा अटिरेट की होगी। श्रीका प्राप्त करने का तार्फ यह नहीं है, कि साधक उसके सम्बन्धित ताप तुरन्त प्राप्त कर सके, यह तो शीर्षी और हात प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही श्रीका प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की लोर्ड भी आपत्ति या आलोचना ल्योकर्य नहीं होगी। गुच्छेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी बहन नहीं करेगे।

## प्रार्थना

कर्त्तीकारी परदेवता भगवती कालिं कलामालिनी, हीकारी श्रतिसंयुतां धनमर्यी सर्वधर्षसंसाधिनीं। ऐकरीं शुचि सस्मितां गुणमर्यो बुद्धिप्रदा मत्तर, चामुण्डा त्रियुतां सदैवमलां 'विच्चे' तथा भाविनीम्॥

वहीं बीज रूपाणा, समस्त कलाओं तथा अग्वल शक्ति सम्प्रज्ञ भगवती महाकाली को, ही बीजमर्यी देव प्रतिपदित भगवती महालक्ष्मी को, जो ऐश्वर्य प्रदान कर तत्पूर्ण मलोरुप को पूर्ण करने वाली है, एं बीज रूपा पदित्र तथा मातृ गुरुकाल से युक्त, समस्त गुणों से विशृष्टि, बुद्धिमात्री भगवती रात्रवती को, जो अतिपावन है, दत्त, रज और तम से युक्त है, उपर्योग तीर्तों बीजों के समवित रूपाणा भगवती चामुण्डा को मैं भावना से पश्चिमूर्ण बमल अपित करता हूँ।

## श्रद्धा मूलं गुरोः पदं

... एक लोककथा है, कि कुछ धर्मोपदेशक धर्म के प्रचार को निकले और उन्होंने एक घने बन प्रातर में रह रहे वहाँ के कुछ मूल निवासियों को नितान अध्युद्ध विष्णु से ईश्वर की प्रार्थना करते पाया। यह वेश्व उन्होंने उन्हें पूजना प्राप्तिका की सही विधि समझाई और नहीं पार करके कहीं अन्यत्र चल पड़े। वे नाव में बैठ, नीच नदी में पहुँचे ही थे, कि उन्होंने देखा कि उन्हीं मूल निवासियों में से कुछ व्यक्ति नदी की सतह पर दौड़ते चले आ रहे हैं। वे प्रार्थना में कुछ मूल जाने के कारण उनके पास आए थे, जिन्हें देख धर्मोपदेशकों को यही कहने के लिए बाधा होना पड़ा, कि 'अब उनके पास उन्हें सिखाने के लिए और कुछ नहीं है' ...

- अनेक तथाकथित भक्त इस कथा को बड़े चाव से कहते और सुनाते हैं। कदमधित यह सिद्ध करने के लिए, कि प्रभु को प्राप्त करने के लिए साधना का कोई अर्थ नहीं होता किन्तु लिये तथ्य का पता नहीं ऐसे तथाकथित भक्त जानबूझ कर उपेक्षा कर देते हैं, या निसे वे अपनी मृदूतावश नहीं समझ पाते हैं, वह यह है, कि इस लोककथा का मूल सन्देश एक अद्या का सन्देश है। अद्या की अनुपस्थिति में केवल भक्ति ही व्यर्थ नहीं होती वरन् साधना भी व्यर्थ हो जाती है। अद्या स्वयं में एक साधना है। अद्या की अनुपस्थिति में जहाँ भक्ति का कोई अर्थ नहीं होता है, तो वहाँ अद्या तत्त्व की अनुपस्थिति में नाभाना में किए जाने वाले मंत्र जप एक यत्न चलित क्रिया से अपिक कुछ नहीं हो सकते।

अद्या स्वयं में कोई मूर्त रूप नहीं होती है। अद्या को शास्त्रोक्त जान अश्रव विद्वान के द्वारा भी नहीं अनित किया जा सकता है। अद्या एक भावगत विषय होती है, जिसका उद्भव होता है श्री सदगुरुदेव की करुणापूरित नेत्रों के समक्ष साक्षात् होने पर, उनके रोम-रोम से प्रवहित होती आनन्द लहरियों और ममत्व वृष्टि के साथ, उनके चरणों से अविरल प्रवहित होती तप की अविरल देवगंगा के द्वारा ...

केवल जान सूत्र की प्राप्ति अथवा किसी अन्यान्य लक्ष्य की पूर्ति की अपेक्षा इसी कारणवश श्री सदगुरुदेव का महत्व जीवन में, समस्त शास्त्रों में एक स्वर से सर्वोपरि स्वीकार्य रहा है।

श्री सदगुरुदेव के वरण कमल केवल मैत्र की नहीं, अद्या के भी मूल होते हैं।

## सम्पादकीय

दिन भाष्य,

जैव लिंगते सरत्राणि बैरं वहति पापकः । ए बैरं कलेदवलवापो ए सोष्वति मात्रः ॥  
नामि सर्वाणि कमणि संज्ञस्याप्यात्मदेत्तचा । लिंगास्तीर्थिर्मो मूलामुपास्य लिंगतप्त्वः ॥



जैवक में आवश्यक, शोठ, प्रेम, विलक्षण एक भ्याजाविक किया है। वे किंवा ही तो जैवक में लिंगास्त जैल देती है, अज्ञा का दीपक हव भभव जगाए नजरी है... और मनुष्य को कर्म के प्रति लिंगास्त जैलहित करती रहती है। जैवक जले के बन्दकों जे बंगला चला जाता है और वह बंदक हर्ने मिर लगने छतों हैं... और को मिर है उसे केवल ज्ञातों जे बही हृष्ट्व जे प्वान किया जाता है। जो मिर होता है उभकी हर बात को, हर कप को हृष्ट्व ने खंडों लेते हैं, आंखों के आमने क होते हुए की मन की कोठरी में बन जाते हैं उन्हें कोई बही हटा नकहा।

पूज्य गुरुकृष्ण जैदेव कहा कहते थे, कि मेरे द्विष्टाम में लिंगले जान कप हैं, उनके ही मेरे द्विष्टाम हैं और किस्याँ का उभीलम प्याब ही मुझे अब तक इब धना पद थोके हुए हैं। मैं बाब-बाब जाने का विद्याव कपला हूँ लोकिन द्विष्टाम के आंखोंके आंखोंमुझे थोक देते हैं। पूज्य गुरुकृष्ण जैदेव कहते थे, कि मेरे इब ढेठ को द्विष्टाम के लिए तपावा है। हजारों भूमियों की वाप्रा छारी लिए ही थी, कि हर कही मुझे दो-चार इब द्विष्टाम प्राप्त हो जाएँ और मैं उन्हें अपव लाज अंडा प्रदान कर राहूँ, लिंगले लाज की गंगा लिंगले बहती रहे, लाज के दीपक में अच्छि भद्रै प्रज्ञवलित रहे और जहाँ तन प्राप्त है, उप लिंगे में लाज लिंगला होगा तो लाज का भूर्द कली उभा बही होगा।

कथा कहूँ और कथा ज कहूँ, जाज जालों कक भए हैं, एक उभा मौक ठाठाकर है, जो उच्च व्यव में अपनी बात कहता ही यह रहा है। पूज्य गुरुकृष्ण जे ठजालों बाब जाने की बात कही और कर्ड बाब तो जपष्ट जंकेत दिले, कर्ड बाब अपनों के बीच सुल कर भी कहा, ज्ञातिलहु तो उन्होंने जाने आविक द्विष्टाम का आदोजन किया, जाने आविक द्विष्टाम के दीक्षा दी और अच्छन अल्प अवासि में जीविकोपवोनी जाहित्य की नवबा की। वे भद्रैय कहते थे, कि वेह, उपजिष्ठ, जातिल ज्ञावादि वहि भवल कप में जल-जल के भमधू लही आए हो मिर उभकी उपवोगिता ही दिया है? मन्त्रह वर्ष पूर्वनंत्र-तंत्र-वंत्र द्विजान का प्रकाङ्क उन्होंने वही व्येव लेकर ही तो किया था। उभ जम्मव कुछ भी का ही प्रकाङ्क रहा था, और आज वह जंक्या जानों में पहुँच नहीं। वह ज्ञातिलहु भमधू तो बकर, कि पत्रिका में गुरुकृष्ण अपवे प्राप्त राजते थे और भद्रैय कर्ड जे जही बात भवल कप में द्विष्टाम को कह देते थे।

जूल ८८ के प्रथम भागान में पूज्य गुरुकृष्ण ने जाताजी के कहा कि, 'ऐ तुम्हें कुछ अमूल्य लिखि जांपजा याताराद, मैंके पिलते कर वर्षों जे शोटे कन बन्ध रुचें और पात्रका के लिए द्विषेष जामदारी तैयार की है, जो भग्नाल कन जन्मदा और हन अंक में द्विषेषित कप जे देते रहता। मैं भग्नावतदा वह देह धोठ हूँ, लोकिन मैंके वह लाज मुझे भद्रैय जीवित रखेगा। मैंके अपवे द्विष्टाम की अपने आतम-प्राप्तों के तानों के बोता है और वे ताम अट्टहैं, अदृश्य हैं, ते कभी उल्लंग ही रही भक्तों। मैंके और तुम्हें तीक बेल जानालों की दृश्यता की है, इन्हें अपवे लाज के अपलावित किया है, वे एक लाज गंगा के प्राप्तवाल वरकप हैं और गुनहारे लिंगजा में भद्रैय इस बेल कर्व में भल्लव रहेंगे। मैंके जाम में जातली भल्लवाल बही आ रहानी हैं, लिंगले धोट कर्व होते रहने और जहाँ कोई अच्छक आए हो मैं हृष रहती हूँ, छारी द्वापाण में उपविष्ट रहूँगा, मैंके कजारी भी

अर्थात् तुम लोगों को तो बता सके किसी को भी ग्रन्थावधि कहीं होगी। मैंने तुम्हारे नाम युक्तवाचीर्णव के छवदावल वर्ष लिखा हूँ और वह आज मरणका काला हूँ, तो उसमें से भी व्याकुलतेव समर्थ मैंने नामक, तपश्चात् के जात किसी को लिख सके विनाश व्यक्ति में समर्पित थे और उसमें मैंने केसे अलग करना चाहा ॥

आज ते शब्द ब्रह्म दादत्य ब्रह्म गए हैं, इन कुछ पांचों में ही तो गुरुकृष्ण ने अब कुछ कह दिया। अब आज वह मुझे कठोर हृष्टव जे बाब-बाब कहना पड़ा है, कि पूज्य गुरुकृष्ण देह कम में अब हमारे पास नहीं हैं, तो हम अबके प्राणों में किनारा हाताकृष्ण रखता होता, इसीलिए मैंने प्रावक्ष में नीता का ब्रह्मोक्ति लिखा है, कि पूज्य गुरुकृष्ण कर्म दिव्यात्मा को ज तो कोई ब्रह्म काट नहीं है, ज कोई अर्जित जला नहीं है, व कोई जल जला नहीं है, और व कोई हवा जले गुरुकृष्ण नहीं है। वह तो अबना प्रह्लाद थे और अबना में क्षमाप्ति हो गए हैं।

लिखित होटा हो वा बढ़ा हो इसमें कार्यक्रम नहीं है, कार्यक्रम है इस बात में कि इन अपने होटे के जीवन में किनारा कर्म करना चाहते हैं। केवल पद्धति के लिए नहीं, अपितु श्रेष्ठ जनान के लिए, वर्षोंकि वही कर्म तो भर्देव हर्ने जीवन कर्योंगे।

वसना शीघ्रतं बस्तु मृत्युर्भृति कदाचन ।

हृदैः तुमेः कि ब्रह्मोक्ति विनाश अमरतां वतः ॥

जिस व्यक्ति का यश होता है, वह व्यक्ति कभी नहीं जरता, वर्षोंकि उसके कार्यों से उत्पन्न यश उसे अमरता प्रदान कर देता है।

पूज्य गुरुकृष्ण ने कीवक में कुछ कर्म प्रावक्ष किए हैं, जिन्हें वे पूर्णता कर दे अके, इसमें भी लिखवायी ही उल्कों कोठ किया नहीं होगी। इत्यादि वे यह प्रकृष्टवा याहते थे, कि मैंने बाब-बाब किसी व्यक्ति को किनारा प्रकाश जे पूज्य करना है। जिस विनाश व्यक्ति के दिवान कब कर्म प्रावक्ष किया है, क्या वे जब कर्म उभी विषाद् व्यक्ति में व्याप्ति कर जो जन्मदद ही भर्कते? इसी विषाद के उल्कोंले आबृत के केन्द्र द्वितीये में उल्कों विषाद् व्यक्ति के ब्रह्मोक्ति कर्म जो जन्मदद ही भर्कते? इसी विषाद के उल्कोंले आबृत के केन्द्र द्वितीये में उल्कों विषाद् व्यक्ति के ब्रह्मोक्ति कर्म जो जन्मदद ही भर्कते? इसी विषाद के उल्कोंले आबृत के केन्द्र द्वितीये में उल्कों विषाद् व्यक्ति के ब्रह्मोक्ति कर्म जो जन्मदद ही भर्कते? इसी विषाद के उल्कोंले आबृत के केन्द्र द्वितीये में उल्कों विषाद् व्यक्ति के ब्रह्मोक्ति कर्म जो जन्मदद ही भर्कते?

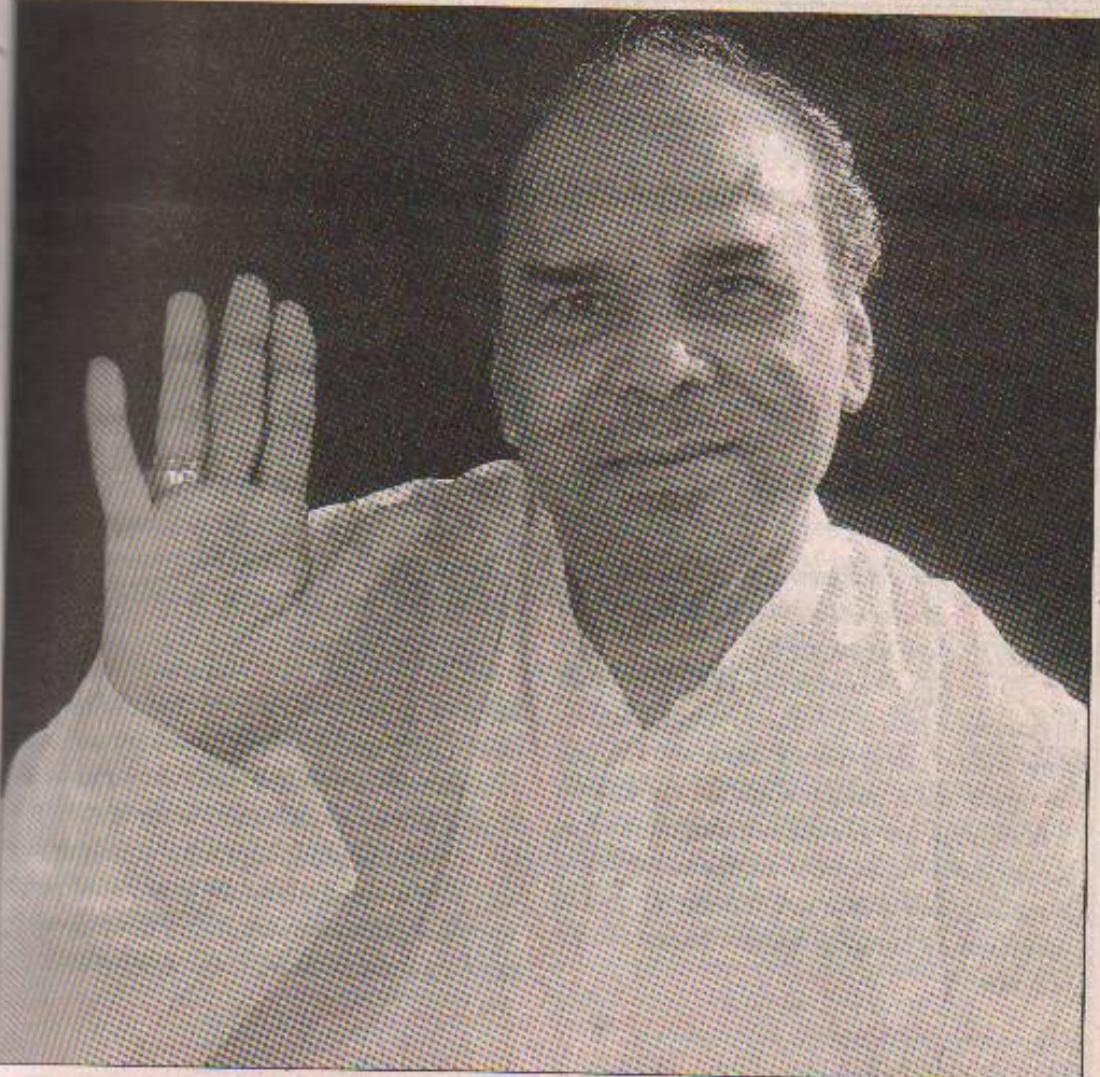
आज आज वह भवति आ भवा है, कि हम अब निष्ठा-युल कल कर्म प्रावक्ष कर्म और प्रेषणा व्यक्ति पूज्य गुरुकृष्ण की जनानि व्यक्ति 'क्षतिकृष्ण' व्याप्ति कर्म आगे की ओर बढ़, जिसी लिए हैं प्रावक्ष में दूसरे श्लोकोंके कहा है, कि पूज्य गुरुकृष्ण की वही इच्छा है, कि तुम अब मुझमें लगे हुए द्वित जो भमरत कर्मोंके मुझे ही भ्रमप्ति कर्म, कल की आज्ञा जो हीन, मनानाप्ति, मनाप्त शूल हीकर्म कर्म की ओर अद्विष्ट ही जाओ।

लिखने को तो बहुत कुछ है लेकिन मैं अनत में केवल जला ही कठोर याहुंगा, कि मुझे हर हृष्टि जे आपके जहांवोंग चाहिए लिखने हम पूज्य गुरुकृष्ण के कर्मोंके ज्ञानव व्यक्ति कर्म दे अके ओर वह अमरत है, वर्षोंकि हमाने जात कुण्ड व्यक्ति गुरुकृष्ण प्रति क्षण हैं।

वह बोजेवदः कृष्णो वह वाहो वद्वर्द्धः ।

तम शीर्घिष्वरो नृतिर्भृता शीतिर्भृतम् ॥

नन्द तिष्ठोऽशीतां  
सप्तरात्मा



नमस्कार!  
महात्मा श्री रवींद्रनाथ

**आत्मातम का आर्थ ही है –**  
**जीवन में जो कुछ भी आत्म पक्ष से**  
**शब्दबिधि हो; और शमस्त आत्म –**  
**पक्षों में सर्वोपरि होते हैं –**

**'श्री सत्यवेद'**

— जिनका 'साक्षात्' कर  
 लेता है कोई भी शिष्य, अपने मन  
 के घटुओं को उभालित कर, अपने  
 आत्म को शुल्केव के आत्म से  
 उकाकार करता हुआ . . .

**अश्राम तिरिशनस्थ इत्यांग्रह वस्त्रक वा**  
**शुल्कमीलितम् वेद तस्मै श्री गुरुरे नमः**

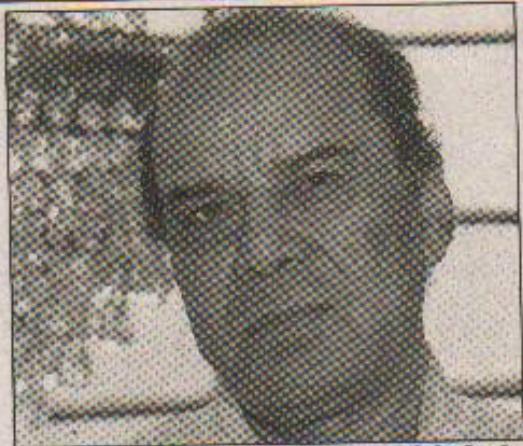
**ॐ** ज्ञान स्फी अंधकार से बुद्धिहीन हो गये व्यक्ति  
 की आंख को जिन्होंने ज्ञान स्फी अंजन से खोल  
 दिया, उन श्री गुरुदेव को नमस्कार है।

प्रातः स्तुति में अथवा नित्य गुरु पूजन के काल में किसी  
 भी साधक अथवा शिष्य के द्वारा उच्चरित किया जाने वाला यह  
 श्लोक कदाचित उतना ही प्राचीन है, जितना प्राचीन वह काल  
 जब व्यक्ति ने जगत के कोलाहलों के मध्य और बाईं कोलाहलों  
 से भी कही अधिक अपने ही अन्तर्जगत में चल रहे कोलाहलों की  
 कटुधनि से ब्रह्म होकर वस्तुस्थिति, वास्तविक शांति की जिज्ञासा  
 में लीन होकर मंथन के किसी चरण में गुरु पद की महत्ता का  
 साक्षात् किया होगा, उसे अनुभूत किया होगा और अन्ततः स्वीकार  
 किया होगा।

उसने नवित होकर इत्यांग्रह का नमस्कार किया है।

कि इस विद्युपम्य नगत में ज्ञानदेह कवल भर हो जो सबने है।  
 मनुष्य के ब्रह्म कोलाहलों से ही नहीं ब्रह्म होता।  
 बाह्य कोलाहल से भी कहीं अधिक जो कोलाहल उसके अन्तर्मन  
 में विभिन्न दृष्टियों से, विभिन्न तुष्णाओं और विभिन्न अटकावों से  
 चल रहा होता है उनमें यद्यपि प्रत्यक्षतः कोई ध्वनि नहीं होती  
 किन्तु ध्वनि की अनुपस्थिति में भी जो कोहराम मच जाता है  
 उससे निराकरण का कोई उपाय होता ही नहीं।

जगत के कोलाहलों से ब्राह्म प्राप्त करना तो फिर भी एक  
 बार सम्भव है। व्यक्ति सप्रयास एकोंत, शांत स्थल की खोज कर  
 विद्वान्ति का अनुभव कर सकता है, किन्तु जिसके अन्तर्मन में ही  
 कोलाहल चल रहा हो वह तो एकांत शांत स्थल पर बैठकर भी  
 चित्त को शांत नहीं कर सकता है।

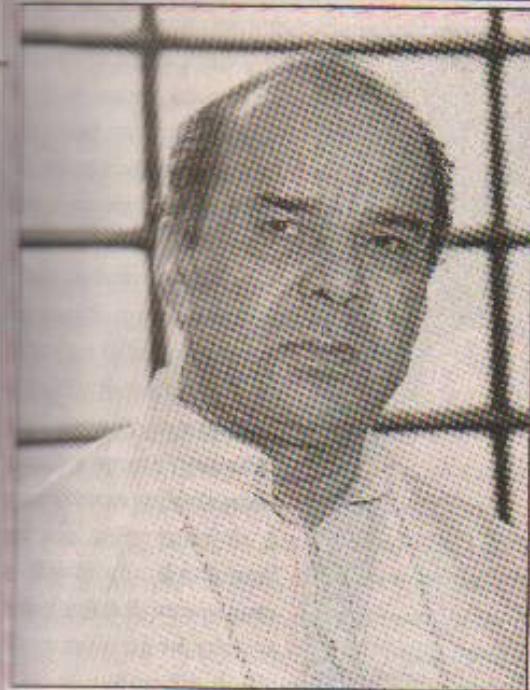


केवल यही नहीं अपितु शांति प्राप्त करने के विपरीत  
 कोई शांत स्थल उसके छँद को और भी अधिक घनीभूत कर  
 देता है और व्यक्ति व्यर्थ में इधर से उधर मटकता हुआ सहानुभूति  
 के, अपनत्व के, ममत्व के दो बोल सुनने को तरसता हुआ जीवन  
 के धने जंगल में अपने आस्तित्व को ही निर्व्यक्त सा अनुभव  
 करने लग जाता है।

**अश्राम तिरिशनस्थ** इस श्लोक के रचयिता को यह  
 ज्ञान से, कि इस जगत में सर्वत ज्ञान से अंधकार की कलिमा छा  
 गड़ प्रतीत होती है और जब मन के नेत्रों के समझ ऐसा घना अंधकार  
 आकर द्वारा अस्मिता पर ही दंश दे जाता हो, तभी उस पीड़ा का बोध  
 हो सकता, है जो इस श्लोक के रचयिता ने अनुभव की होगी।

प्रत्येक व्यक्ति में दो चक्षु होते हैं – चर्म चक्षु और मनः  
 चक्षु। इसे ही मनोविज्ञान बाह्य मन और अन्तर्मन की संज्ञा देता है,  
 और ये दोनों ही नेत्र प्रत्येक व्यक्ति में मनत् क्रियाशील रहते हैं,  
 मने ही व्यक्ति आध्यात्मिक स्थप से शून्य ही बच्चों न हो। **देविक**

यहां विद्युपम्य नगत का निराकरण करता है, कि जो कुछ गतिविधियां  
 उसके नेत्रों के समझ चक्षु रहती हैं उनमें कहीं न कहीं से अपर्णता है  
 आवश्य। प्रत्येक सम्बन्ध को हमारे समझ भले ही प्रत्यक्षतः मधुर  
 स्थल में अपिल्यक ले रहा है उसमें कहीं न कहीं से कोई खोट है  
 आवश्य। **यद्यपि ज्ञानात्मिक आवरण में बदल होने के कारण**  
 व्यक्ति रवय मी मधुरता का, मृस्कान का एक छद्म आवरण ओढ़  
 आवश्य लेना है लेकिन मन के नेत्र उसे सतत इसके प्रति संचेत  
 करते रहते हैं, अवगत कराते रहते हैं और एक प्रकार से कहैं तो  
 व्यक्ति के ढोंग पर ल्यांग करके हंस भी रहे होते हैं, उससे कठ रहे  
 होते हैं, कि इस छलावे से खुद उसका ही जीवन एक विद्वृप बन  
 कर रह जाएगा; किन्तु इस उनका कदु स्वर सूनों में स्वयं को  
 असमर्पया उनका स्वर भुनना ही छोड़ देते हैं।



मन के नेत्रों के पास यद्यपि स्वर नहीं होता, किन्तु वे मूँह नहीं कर भी कुछ का कुछ दिखाते से हुए क्या सब कुछ कह ही नहीं रहे होते हैं? कोई मन के नेत्रों से देखने की कला सीख लेता है और अधिकांशतः नहीं। किन्तु इससे भी वर्त्तुलिखित पर कोई अंतर नहीं बहना है, क्योंकि जिसने मन के नेत्रों से देखने की कला सीख ली वह उनकोनेक विद्यों को पहचानता हुआ स्वयं में कटा सा जीवन जीने की दृष्टि विवशता में घिर जाता है और जिसने नहीं सीखी वह उनकोनेक से अव्यक्त सी अपूर्णता का अनुभव करता हुआ स्वयं में व्यक्ति सा बना रह जाता है। मन के नेत्रों के समझ छा गए अंधकार दे जान कीन नहीं अधिकत है? कीन नहीं वसित है!

— और मन का यह अधिकार, मन के नेत्रों का समझे छा नया घटाटोप अंधकार, जनसंघता अवश्य नेत्रोंनेता से उपने कट से कई अधिक पीड़ादायक होती है।

— यदि व्यक्ति में आत्मबोध की कोई स्मृति शेष रह नहीं हो तो।

— चर्म चक्षुओं के समझ जो कुछ भी माधुर्य, सम्बन्ध ग्रेम, विलास, सुख आदि अन कर परछाई सा हिल हल रहा होता है वह अधिक से अधिक चर्म चक्षुओं की ही संतुष्टि का विषय हो सकता है, मन: चक्षुओं की तृष्णा का नहीं, क्योंकि मन: चक्षु बही चतुराई से प्रत्येक छद्म, प्रत्येक होंग, प्रत्येक आवरण, प्रत्येक विद्युप को पहचान रहे होते हैं। वे सूचित भी करते हैं किन्तु मनुष्य

अपने ही आश्रयों या दुराश्रयों में बच्च होने के कारण कभी तो प्रमावश तो कभी सप्रयास उनकी उपेक्षा कर आगे बढ़ जाता है, क्योंकि मन: चक्षुओं द्वारा दिखाए गए चित्र से उसके अहं पर ठेस जो लगती है और ठेस नहीं लगती तो स्वज्ञों का वह राजप्रासाद धूल धूरारित होता हुआ दिखने लग जाता है, जिसे बड़ी महनत से, कल्पना के एक-एक तिनकों को जोड़कर बनाया गया होता है।

किन्तु जिसने जाने मन: चक्षुओं को ही नहीं समर्थ किया उसके जीवन में आध्यात्मिकता की किसी भूमिका प्रयोग सम्भव ही नहीं, क्योंकि मन: चक्षु ही आत्म चक्षुओं के उन्मीलन का प्रथम सौपान होते हैं और आध्यात्म (अथवा अपने ही आत्म का अध्ययन) तो केवल जानवरों अतः वस्तु नहीं 'परिदृश्यों' के पाठ्यम से ही सम्भव हो सकता है।

आत्म चक्षुओं के उन्मीलन के पश्चात् ही तो अध्यात्म का प्रयोग आर, आनंद का सिद्धार शिष्य या साधक या किसी भी आध्यात्मिक अभियुक्त वाले पुरुष हेतु खुल पाता है।

आत्म चक्षुओं के द्वारा यद्यपि किसी परिदृश्य का बोध उस प्रकार नहीं होता है जिस प्रकार से चलचित्र में विभिन्न परिदृश्य नेत्रों के समझ आते हैं, किन्तु जब मन: चक्षु सत्य की किसी भावभूमि का साक्षात् उस प्रकार कर लेते हैं ज्यों हम अपने चर्म चक्षुओं से किसी उद्घान के परिदृश्यों का साक्षात् करते हैं तब जो सुपांध अन्तर्मन में व्याप्त होती है वही आत्म चक्षुओं के द्वारा उस आनंद की भावभूमि का साक्षात्, उस ब्रह्मानंद का बोध, उसका 'दर्शन' उस प्रकार से करा देती है सम्पूर्ण जीवन ही एक मनोरम चित्र की भाँति दिखने लग जाता है और जो सम्पूर्ण जीवन को एक चलचित्र की भाँति देखने का रहस्य पा जाता है, उस कला को आत्मसात कर लेता है, वस्तुतः वही तो जीवनमुक्त हो सकने में समर्थ होता है, क्योंकि उसने उस साक्षी भाव को प्राप्त कर लिया है जिसके अभाव में यह जीवन जासदायक बन गया होता है।

सदगुरुदेव इन्हीं मन: चक्षुओं पर अपने ज्ञान का अंजन लगाने की किया करते हैं। कदाचित् शास्त्रकारों ने इसी को चित्र की संज्ञा दी है। संज्ञा कोई भी हो, गुरु की दृष्टि में तो मात्र अन्तः पक्षा ही प्रधान होता है। देह उनकी दृष्टि में पक्ष जीण अवश्य विस्मृत तथ्य ही होती है और जो शिष्य स्वयं को विज्ञ रूप में परिवर्तित कर गुरु के समझ स्वयं को प्रस्तुत करता है, निवेदित कर देता है, केवल वही अपने सम्पूर्ण जीवन को धन्य कर पाता है शेष जो देह रूप में अपने मिथ्यापिमान, अहंबोध अवश्य यूं कहें, कि चर्म चक्षुओं के साथ गुरु के सम्मुख उपस्थित होने का प्रारब्धवश सौभाग्य प्राप्त भी कर लेते हैं, वे उसी प्रकार से वापस लौट जाते हैं जिस रूप में प्रस्तुत हुए थे... और जानरूपी अंजन लगाने की गुरु के पास विविध शैलियां होती हैं।

सदगुरुदेव सदैह,  
विदेह स्वरूप में अपनी  
अलौकिक लीलाओं से नित्य  
प्रति उसे ज्ञान जागृति द्वारा  
ज्ञान चक्षु खोलने का प्रयास  
करते ही रहते हैं। शिष्य उनको  
अनुभूति द्वास्य रूप में, रीढ़ रूप  
में करुणा रूप में, वचन रूप में  
अनुभव करता ही है... और  
इसके बावजूद भी वह अपने मन  
के कपाट बंद ही कर दे तो भी  
सदगुरुदेव उसे शक्तिपात्र बिद्या  
द्वारा खोल दी देते हैं।

यही किंवा यह एक  
विषय व्यष्टि में सम्पन्न होती है,  
तो उसकी मांजा वीक्षा ही जाती  
है किन्तु व्यापारं वीक्षा कुछ  
लागों की ही किया जानी वरन्  
सदगुरु की ओर से शिष्य के  
सम्पूर्ण जीवन में सतत रूप से  
सम्प्रभु की जाने वाली किया  
होती है। जो गुरु को इस भाव  
से स्वीकार करते हैं, उन्हीं के  
जीवन में गुरु का अर्थ केवल  
यदा-कदा कुछ दाणों का दैहिक  
मिलन नहीं वरन् उनसे प्रतिपल  
का साहचर्य हो जाता है, क्योंकि

चित्त नो होता है एक आकाश और जो आकाश शिष्य के मन में  
होता है वही आकाश गुरु के मन में भी होता है। व्या सुविस्मृत  
गगन में कोई भैद रेखा खींची जा सकती है? किन्तु आकाश में  
कोई भी चाहारदीवारी था कांटे की बाढ़ तो लग ही नहीं सकती।

...इस आकाश के इस छाए से उस बोर तक विस्तार  
सहज ही अपने देनों को नाप लेता है। गुरु के वित्ताकाश से उड़ा  
आनंद का हम पी सहज ही शिष्य के आकाश में उड़कर आने  
वाला भी देनों की फड़फ़ुहाट से उसके विन पर छा ली प्रनेत्र  
धूल को, रुके हुए प्रवाह को परिवर्तित कर देता है किन्तु यह  
शिष्य विन स्वरूप बना हो जाती है।

मन के नेत्र खुलते हैं तो केवल जीवन को देखने की एक  
वृष्टि ही नहीं मिल पाती वरन् एक पूरा आकाश ही नो खुलकर  
इस देह के अंदर विस्तारित हो जाता है। जहाँ कुछ विस्तारित सा



जबुगृति जालों के बही प्राणों के होती है और  
तुग्हारे प्राणों पर संयेठ, रूपर्य ए अरिष्पात्र के  
ह्याए-ह्याए धारो गोटे पर्दे दंगे हैं। बुकर्ता  
है उहै हातों की, गुरु लूपी गूर्ही की ऐसली  
किंवाँ का जब्द धारों की...

‘गुरु गूर’ के

होगा वहाँ प्रकाश के आगे की घटना  
भी स्वयंमेव सम्पन्न हो जाएगी  
क्योंकि प्रत्येक अंधकार किसी न  
किसी कोने का आश्रय, किसी ओर  
की तरह ढूँढता जो रहता है। चोर तो  
इस मन में कई है, अंधकार के कई  
-कई रूप हैं।

मोह - जीवन का सबसे  
बड़ा अंधकार है मोह! और जब यह  
मोह गुरु प्रदत्त ज्ञान की शलाका से  
नष्ट हो जाता है तभी तो उस निर्मल  
प्रकाश का अनुभव हो पाता है, जिस  
निर्मल प्रकाश में सदगुरु के विनमय  
स्वरूप का साक्षात् स्पर्श हो जाता  
है, जो नेत्रों से अधिक आत्म का  
विषय होता है, जो परोन्मुखी न  
होकर आनंद-नमुखी ही होता है और  
निम्ने लोकोंनियों में गृहों का गुड़ की  
संज्ञा दी जाती रही है।

ज्ञान की शलाका के द्वारा  
केवल मन: चक्षुओं का उन्मीलन  
नहीं वरन् इसके पश्चात् द्वी किसी  
भी जीव में ज्ञान चक्षुओं का  
उन्मीलन सम्भव हो पाता है और  
जब तक ज्ञान चक्षुओं का उन्मीलन  
नहीं हो पाता तब तक किसी भी  
शिष्य अथवा साधक द्वारा की जाने

वाली भक्ति की कोई भी अग्रिम्यंजना स्वयं में एक ढोंग और पास्ता है  
से अधिक कुछ भी नहीं होती।

केवल नुस्खे के ही नहीं वस्तु विलो पी देवी अथवा देवरा  
के स्वरूप का साक्षात् प्रव्यमत्त तो ज्ञान चक्षुओं के माध्यम से ही  
सम्भव हो पाता है। जब तब स्वरूप का साक्षात् नहीं विद्या तब तक  
भक्ति की कोई भी विद्या करना तो कूर चर्चा तक करना व्यर्थ होगा।

ज्ञान की पराकाशा भक्ति होती है, भक्ति की पराकाशा  
आत्मनिवेदन में होती है और आत्मनिवेदन तब सम्पूर्णता को प्राप्त  
होता है जब अशुद्धियों का अविरल प्रवाह होता है। केवल वही प्रवाह  
मन के प्रत्येक कलुप को घो देने में समर्थ होता है अन्यथा जीवन के  
विषयों, विषमताओं में घिरकर तो आज प्राप्त-प्रत्येक व्यक्ति ही निसी  
न किसी स्वरूप की स्थिति में स्वयं को विरा हुआ अनुभव कर रहा है  
और कोई आवश्यक नहीं कि प्रत्येक रुद्धन प्रकटतः ही हो, प्रकट

सद्गुरु से कही अधिक मर्मांतक रुदन तो हृदय के माध्यम से होता है।

मन का प्रत्येक कल्प, कुंडा, पीड़ा, विशाद धूल जाने के बाद ही मन में जो शून्य उपजता है उसमें आनंद का स्वर न्यून ही न्यूनरित हो उठता है, जिसकी अभिव्यञ्जना आनंद से, तभी पूर्ण उच्चवास से, स्मित युक्त नेत्रों से होती है और सही कही ने ऐसा ही जीवन इस धरा पर धन्य कहा जा सकता है।

वशुपि शिष्य की सम्पूर्ण यात्रा एकाकी ही होती है किन्तु जिस इकार आनंद की अभिव्यक्ति को स्वपक्ष तक सोमित रख यान सम्भव नहीं होता है, उसी प्रकार आत्मानुमृतियों को भी सक्षम तक परिरक्षित कर पाना सम्भव नहीं होता, क्योंकि गुरु इकार जान का अंजन लगाने के बाद चित्त में विस्तार के साथ साथ उस विस्तार की अनुष्ठानिक स्थिति में निर्मलता का समावेश जो हो जाता है और निर्मलता को इस स्थिति में एक शिष्य शनैः शनैः विजय बनने की स्थिति की ओर अग्रसर हो जाता है।

शिशु तो वही हो सकता है जिसकी दृष्टि में विभाजन कर्ता प्रत्येक सीमा रेखा धूमिल पढ़ गई होती है और ऐसा शिशुवत् शिष्य ही अपने छोटे से छोटे आनंद को अभिव्यक्त किए बिना रह ही नहीं पाता है... क्योंकि यह शिशु का ही सहन स्वभाव होता है, कि वह आनंद को अपने अभिव्यक्तिकरण के माध्यम से कई नुना कर देने का रहस्य जानता है।

योगियों एवं शास्त्रकारों ने प्रत्येक जीव में अन्तर्निहित ज्योति का स्वरूप एक शांत, श्वेत, निष्कृप्त आमा के रूप में व्यक्त किया है और यहीं तो उस परब्रह्म का मूल स्वरूप है, जिनकी लौकिक रूप में प्रस्तुति अथवा अभिव्यक्ति श्री सद्गुरु के दैषिक आवरण के साथ भी होती है। प्रत्येक जीव उस आमा का एक लघु स्वरूप ही होता है।

यहीं

आत्म-दर्शन का अर्थ है। आत्म पक्ष को पहचान कर ही विराट को पहचाना जा सकता है। गति सदैव लघु से विराट की ओर होती है, विराट से लघु की ओर नहीं।

तु रुष वायुपा कालां च च, लिल लभुवर नीर।  
लिलर वही लिलालव, जन्मय माहो लवीर॥  
जितापनतन-जन, जु-रुद्दोरा कमे मन कै जीरो यो देवयो  
के 'जुन' अं जल-पल नया, लिल-उपासन लिल कही भी, कमी अपासे  
जु-रुद्दोर यो लिलनाम ही कहा? यहीं तो सम्पूर्ण लिलज की  
ग्राहीक से भू-देव वने क्रेती होती है।

विराट से लघु की ओर तो अनुकूल्या होती है, जिसकी उपस्थिति में गति सम्भव हो पाती है। आत्मपक्ष को पहचान कर ही अनुभूत किया जा सकता है, कि मृश में विद्यमान यह लघु प्रकाश, जब स्वयं में इन आकाव, आनंद और शांति का समावेश किए हैं तो वह अपने परम स्वरूप में किन्तु अधिक आकादायक होगा।

शिशुवत् ही यथा शिष्य जब किसी बालक की तरह थिरक-थिरक कर इस ज्योति के स्वरूप को पहचानने का बालछठ ठान लेता है, उसी क्रम में यह ज्योति जापने विविध रूपों को इन्द्रधनुष के समान शिष्य के चिनाकाश पर विस्तारित करने की किया में स्वयं संलग्न हो जाती है। ज्योति का स्वरूप नहीं बदलता है, ज्योति तो अपने मूल स्वरूप में परम निश्चल, शुभ ही रहती है।

अंतर के बावजूद शिष्य के अन्तर्मन से आता है और तभी श्री सद्गुरु देव का साक्षात् उसे कभी मातृ स्वरूप में, कभी पितृ स्वरूप में, कभी गित्र स्वरूप में, कभी बंधु स्वरूप में होना प्रारम्भ हो जाता है या यूँ कहें कि इस अवस्था में आरूढ़ हो जाने के बाद ही 'त्वयेव माता च पिता त्वमेव' कहने की कोई सार्थकता होती है।

गुरु के ऐसे विविध स्वरूप किली तर्क के आधार पर नहीं, भक्ति के आधार पर भी नहीं, वरन् उनके ही द्वारा जान के अंजन को लगा देने के बाद उन्मोत्तित हो गए आत्म चक्रुओं के समाप्त प्रकट होने वाला विषय होता है।

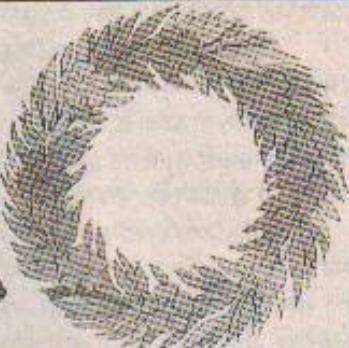
यहीं श्री सद्गुरु देव के विराट रूप में दर्शन करने का अर्थ होता है। शिष्य जब उनको प्रतिपल परिवर्तित होते हुए स्वरूप के साथ देखने की कला का रहस्य प्राप्त कर

लेता है तभी सही अर्थों में साधक से अपर उठकर शिष्य बनता है और ऐसा शिष्य बनने के बाद ही साधना की व्याधि भावधूमि पर खड़ा हो पुनः साधक बनते हुए जीवन के वास्तविक आनन्द के पालन करता हुआ जीवन के सार्थकता दे जाता है।

— यहीं से आनंद के महापाथ की यात्रा प्रारम्भ होती है, यहीं अध्यात्म का अर्थ होता है।

# रोक तर्पणम्

- के सुधाकर शब्द



श्रीमालिनो गुरुदरस्य मृति विवित्य  
अत्यंतसोक भवसाजर मज्जितोऽस्मि ।  
कोऽवाद मे प्रबल तुः स्वभवात् विमुक्ति  
शीघ्रं प्रवच्छति युरुः मनसश्च शान्तिम् ॥

पूर्ण गुरुदेव दीर्घ नारायण दत्त श्रीमाली जी के प्रयाण के समाचार को सुनकर, मैं अत्यंत शोकरुपी महात्मा गर मैं निमग्न हो गया हूँ। इस महान दुख से कौन मुझे मनः शान्ति प्रदान करेगा?

शोष्ये च भर्गवव्यर्थे गुरुपूर्णिमायाः  
दीक्षादिकं प्रवचनं प्रवदाति विव्यम् ।  
इत्यं विवित्य गुरुदर्शनं हर्षितोऽहं  
उग्रकर्त्तव्यमृतिमतीव भवाकुलोऽस्मि ॥

श्रीम्य भाष्यनगर (हिंदूबाबद) में गुरुपूर्णिमा के अवसर पर पूर्ण गुरुदेव आकर दीक्षादिं प्रवचन करेंगे, विव्य प्रवचन देंगे इस प्रकार सोचकर गुरुदर्शन के लाभ से मैं अत्यंत संतुष्ट था, लेकिन गुरुदेव के सिद्धाश्रम महाप्रयाण का समाचार सुनकर मयभीत हो गया हूँ।

माता पिता च द्रविणं सकलं त्वमेव  
स्वर्जते त्वार्थं कथं तु करोमि योजम् ।  
मंत्रादिकम् हृष्वं जप्यसाधनावि  
सर्वं विरर्थकं मिव प्रतिभासि मेऽस्मि ॥

हे गुरुदेव! आप ही मेरे माता-पिता हैं। आप मेरे सर्वस्व हैं। जब आप इस दुनिया में नहीं रहे, तो योग, मंत्र, तंत्र, हृष्वन, जप, साधना इन सभी क्रिया कलाओं का कोई प्रयोगन नहीं है, ऐसा मुझे लग रहा है।

हे विव्यतेज लिखितेश्वर सिद्धकोटि  
त्वक्त्वाद्य शोकजलयौ क्वचतोऽसिरेव ।  
सिद्धाश्रमं प्रति ज्ञतोऽसि वर्तीद्रवरथ  
द्रषुं च झार्वयन त्वां प्रणामामि विव्यम् ॥

हे विव्य तेज निखिलेश्वर! करोड़ शिष्यों की दुख के सागर के बीच छोड़कर आप कहां निकल गये? शायद सिद्धाश्रम गये होंगे, वहां के सं-यासियों को देखने के लिए। हे जानघन! मैं आप को नित्य प्रणाम करता हूँ।

द्वजेन ताडित इवाश्लिपात्मरत,  
चूर्णातरं इव स्वेद विवरितोऽस्मि ।  
सर्वं च जीवन मिदं प्रतिभासि शून्यं  
हे सूक्ष्मरूप घन याहि युरो वर्तीन्द्र ॥

हे सूक्ष्मरूप धारी गुरुदेव यतोऽन्द्र! आप के चले जाने से ब्राह्मण नुझे नहा, अशनिपात से मेरा हृदय विदीर्ण हो गया है, उब सारा जीवन शून्य लग रहा है, अब आप ही हमारी रक्षा करें।

ऐ ह्रोहि देव युनराममनं कुरुत्व  
सिद्धाश्रमादवक्त्रिमध्यतत्त्वे यवित्रम् ।  
पादद्रुवं च तद स्थायव विव्यहानं  
वातुं पुष्टः पुष्ट रतीन्द्रिय शर्तिं युक्तः ॥

हे भगवन! सिद्धाश्रम से इस धरातल पर फिर एक बार आइए। धरामध्य पर पुनः अपने विव्यपाद दुगल को स्थापित करें। हम सबको विव्यज्ञान का वितरण करें। आप अतीन्द्रिय शक्तिमान हैं इमलिपि यह आप के लिए कोई भी काम कठिन नहीं है।

भरो देव देव लिखितेश्वर सर्वं देव  
अस्माकमद्य खलु शन्ति युरु त्रवं च ।  
संस्थायद्यैषु बनु सत्वमलं स्व ऊर्जा,  
एंत्रेष्वन्तु सुखदं स्वरतं प्रणम्यम् ॥

हे गुरुदेव! अब तो हमारे सामने तीनों गुरु विद्धमान हैं उन्हें निरन्तर प्राणात्मकता एवं ऊर्जा से आप्नावित करते रहें, जिससे हमारे हृदय की वेदना कम हो और हमें निरन्तर मार्गवर्णन प्राप्त होता रहें।

# गुरु व्यक्ति की नहीं शाश्वत शक्ति है

- सद्गुरु क्या देह तक ही सीमित हैं?
- क्या गुरु तत्व का भी सृजन या अन्त होता है?
- क्या गुरु तत्व भी नश्वर है?

**य**ह तो सृष्टि का नियम है कि बदि आरम्भ है, तो इति भी अवश्य हो कहीं न कहीं ही ही, यदि आवे हो तो अन्त भी ही ही, जो उदित हुआ है वह अस्त होना ही। जब विश्व जन्म लेता है, तो उसका अन्त भी होना निश्चित है... और यक्ष ने युधिष्ठिर से यही प्रश्न किया था, कि संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है? प्रत्युत्तर में युधिष्ठिर ने कहा, - धोर आश्चर्य तो यह है, कि व्यक्ति मृत्यु को तो देखता है, पर यह मूल जाता है कि एक दिन उसे भी जाना ही है। मन्त्रव्य यह है, कि संसार में जो भी सजीव-निर्जीव वस्तुयें हैं, सभी एक निश्चित अवधि तक ही गतिशील हैं।

... और यही दृष्टि हाने गुरु के प्रति भी रखी है, तभी

तो गुरुवेद के प्रयाण के पश्चात् आंखों में अशुआ रहे हैं, आरती में मन नहीं लग रहा है और गुरु पूजन से, साधना से मन उच्चत रहा है। परन्तु उन्हीं गुरुवेद के शब्दों को एक बार मुनः याद करके वेखें तो, प्रायः वे कहने थे - 'मैं तुम्हारा गुरु नहीं, नारायण दत्त श्रीमाली का शरीर गुरु नहीं है, शरीर के अन्दर जो जान है वह तुम्हारा गुरु है।' पर उनके कहे इस वाक्य को किन्तु ने आनंदसात किया। उनको तो धोती-कुरता पहने सबा छः, पीट का एक व्यक्तित्व मान लिया गया, जो हमारे स्तर तक उत्तर कर हमसे हाँसी मजाक भी कर लेता था, जो हमारी छोटी-छोटी समस्याओं को एक कुशल वैद्य की भाँति सुलझाता था। और उनके मोहक व मनोहारी व्यक्तित्व से प्रमाणित होकर हम उनको भक्ति करने लगे। भक्ति के मूल में छुपी है व्यक्ति की संकीर्ण दृष्टि जो देह तत्व तक ही सीमित है।

- परन्तु सद्गुरु क्या देह तक ही सीमित हैं?
- क्या गुरु तत्व का भी सृजन या अन्त होता है?
- क्या गुरु तत्व भी नश्वर है?

और ऐसा कदापि नहीं है। गुरु को सूर्य से उपमा की गई है, परन्तु सत्य तो यह है, कि गुरु सूर्य नहीं अपितु सूर्य का सारपूत तत्व, उसका प्रकाश है। सूर्य तो एक अभियुक्त है, जो निरुत्तर ऊर्जा प्रदान करता रहता है, और एक निश्चित समय बाद सूर्य का अस्तित्व नहीं रहेगा, यह एक वैज्ञानिक तथ्य है। सूर्य की मांति देह भी समाप्त हो जानी है। परन्तु सूर्य के द्वारा

ज्ञान स्वरूपं च हरेरधीनं  
शरीर संवरोम् विवरोम् वोग्यम् ।  
अर्णुं हि जीवं प्रतिवेह मिन्नं  
ज्ञात्वत्वन्तं वदलन्तमाहुः ॥

आत्मा के रूप में सभी प्राणी  
अमर हैं, यह सीमा और पश्चात्य से  
परे होकर औतिक रूप से अपने  
आप को मुक्त करने में समर्थ हैं।

निःशूत प्रकाश रथिमयों सदैव ही ब्रह्माण्ड में  
अवस्थित रहेंगी और उन्हें पकड़ा जा सकता  
है। प्रकाश तो तत्त्व है, ऊर्जा है जो कपीं  
समाप्त नहीं हो सकती। गुरु तत्त्व की  
भी यही विशेषता है, कि वह कमी  
समाप्त नहीं हो सकता, क्योंकि  
वह तो अजन्मा है, शाश्वत है।  
सूर्य की प्रकाश रथिमयों की  
तरह गुरु का ज्ञान भी अजर-  
अमर होता है . . . और वही  
ज्ञान ही तो वास्तविक गुरु है,  
गुरु तत्त्व है . . . जो सर्वत्र  
है, सर्वदा है।

ब्रह्माण्ड का  
कण-कण जिसकी चेतना  
से व्याप्त है, उस गुरु तत्त्व  
को एक मानव शरीर तक  
सीमित मान लेना कहाँ तक  
उचित है, किस श्रेणी का यह  
ज्ञान है? भावना के क्षुद्र  
आवेश में आकर विलाप  
करना क्या हमारे अन्तः में  
झूपी इस भावना को नहीं प्रकट  
करता है, कि गुरुदेव अब हमसे  
अलग हो गए हैं। क्या हमारा  
उनसे प्रेम शरीर तक ही सीमित था?  
यह तो प्राणों का, आत्मा का सम्बन्ध  
है, जो अमर है।

डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी के  
शरीर का अवलम्बन लेकर उस विराट शक्ति ने,  
अनेक आत्माओं को अपने दिल्ले स्पर्श से आप्नावित किया,  
परन्तु वह स्पर्श देह का स्पर्श नहीं था। वह तो आत्मा का स्पर्श  
था, प्राणों का स्पर्श था। दीक्षा देते समय पूज्य गुरुदेव घेशा  
इस मंत्र का उच्चारण करते थे, 'त्वं देह मम् देह, त्वं प्राण मम्  
प्राण' - तो इसके पीछे आशय यही था, कि तुम्हारो देह और  
मेरी देह में कोई मेव नहीं है, इससे ऊपर उठकर फिर तुम्हारे  
प्राणों में और मेरे प्राणों में भी कोई मेव नहीं है। हमने भले ही इस  
मंत्र का अर्थ न समझा हो, पर गुरु ने अपना कार्य तो कर ही  
दिया है। उन्होंने इस भेद को मिटा दिया है, इस बात का शिष्यों

को समय आने पर एहसास भी होगा।

गुरुदेव ने जब देह और प्राणों के  
इस भेद को समाप्त कर इससे ऊपर  
उठाकर, ही सर्वप्रथम दीक्षा ही, तो  
संशय रह ही कहाँ गया? दीक्षा के  
उसी क्षण से यह शरीर, जिसे  
हम अपना मान बैठे हैं वह  
उनका हो गया और जिस  
ऊर्जा से, जिस शक्ति से  
यह हमारा शरीर चल रहा  
हो, वही तो वह शाश्वत  
शक्ति है जिसे गुरु कहा  
गया है, वही गुरु  
जिसका कोई नाम नहीं  
होता, या यों कहें जिसके  
हजारों नाम होते हैं,  
कोई कृष्ण कहता है,  
कोई राम और कोई  
पूज्यपाद सदगुरुदेव डॉ.  
नारायण दत्त श्रीमाली  
जी।

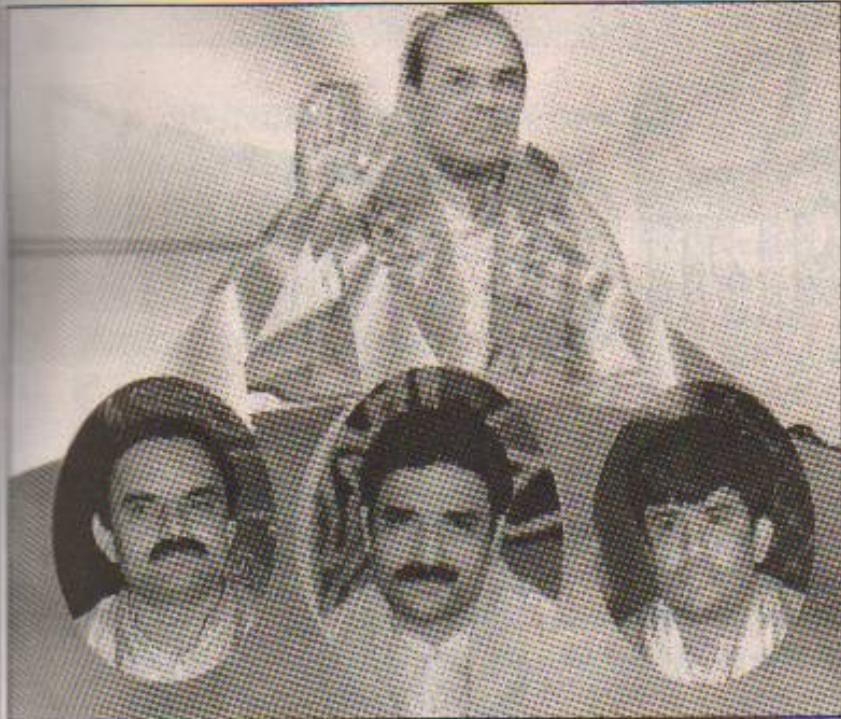
गुरुदेव सदृश

पारमेष्ठि गुरु को मात्र  
अद्वितीय व्यक्तित्व या व्यक्ति  
कहना उचित नहीं है, समस्त  
सिद्धियां जिनके सामने नर्तन  
करती रहती हैं, क्या वे मात्र व्यक्ति  
हो ही सकते हैं? भौतिकता में आकाश

द्वारा दुनिया में आध्यात्मिकता का

सामन्तव्य स्थापित करने के लिए उस विराट  
शक्ति को आने के लिए शरीर धारण करना ही पढ़ता  
है। . . . और देह धारण इस लिए करनी पड़ती है . . . क्योंकि  
देह धारियों को, उन्होंके स्तर पर उत्तर कर देह का अवलम्बन  
लेकर ही ज्ञान दिया जा सकता है, चेतना ही जा सकती है और  
देह से विदेह होने के पथ पर बढ़ाया जा सकता है।

केवल स्वरूप ही परिवर्तित हुआ है, परन्तु अन्दर  
का ज्ञान, शक्ति, ऊर्जा, और गुरु तत्त्व वही का वही रहा, क्योंकि  
गुरु तत्त्व को विभाजित किया ही नहीं जा सकता, वह तो बस  
एक है।



उस परम शक्ति का कोई स्वरूप नहीं होता है - कोई इतीर नहीं होता, देह धर कर उस विराट सत्ता को इस लिए जाना पड़ता है, क्योंकि स्थूल दृष्टि वाले सामान्य मनुष्यों के स्तर पर उत्तर कर जान देना ही पड़ता है। पर यदि शिष्य वर्म अपनी दृष्टिको स्थूल दृष्टि तक ही सीमित कर देने में प्रसन्न है, तो उस विराट शक्ति का देह भारण करना ही व्यर्थ हो गया। शिष्यों को उन्होंने 'आहं ब्रह्मास्मि' का सन्देश दिया, स्थूल दृष्टि से ऊपर ऊपर कर ब्रह्म दृष्टि में अवस्थित होने को का उपदेश दिया। अपने पीछे तीनों गुरुभेद को इसीलिए गुरुपद पर प्रतिष्ठित कर गए, कि जब तक शिष्यगण सर्वत्र व्याप्त उस गुरुतत्व से आत्म साक्षात्कार नहीं कर लेते, जब तक उनका साधनान्मक रूपर उस ऊंचाई तक नहीं पहुंच पाते, जब तक स्थूल दृष्टि तक ही सीमित है, तब तक वे शिष्य तीनों गुरुजी के चरणों में अपित होकर स्पर्श कर सकते हैं जान के उन आयामों का, जिन्हें वे अभी नहीं प्राप्त कर पाए हैं।

आम के बृक्ष पर आम ही उपजते हैं, पर बृक्ष की एक आशु होती है, उसके बीजों से कुछ और बृक्ष उसी बाज में पलते बढ़ते हैं, और पुनः आम के फलों को ही धारण करते हैं, उनमें भी वही स्वाद, वही मिठास होती है, जो मूल बृक्ष में

थी, वे बृक्ष भी उसी प्रकार शीतल छाया देते हैं, जिस प्रकार वह आम का मूल पेड़ देता था, किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं होता। परम पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा गुरु पद पर आसीन किए गए गुरुदेव श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी, श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली जी व श्री अरविन्द जी में भी वही गुरु तत्व विद्मान है, उन्हीं निखिलश्वरानन्द जी का स्वरूप पूर्णता के साथ स्थापित है। इनमें भी वही फल लगे हैं, जो उस मूल तत्व में थे, वस

समीप जाकर अनुभव करने की देर है।

गुरुदेव कहते ही रहे, कि समय बहुत कम है, पर हम समझ नहीं सके पर आभी भी कोई देर नहीं हुई है। आवश्यकता है, अपने आंखों के सामने से संशय के पर्दे हटाकर, पूज्यपाद महागुरुदेव निखिलश्वर के रूप को तीनों गुरुजी में दर्शन करने की, उस विराट शक्ति को उन्हीं में देख लेने की, जो शाश्वत है, अजन्मा है, सर्वत्र है।

**उस परम शक्ति का कोई स्वरूप नहीं होता है - कोई शरीर नहीं होता है।**

**देह धर कर उस विशाट सत्ता को इस लिए आना पड़ता है, क्योंकि स्थूल दृष्टि वाले सामान्य मनुष्यों के स्तर पर उत्तरकर्त्तान देना ही पड़ता है।**

# महाबोधी का निष्पत्ति

बेकरस्य यितरो वात्र वेद वाताः पितामहः ।  
तेव वावात् सतं मार्ज तेन वचव न रिष्वते ॥

जिक्का अत्य आर्म के पिता गए हैं, जिक्का  
ब्रेताम् पथ के प्रपितामह आदि ने अमन किया है,  
उक्की आर्म का अमन करना अत्य-पथ है । वही तो श्रेष्ठ  
छठं कल्याणकारी आर्म है ।

**प**श्च शुस्त्रेव ने जीवन में सदैव वैदिक नियमों का  
पालन किया और उनको यही इच्छा थी, कि  
मृत्योपरान्त पूर्ण वैदिक शैति से क्रिया सम्पन्न की जाए । यह  
कार्य अत्यन्त ही दुर्लभ इसलिए होता है, कि मन में तो हाहाकार  
उठ रहा होता है, परन्तु वेदना और उत्साद के धणों में भी  
कर्तव्य पालन करना पड़ता है, वह ध्यान रखना पड़ता है, कि

त्रुष्णाश और गेरा सम्बन्ध  
आज का नहीं, युगों-युगों का है,  
शाश्वत है ।

देह तो जीर्ण होने पर बदलती  
है, पर प्राण, आत्मा नहीं बदलते, ते  
तो ज्यों के त्यों ही रहते हैं ।

सम्बन्ध तो प्राणों से होते हैं,  
आत्मा से होते हैं ।

— गुरु सूत्र से



कहीं कोई ऐसी गलती न हो जाए, जिससे उन्हें इह लोक में कोई  
पीढ़ा हो अथवा वे ऐसा विचार भी करें, कि कार्य उत्तम रूप से  
सम्पन्न नहीं हुआ ।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष नवमी ३ जुलाई को पूज्य श्री ने  
अपनी पौधभूतमक देह त्याग वी परन्तु उनकी इच्छा यही थी,  
कि अन्तिम संरक्षण जोधपुर में ही सम्पन्न किया जाए, अतः

अब तुम्हारी जिम्मेवारी बढ़ नहीं  
है, अब तुम्हारा उत्तरदायित्व ज्यादा  
बढ़ गया है।

क्योंकि अब मेरी जबान केवल  
मेरी ही नहीं रही, तुम सबकी जबानों  
में मेरी ही आवाज, मेरे ही शब्द ध्वनित  
हो रहे हैं।

अब मैं लाख-लाख रूपों में बंट  
गया हूं, अब मेरा शरीर केवल मेरा ही  
शरीर नहीं रह गया है, तुम सबके  
शरीरों में मेरा शरीर बंट गया है।

— पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

मीता का पाठ प्रारम्भ किया। वेह को पूज्य गुरुदेव का प्रिय श्वेत परिधान धारण कराया गया, उनको गुलाब की मालाओं से देह को गुसाजित किया गया और फिर प्रारम्भ हुआ शिष्यों द्वारा अपने प्रिय गुरुदेव को श्रद्धाङ्गलि व पुष्पाङ्गलि प्रदान करने का ब्रह्म। उस देह के अंतिम स्पर्श के क्षणों में उठे हाहाकार को, सूबन को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता और सबसे मर्मांतक क्षण तो तब या जब पूज्य माताश्री ने अपनी बहुओं के साथ अपने प्रिय को माल्यार्पण किया।

अब पारलोकिक धृष्टा के लिए हाथ में जल देकर पिण्ड दिया जाता है और घर के छार पर दूसरा पिण्ड दिया जाता है। घर के छार पर यह पिण्ड इस बात का धोतक है, कि अब इस घर से देह रूप से नाता दूट रहा है और परलोक गमन की यात्रा प्रारम्भ हो रही है, यह देह इस घर में पुनः नहीं आ सकेगी। इसके

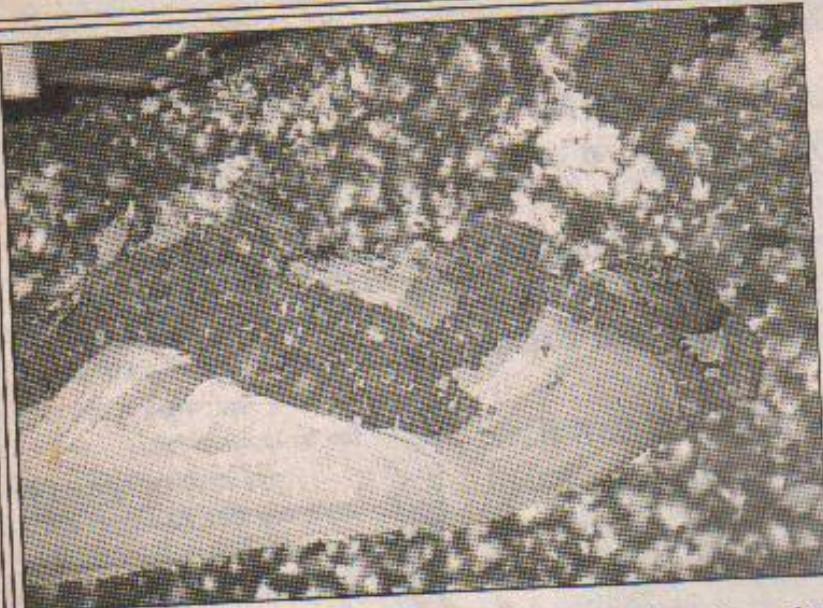
बाबई से जोधपुर आकर अगले दिन 4 जुलाई को ही यह किया नम्बन की गई। शास्त्रोक्त मत है, कि नश्वर देह की किया जलदी से जलदी सम्पन्न कर देनी चाहिए लेकिन पूज्य गुरुदेव ने तो देह छोड़ने के बाद भी नई विष्व लीला रची। वे जानते थे, कि भारतवर्ष के विभिन्न स्थानों से उनके देह के अन्तिम दर्शन हेतु शिष्य दौड़े चले आएंगे और सम्भवतः इसी कारण उनकी अलौकिक किया से बाबई से जोधपुर आने वाला विमान ही रह हो गया, उत्तरपुर तक विमान से और किर सङ्क का राजा जोधपुर पहुंचते-पहुंचते चार जुलाई की सुबह ही गई थी। जिस शिष्य ने जहां समाचार सुना वही सारा काम छोड़कर तत्काल जोधपुर के लिए रवाना हो गया और चार जुलाई को दोपहर बारह बजे तक हजारों-हजारों शिष्य सूबन कर रहे थे। सब के हृदय फटे जा रहे थे, ऐसा लग रहा था, कि उब ये प्राण भी पूज्य गुरुदेव के प्राण में मिल जाएं।

दोपहर बारह बजे के बाद अन्तिम यात्रा की तैयारी प्रारम्भ हुई। पूज्य गुरुदेव के पार्थिव देह को भूमि पर लिया गया... भूमि स्थूल है यह पूरी सृष्टि का भार बहन करती है, जहां देह को भूमि पर लेना आवश्यक है। यहां देह को गंगाजल से स्नान कराया, मुख में तुलसी पत्र निया और ब्राह्मणों ने

पहले पुत्र अपने केश अर्पित कर पिता को श्रद्धाङ्गलि देते हैं और यह माना जाता है, कि परलोक गमन के समय यह केश ही उनके लिए बिछौना है। तीनों पुत्रों ने अपने केश अर्पित कर यह श्रद्धाङ्गलि प्रदान की।

जिस पिता के कन्धे पर बालक खेला-कूदा उस पुत्र के कन्धे पर वह जीवन की अन्तिम यात्रा सम्पन्न करे, यही शास्त्रोक्त नियम है, यही उस व्यक्ति के जीवन का अन्तिम सुखद क्षण है, कि मैंने ऐसे मनवूत शरीरों पर निर्माण किया है जो मेरा भार बहन कर सकते हैं। रोते-बिलखते नन्दकिशोर जी, कैलाशचन्द्र जी, अरविन्द जी, जामाता हेमन्त जीर विनोद जी ने पृथ्यों से मणित देह को अपने कन्धे पर उठाया और प्रारम्भ हुई एक ऐसी यात्रा जिसमें इस देह को तो लौट कर ही नहीं वापस आना था, इतना दुःखद था यह क्षण जब अपने ही हाथों से यह क्रिया करनी पड़ती है।

घर के छार से बाहर निकलते समय देह का शीश घर की तरफ होता है और जब गांव की सीमा आ जाती है, तब देह का शीश झमान की दिशा में कर दिया जाता है, क्योंकि झमान ही उब देह की भूमि है, उसका ग्राम नहीं। विश्राम स्थल पर तीसरा पिण्ड दिया जाता है। यहां उस स्थान पर विचरण करने वाले



पारलौकिक तत्व, मृतात्मा की रक्षा करते हैं और फिर अनिम यात्रा का चरण प्रारम्भ होता है। श्मशान स्थल पर नन्दकिशोर जी ने श्मशान पिण्ड प्रदान किया, वहाँ पूर्ण शुद्धिकरण कर चिता को चुना और वेद मंत्रों से चिता का शुद्धिकरण किया, देह का सिर दीक्षण की ओर तथा पैर उत्तर की ओर रखे, क्योंकि उत्तर चिता अनन्त ब्रह्म का स्थान है, सिल्पाभ्रम अनन्त ब्रह्म के स्थान पर स्थापित है, उसी चिता में पूज्य गुरुवेव का संदेव ध्यान था। चिता पर निस रूप में प्राणों वस्त्र रहित आया था, उसी रूप में वस्त्र रहित कर पचम पिण्ड प्रदान कर पूरे शरीर पर धृत लेपन किया। अब 'अग्नि संस्कार' की क्रिया प्रारम्भ की।

अग्नि संस्कार में सिर की तरफ चिकोण चौकी बनाई, क्योंकि यह देह तो अब तीनों लोकों में व्याप्त हो गई है तथा 'क्रब्याद' नामक अग्नि का आवाहन किया। यह अग्नि का सबसे तीव्रतम् स्वरूप है और यही अग्नि पूर्ण देह को भर्तीभूत करने में समर्थ है। अग्नि संस्कार में क्रब्याद अग्नि के पांच अग्नि भाग बनाए जाते हैं, जो कि दो हाथ, दो पैर और एक सिर के लिए हैं, यह पंचांग अभि स्नापन संस्कार कहलाता है। अब धृत आहून कर श्री नन्दकिशोर जी ने शरीर के समस्त भागों को समर्पित किया, यहाँ नौ आहुतियां प्रदान कीं —

**त्वेऽग्न्यः स्वाहा, त्वत्रे स्वाहा, त्वैहिताव एव एव  
मेवोम्बो स्वाहा, मज्जाम्बः स्वाहा, रेतसे स्वाहा,  
पावसे स्वाहा, हिमावे स्वाहा, वर्माव स्वाहा /  
मृत्यवे स्वाहा**

अ 'रितम्पर' १४ मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञाल १० ॥

इन समस्त अग्नि संस्कारों में अग्नि आवाहन कर किसी चलने वाले तृण से इसे प्रज्वलित कर, चिता की परिक्रमा कर, हाहाकार करते हुए अग्नि समर्पित कर दीं। अग्नि प्रज्वलित होकर ब्रह्माण्ड मार्ग प्रयाहमान करती है और प्राण तत्व ब्रह्मरन्ध्र मार्ग द्वारा चैतन्य होकर ब्रह्माण्ड में बिलौन हो जाने हैं . . . और गुरु प्राण क्षण भर में ही अनन्त में विस्तारित हो गए। तदनन्तर तीनों पुत्रों ने उच्च स्वर में सदन करते हुए कहा, कि जिस

देह ने हमें जन्म दिया उस देह को ही आज हमने चिता को सीप दिया है, इसे प्राणविहीन कर दिया है। पूर्ण वाहन के पश्चात् 'दाहज्ञनि' प्रदान की और पूर्ण वाहन कर श्मशान का त्याग किया। यहाँ भव शिष्यों ने, रितेवारों ने हिम्मत बंधाई और कहा, कि जीवन के इस क्रम में हम सब आप के साथ हैं।

दहन के तीसरे दिन तीनों पुत्रों ने श्मशान जाकर चिता को दूध, गंगाजल से शान्त किया तथा अपने हाथों से अस्थियों का संचय किया। इन अस्थियों को छः कलशों में स्थापित किया, ये अस्थियां भारत के विभिन्न तीर्थों में प्रवाहित की जाएँगी।

देहावसान के नवें दिन वश गत्र शाद्र प्रक्रिया प्रारम्भ होती है, यह 'मत्तिन घोड़शी' किया कहलाती है एवं इस पिण्ड द्वारा शरीर के दस अंगों का निर्माण कर उन्हें आवाहन कर श्रेष्ठ अग्नि प्रदान किया जाता है। इसी दिन हजारों शिष्यों तथा परिवार के जन्य सदस्यों — पौत्र, दौहित्र, जामाता, भ्राता हन्त्यादि अन्य रितेवारों ने शोकागत होकर अपने अपने केश अर्पित किए। शिष्य तो इन्हें अधिक शोकागत थे, कि उन्हें केश बान हेतु कहने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी, उन्होंने अपने आप ही यह किया सम्पन्न की। यहीं नहीं स्थान-स्थान पर जो शिष्य जोधपुर नहीं आ सके, उन्होंने अपने केश अर्पित कर मुण्डन किया।

देहावसान के ग्यारहवें दिन तीनों पुत्रों ने इस प्रकार की वस्तुओं से स्नान कर प्रायश्चित कर्म किया और वेद मंत्रों से 'ऊर्ध्वविहीन क्रिया' प्रारम्भ करने का अधिकार प्राप्त किया,



ज्ञेपनीत परिवर्तन किया। इसी दिन प्यारह देवताओं का कुश के रूप में चट बांध कर आवाहन किया, शिव भगवा सहित लल्ले चट में गुरुदेव को स्थापित किया। यह मध्यम षोडशी क्रिया द्वारा किया गया कार्य है, यहाँ चार कलश में ब्रह्मा, विष्णु और महेश का आवाहन किया एवं पंचम कलश में पूज्य गुरुदेव का आवाहन कर पांच पिण्ड प्रवान किए। यह पंच श्राद्ध क्रिया मध्यम षोडशी क्रिया की पूर्ती है।

**ब्र देवदाराः पितृवराणास्त्र ल्लोकाः ।  
ल्लवान् परो अवृण अर खिवेष ॥**

श्राद्ध कर्त कर्तों का अभिप्राय ही एकमात्र मृतात्मा को भुक्त ब्राह्मितमय लोकों की प्राप्ति का न्यूनक है।

बारहवें दिन पुत्र वर्ष भर में की जाने वाली क्रियाओं को सम्पन्न करने की प्रतिशा करता है, इसमें १२ मासिक श्राद्ध एक त्रिपक्षीय श्राद्ध, एक षष्ठी मासीय श्राद्ध, एक 'न्यूनाब्ध क्रिया' सम्मिलित है, इसके प्रतिज्ञा स्वरूप १५ पिण्ड अर्थित किए जाते हैं, 'उत्तम षोडशी' की इसी क्रिया का सपिण्डीकरण श्राद्ध किया गया। इसमें कुश के तीन चट बनाकर पूज्य गुरुदेव के पिता, पितामह और प्रपितामह का आवाहन किया तथा श्राद्ध के साक्षीरूप विश्वेदेवाओं के साथ-साथ विष्णु को विशेष अतिथि के रूप में आवाहन किया, पिण्ड रूप में स्थापित पित्र्येश्वरों के पिण्डों के साथ पूज्य गुरुदेव के पिण्ड का मिश्रण किया गया।

**पितृब्र त्रायते चः पुत्रः**

अर्थात् पुत्र 'सपिण्डीकरण श्राद्ध क्रिया' द्वारा अपने पुत्रत्व को सार्थक करता है, इस क्रिया के पश्चात् पूर्ण घर सूतक

ज 'यितम्भृ' १८ मंत्र-तंत्र-यत्र विज्ञान १७

मुक्त हो जाना है तथा घर में भारती पूजन इत्याविकी प्रक्रिया प्रारम्भ होती है।

### पांच उस्म

त्रयोदशी के दिन श्रवणी पूजन कर तेरह घटों का दान सम्पन्न किया, विष्णु पूजन सम्पन्न कर भावी पीढ़ी को शक्ति अर्जन की प्रार्थना की गई। इस दिन सिर पर बांधा हुआ शोक सूतक गमला हृष्टा कर परिवारजनों ने तीनों पुत्रों को पगड़ी बांधी। यह इस जात को दर्शाता है, कि अब जीवन में जो जिम्मेदारी आई है उसे पूर्ण रूप से निभाना है, यही रस्म पूर्ण वैदिक मंत्रों के साथ पण्डाल में शिष्यों ने सम्पन्न की और शिष्यों के प्रतिनिधि स्वरूप छोटे राजेन्द्र सिंह ढल ने श्री नन्द किशोर जी, श्री कैलाश चन्द्र जी एवं श्री अरविंद जी को सिर पर पगड़ी बांध कर निवेदन किया, कि अब सब शिष्यों की जिम्मेदारी आप पर है। पूज्य गुरुदेव ने अपनी जीवन यात्रा में जो-जो कार्य प्रारम्भ किए हैं, उन कार्यों को पूर्ती देनी है, सब शिष्य आप तीनों के नेतृत्व को स्वीकार कर यह आशा करता है, कि पूज्य गुरुदेव के सभी कार्य यथावत् चलते रहेंगे और आप हमें निरन्तर मार्गदर्शन देते रहेंगे। शिष्यों ने ध्य हस्तकल्प लिया, कि जो अपूरणीय क्षति हुई है, वह तो पूज्य गुरुदेव की लीला का एक स्वरूप है, पर इस धरा पर उनके कार्य सदैव अमर रहेंगे और हम इस अमर कीर्ति का विस्तार करने में अपना जीवन लगा देंगे।

**तस्मै स्वलोकं स्वद्वाक् समाप्तिः**

**संवर्गमास्त्रं परं च वत्परम् ।**

**ब्र वत्र मात्रा किमुत्तप्ते हरे**

**रनुद्रत्रा वत्र सुरासु रार्चितः ॥ ३६**

# गौरवथाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र

विज्ञान  
की

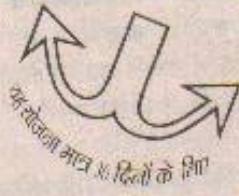
## वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधारणतम् रात्रा को समाज के सभी उत्तरों में समान रूप से दर्शकार किया जाता है, तर्चोकि इसमें प्रत्येक वर्ष की समर्पणाओं का हल लारल और सहज रूप में रामाइन है।



वार्षिक सदस्यता भूल्क  
१०५/- डाक खंड अतिरिक्त

इसके एक वर्ष के लिए पत्रिका सदस्य बनने पर आपको प्राप्त होगा यह अत्यंत दुर्लभ एवं रिशिट उपहार जिसे प्राप्त कर आप अनुभव करेंगे, कि आपके कार्य बड़ी आसानी से होते चले जा रहे हैं और भौतिक दृष्टि से आप जीवन में पूर्णता की ओर अबसर होते जा रहे हैं।



लेकिन यह दुर्लभ उपहार तो आप अपने किसी मिल, रिश्तेदार या स्वजन को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका के सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

अब जिश्चरा तो आपको करना है, हम तो सिर्फ इतना ही प्रशार्मा दे राकरे हैं, कि अपने आपको बचिन न करें इस घर आये गोभारा से।

पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें  
शेष कार्य हम स्वयं करेंगे

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डा. श्रीमाली गार्म, डॉकोट कालोनी,

गोवा - 342001, राज. फोन - 0291-32209, टेलीफोन - 0291-32010

# ॐ दुर्गायि ॥ शास्त्रोक्त नवरात्रि पूजन विद्यान नैमः



**सा**

धक प्रातः काल स्नानादि नित्यं क्रियाओं से निरूप होकर, स्वच्छ पीली धोती पहनकर गुरु चावर जड़ से, पूजा गृह में जाकर देवताओं को प्रणाम करें। इसके बाद चैत्र जासान बिछा कर उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठ जाएं। अपने सामने एक छोटी चीको रखकर लाल वस्त्र बिछा दें, सामने न्यायी दुर्गा का आकर्षक चित्र स्थापित करें। भगवती के पूजन के लिए साधक के पास प्राणप्रतिष्ठित 'दुर्गा यंत्र', 'खदग माला' वा 'मुरक्का गुटिका' दोनों बाहिए। पूजन सामग्री—कुंकुम, अक्षत, लालबीज, इलायची, फल, मिठाई, एक नारियल, कलश, नल चार, आरती की सामग्री एवं दूध, दही, धी, शहद, चीनी आदि जिलाकर फैचामृत बना लें। पूष्पादि भी अपने पास रख लें तथा इसके बाद पूजन आरम्भ करें।

## पवित्रीकरण

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वविस्यां ज्ञतोऽयि वा ।  
वा स्मरेत् पुण्डरीकारं स ब्रह्माभ्यन्तरः सुविदः ॥  
इस अपिष्टात्रित जल को, दाढ़िने हाथ की ऊंचियों से अपने सम्पूर्ण शरीर पर छिड़कें, निससे आन्तरिक और बाह्य शुद्धि हो।

## आचमन

निम्न मंत्रों के उच्चारण के साथ तीन बार जल पियें—  
ॐ अमृतोपस्तुरमहिं रुवाहा ।  
ॐ अमृतापिधानमहिं रुवाहा ।  
ॐ शत्र्यं यशः श्रीमयि श्रीः श्रेयतां रुवाहा ।

## दिशा बनायन

बायें हाथ में चावल लेकर बाहिने हाथ से चारों दिशाओं में तथा ऊपर व नीचे निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए छिड़के।  
ॐ अपसर्यन्तु ते भूतः वे भूतः भूर्गि संस्थितः ।  
वे भूता विद्वक्तर्तरस्ते ब्रह्मन्तु शिवाङ्गवा ॥  
अपक्रामन्तु भूतान्ति यिशाचा: सर्वतो विशम् ।  
सर्वं ब्रह्मविरोद्धेत् पूजाकर्म समाप्ते ॥

## संकल्प

इसके पश्चात् संकल्प लें। जल को अपने दाढ़िने हाथ

में अपनी इच्छित मनोकामना का पूर्ति व्यक्त करते हुए अपने नाम व गोव का उच्चारण कर जल को भूमि पर छोड़ दें।

## गणेश स्मरण

पदि गणपति का विघ्रह हो, तो किसी थाली पर स्थापित करें। तप्तचातू गणपति का स्मरण करें—

सुमुखस्वर्चक वन्तस्त्र कपिले जजकर्णकः ।  
स्वस्त्रोवरस्त्र विकटे विद्वत्वाश्वरे विद्वायकः ॥  
शूष्केनुर्जणाव्यक्षरे भात्तचन्द्रो जजाननः ।  
द्रावश्वै ताक्षि ब्रह्मान्ति वः पठेच्छृणुवादर्यि ॥  
विद्वारम्भे विद्वाहै व प्रवेशे लिङ्गम् तथा ।  
संभ्रान्ते संकटे चैव विद्वस्तस्त्र व जायते ॥

इसके पश्चात् गणपति विघ्रह पर कुंकुम, पूष्प, अक्षत और नैवेद्य अर्पित करें।

## श्री गुरु हृद्याल

द्विवत् कमलमध्ये बहूसंवित् समुद्रः ।  
धृतशिवमद्वर्यत्रं सावकानुभ्रहर्वर्म् ॥  
मुतिशिरसिरिविभावत् वायमातृण्डमूर्ति ।  
समितितिरिशरोके श्री गुरुं भाववापि ।  
श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः द्यानं समर्पयामि ।  
तप्तचातू कुंकुम, धूप, पूष्प, अक्षत तथा नैवेद्य अर्पित कर गुरु पूजन सम्पन्न करें।

## कलश पूजन

अपने सामने बाजोट पर स्वच्छ लाल वस्त्र बिछाकर चावल के ढेरों के ऊपर जल से मरा हुआ कलश स्थापित करें। कलश पर स्वस्त्रिक का चिन्ह बनाकर कुंकुम की ४ विनियोग लगावें। कलश के भीतर एक सुपारी व एक सपया हालं तथा कलश के ऊपर लाल वस्त्र में नारियल लपेटकर रखें। कलश पर मौली लपेट दें। फिर हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें—

कलशस्व मुखे विष्णुः कण्ठे लद्वः समाप्तिः ।  
मूले तत्रस्थिते ब्रह्मा मध्ये मातृभ्यरः स्मृतः ॥  
कुंकुमे तु सर्वरासस्त्रं सप्तद्वीया वसुन्धरा ।  
श्राव्येदो वज्रैङ्गः सामवेदोद्दृष्टवर्णः ॥

अर्जै द्वय संहिता: सर्वे कलशन्तु समर्पिताः ।  
अत्र जरावरी साधित्री सान्तिः पुष्टिकरी सवार ॥  
अरथान्तु वज्रसाक्षव दुरितकरकः ॥

कलश पर पुष्ट चढ़ाकर प्रणाम करें।  
इसके बाद मगवती के चित्र पर जल से छोटा डेकर पौछे  
दें तथा कुंकुम, अक्षत, पुष्टि, धूप, दीप से पूजन करें।

दुर्जाक्षमा शिवा वात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ।  
आज्ञाभृत वरदे देवि देवत्ववर्णनिश्चवनी ।  
पूजां वृहाण सुमुखि व्रस्ते शंकरिष्ये ॥

### चंत्र पूजन

किसी बाली में 'दुर्जा मंत्र' को स्थापित करें, उसके बाद यंत्र की गंगा जल या शुद्ध जल से स्नान कराएं। दूध, दही, धी, शहद, शकर मिलाकर पंचामृत बनाएं तथा पंचामृत से यंत्र को स्नान कराएं। पुनः शुद्ध जल से थोकर किसी दूसरे पात्र में कुंकुम से स्वस्त्रिक बनाकर उसमें यंत्र को स्थापित करें। निम्न मंत्र पक्षे हुए कुंकुम, अक्षत तथा पुष्टि से पूजन करें—

तिलकं स्मर्पयामि ॐ जगद्भावये नमः ।  
अक्षतान् स्मर्पयामि ॐ जगद्भावये नमः ॥  
पुष्टि मात्यां स्मर्पयामि ॐ जगद्भावये नमः ॥  
इसके बाद बाँध हाथ में अक्षत लेकर धन पर निम्न मंत्र बोलते हुए अक्षत चढ़ाएं—

ॐ दुर्गाय पूजयामि नमः ।  
ॐ महाकाली पूजयामि नमः ।  
ॐ भगवतीये पूजयामि नमः ।  
ॐ कात्यायनीये पूजयामि नमः ।

ॐ उमायौ पूजयामि नमः ।  
ॐ महात्मीयौ पूजयामि नमः ।  
ॐ द्वार्यौ पूजयामि नमः ।  
ॐ शिंहवाहिन्नीयौ पूजयामि नमः ।  
ॐ कोमार्यौ पूजयामि नमः ।  
धूपं आग्रापयामि जगद्भावये नमः ।  
दीपं दर्शयामि जगद्भावये नमः ।  
ब्रेवेण निवेदयामि जगद्भावये नमः ।  
किसी पात्र में मिठाई, फल तथा अन्य सुस्वाद खाओ  
पदार्थ स्नान कर मगवती के समझ भोग लगावें, इसके बाद तीन बार आपन करावें।

ताम्बूलं स्मर्पयामि नमः ।

लौग, इलायची मिलाकर मगवती को पान समर्पित करें।  
इसके बाद हाथ जोड़कर मगवती का ध्यान करें—

दुर्जे स्मृता हरसि भीतिमस्ते जन्तोः ।  
स्वस्ते: स्मृता मति-मतीव भुमां दवासि ॥  
वारिद्वय तुःख भव हारिणी का त्वचनवा  
सर्वोपकर कर रथाद स्वर्द्धं चित्ता ॥

इसके बाद 'खड़ग माला' एवं 'सुखा गुटिका' का कुंकुम, अक्षत से पूजन करें। धूप और वीप पूजन काल में जलते रहना चाहिए। गुरु मंत्र की ४ माला करें तथा निम्न मंत्र की ११ माला नित्य ९ दिन तक मंत्र नप संपन्न करें—

॥ दैही कर्त्ता चामुण्डादे विच्चे ॥

प्रतिदिन मंत्र नप के पश्चात् मां दुर्गा की आरती एवं गुरु आरती संपन्न करें। साधना संपन्न होने के उपरान्त समस्त सामग्री को नदी में विसर्जित कर दें। साधना सामग्री पैकेट - 240/-

## दुर्गा आरती

ॐ लय अर्थे मौरी मैत्रा जय शयामा मौरी । तुम्हें विशिदिन द्यावत हरि ब्रह्मा दिव्यार्थी ॥१॥ ॐ लय अर्थे...  
माल शिंहदूर मिराल दीक्षे मुगमद्वत्ते । उल्लग से दोऊ मैत्रा, चंद्रमद्वन नीको ॥२॥ ॐ लय अर्थे...  
कलाक समान कलेशर रत्नमवर राहे । रक्त-पुष्टि नल माला, कफठन पर सारो ॥३॥ ॐ लय अर्थे...  
केलरि बाहन राहत, खड्ग खपट धारी । सुर-जर-मूरि-लल सेवत, तिमकेहु खहारी ॥४॥ ॐ लय अर्थे...  
कालगन कुण्डल शोभित, लासारो गोरी । क्लेटिक धन्द दिवाकर सग सलाद ज्योति ॥५॥ ॐ लय अर्थे...  
शुभ्र निष्ठुरुभ मिलरे, महिषासूर-धारी । धग्गायिलोचन गैता विशिदिन गदगारी ॥६॥ ॐ लय अर्थे...  
चण्ड रुण्ड संहारे, शोभितबीज हरे । गंधु कैटड दोउ नारे, सुर भयहीन करे ॥७॥ ॐ लय अर्थे...  
ब्रह्माणी, रुक्माणी, तुग कमला रानी । आग्न-निनग-बखानी, तुग शिवपटरानी ॥८॥ ॐ लय अर्थे...  
चौसठ योगिनी नावत, गुरु करता मैरू । बालत ताल गृहंगा औ बालता डमरु ॥९॥ ॐ लय अर्थे...  
तुग ही लगकी माता, तुग ही हो भरता । भत्तगतीकु खस्त्या, सुख सप्तपति करता ॥१०॥ ॐ लय अर्थे...  
शुला आठ अति शोभित, वर गुरु धारी । गन्धांचित फल पावत, सेवत नर नारी ॥११॥ ॐ लय अर्थे...  
कम्बल धाल विसर्जत अनंत कम्पूर वाती । (भी) माल केतुमें यालता क्षेटि रत्न व्योति ॥१२॥ ॐ लय अर्थे...  
(शी) उम्बेदी द्वि आरति लोकोई नरलाली । कर्त्ताशिवानन्द शयामी, सुखसप्तपति यावे ॥१३॥ ॐ लय अर्थे...

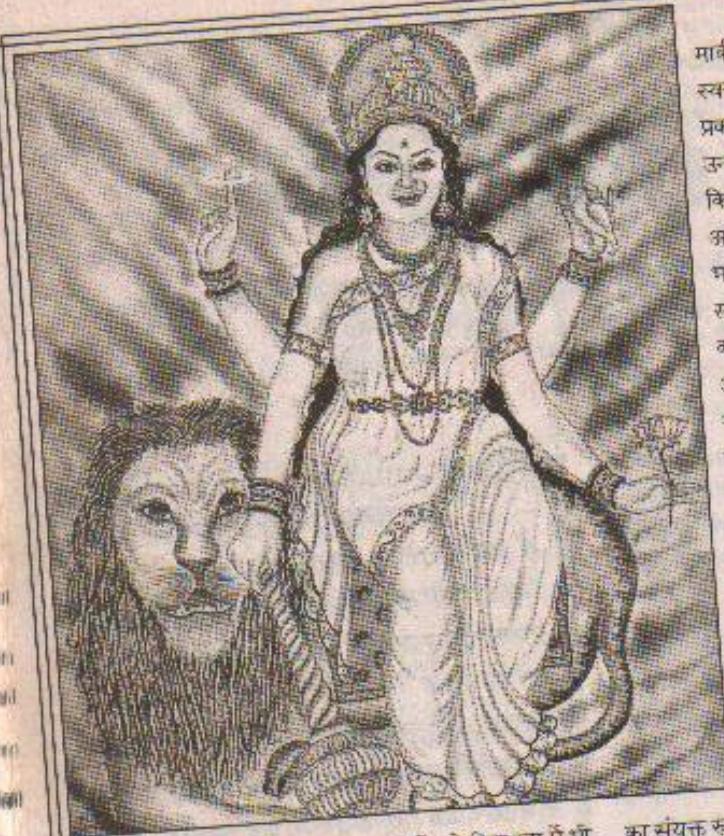
वली चा  
हीं नां जगद्गुणे! शुण  
दुः वात् वात् वर्णदृढ़न डा  
च्छ वै वि

विषुद्धम सम्प्रभां पशुयति स्कन्दस्थितां भीषणां  
कन्वामि; करवास स्टेट विशिष्टां हस्तामिरपारेवितां  
हस्ते श्वकज्वासि स्टेट विशिष्टां चायं युणं तर्जनीं  
विभ्राणामबलात्मिकां भशिष्वरां दुर्गा विनेत्रां भजे

**भ**गवती जगद्गम्बा सकल विश्व की मातृस्वरूपा आध्यात्मिक देवी है, जो अपने भ्रतों और साधकों को उभी प्रकार से रक्षा करती है, जिस प्रकार से मां अपने अपने अभ्यास वालक को रक्षा और पालन करती है। छोटा बच्चा तो कुछ भी नहीं जानता, न उसे इस बात का ज्ञान होता है, कि माता का अन्नव वया होता है; न उसे इस बात की चिन्ता होती है, कि मा कितने कष्ट और दुःख बोलकर उसका पालन पोषण कर रही है और न उसे फिक लोती है, कि यदि कोई विपत्ति, बाधा या परेशानी आ जायेगी, तो मां को कितना तनाव सहन करना पड़ेगा। इसीलिए तो बालक निश्चिन्न होता है, इसीलिए तो मां की गोव में वह विश्वाम करता है और मां सभी दृष्टियों से उस बालक की रक्षा करती है उसका मार्गदर्शन करती है। उसका पालन-पोषण करती है और उसके जीवन में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए सदैव तत्पर रहती है।

भगवती जगद्गम्बा का भी ऐसा ही स्वरूप है। वह केवल देखे ही नहीं, वह केवल मानुस्वरूपा ही नहीं, अपितु उसके तो कई नाम, कई स्वरूप, कई विन्तन, कई विचार हैं, कई धारणाएँ हैं। वह देवताओं का तेज पुण्य है, व्यक्तिकि भगवती जगद्गम्बा का तो जन्म हुआ नहीं है। जब शक्तियों ने देवताओं पर प्रहार किया, तब देवताओं के लिए कोई आश्रय स्थल नहीं रहा, तो देवताओं ने यह अनुभव किया, कि इन शक्तियों से छुटकारा पाना अत्यन्त कठिन और मुश्किल है तब समस्त देवताओं के शारीर से तेज पुण्य निकला और सभी देवताओं के शरीर से तेजपुण्य निकल कर, जो मृति बनी, जो

जो अपने भज्जों और लायजों की रक्षा करने में सर्वेव तत्पर रहती है, साथ ही साथ 'महाकाली' बनकर द्युमितों का संहार करने में समर्थ है, 'महालक्ष्मी' बनकर शिष्यों और लायजों को सम्पन्नता देने में समर्थ है, 'महारात्मत्तरती' बनकर द्युमितों और चेतना देने में समर्थ है; ऐसी दिव्यात्म स्वरूपा भगवती जगद्गम्बा का देवता लोग शत्-शत् वंडन करने लगे। भगवती जगद्गम्बा मातृ कोई देवी



ही नहीं अपितु समस्त विश्व की भगवती है, जो निदा रूप में भी विद्यमान है, सुधा रूप में भी विद्यमान है, तथा पालन-पोषण करने वाली है, ब्रह्म के क्षेत्र में भी श्रेष्ठता और प्रियता देने में समर्थ है, जिनके सेकड़ों नाम हैं, सैकड़ों स्वरूप हैं, जिनके हाथ में चक्र, परशु, गदा, धनु, बाज और विविध आयुध हैं, जिनके द्वारा वह शत्रुओं पर प्रहार करती है और आने वाली परेशानियों और तनावों को दूर करने में समर्थ है।

जो आपने आप में ही श्रेष्ठ और अद्वितीय है ऐसी मृति, ऐसे विश्वास को देवताओं ने हर्ष तो अनुभव किया ही, उन्हें यह भी विश्वास हुआ कि आने वाले समय में मानव जाति के कल्याण के लिए भक्तों और साधकों की समर्पणाओं को दूर करने के लिए इससे श्रेष्ठ कोई विश्व ही हो सकता... क्योंकि यह ही एकमात्र ऐसा विश्व है, जो प्रहार करने में भी समर्थ है, जो पालन करने में भी समर्थ है, जो उत्पत्ति करने में भी समर्थ है, जो शत्रुओं का संचार करने में काल स्वरूप है, तो भक्तों की रक्षा और सहयोग करने में मात्र स्वरूप है। इनकी आराधना इनका चिन्तन इनकी धारणा और विचार अपने आप में जीवन का एक सीधार्थ है, जीवन की एक पूँजी है।

मार्कंडेय अद्वितीय क्रष्ण हुए हैं। उन्होंने मार्कंडेय पुराण में भगवती जगदम्बा के भग्नपूर्ण स्वरूप का चिन्तन किया, विचार किया, कि किस प्रकार से भगवती जगदम्बा को प्रसन्न किया जाए, उनसे सहयोग लेने के लिए किस प्रकार से प्रयत्न किया जाय? इसका विस्तृत विवेचन मार्कंडेय ने अपने शंख में किया और उन्होंने स्पष्ट किया, कि भगवती जगदम्बा तो भगवान शिव के मृत्युज्ञय स्वरूप का साक्षात् विश्व है, क्योंकि शिव अर्थात् कल्याण वहीं ही सकता है जहां शक्ति है, जो शिव और शक्ति का अपने आप में अद्भुत समन्वय है। जो मनुष्य कादर है, बुजदिल है, जो हताड़ा, परेशान और चिन्तित है वह कल्याणमय नहीं बन सकता; वह न तो अपना कल्याण कर सकता है, न समाज का, न देश का और न ही किसी अन्य का कल्याण कर सकता है। यह तभी हो सकता है जब उसमें निर्मितता आवे, जब प्रहार करने की क्षमता आए और ये दोनों स्थितियां - बलवान होना, क्षमता प्राप्त करना, प्रहार करने की शक्ति होना और फिर यह सब कल्याणमय होना जीवन की पूर्णता है... और इसीलिए जगदम्बा को इसे शिव और शक्ति का संयुक्त रूप माना गया है।

जो शिव प्रकृत है उन्हें भी तो शक्ति की आराधना करनी ही चाहिए, क्योंकि विना शक्ति के शिव की आराधना सम्पत्त ही ही नहीं सकती और जो शक्ति के उपासक हैं उनके लिए भी तो भगवान शिव आराध्य है, जो मृत्यु पर विजय प्राप्त करने में जो आने वाली बाधाओं को दूर करने में और काल को दूर धकेलने में

क्योंकि मार्कंडेय ने तो स्पष्ट कहा है, कि सादि कोई साधक जगदम्बा की साधना सम्पन्न करता है और साधना बीच में ही सूट जाए, साधना असूटी रह जाए, अनुष्ठान किसी वजह से पूरा न हो सके या अनुष्ठान में कोई नुस्खा रह जाये, तब भी उसे कोई रिपटीर प्रभार देतरने को नहीं मिलता, तब भी साधक का छिट्ठी प्रकार से कोई अहित नहीं होता।

जो साधक पूर्ण रवरूप के साथ ब्रह्मांमत्र के द्वारा जगदम्बा को स्पष्ट कर लेता है, साथता है, उसकी आराधना करता है, उसे अपने हृदय में स्थापित करता है वह निश्चय ही शिव का प्रिय बन जाता है।

ऐसा व्यक्ति बैलोक्य में विजय प्राप्त करने में भी समर्थ होता है उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अआव या परेशानी या विनाया या तकलीफ हो ही नहीं सकती, वह निर्भीक होकर विचरण करने में समर्थ होता है।

सच्च है। इसलिए शिव और शक्ति का समन्वय उनकी साधना और आराधना जीवन की पूर्णता मानी गयी है।

मार्कण्डेय पुराण में बताया गया है, कि जो साधक पूर्ण निष्ठा के साथ नवार्ण मंत्र के द्वारा जगदम्बा को स्पष्ट कर लेता है, साधता है, उसकी आराधना करता है, उसे अपने हृदय में स्थापित करता है वह निश्चय ही शिव का प्रिय बन जाता है। ऐसा व्यक्ति देवता ये में विजय प्राप्त करने में भी समर्थ होता है। उसके जीवन में किसी प्रकार का अआव या परेशानी या विनाया या तकलीफ हो ही नहीं सकती, वह निर्भीक होकर विचरण करने में समर्थ होता है।

सैकड़ों देवताओं की साधना या आराधना करने की जरूरत जगदम्बा की साधना करने से भी समस्त देवताओं की आराधना सम्पन्न हो जाती है, क्योंकि मगवती जगदम्बा तो समस्त देवताओं के तेजस्वी रूप का पुरुज है और इसीलिए शश्वतों ने जगदम्बा को अष्टुतम आराध्य माना गया है। इसलिए तो जगदम्बा को जीवन की पूर्णता माना गया है, जीवन की श्रेष्ठता और जीवन की अद्वितीयता माना गया है।

जो साधक जगदम्बा को छोड़कर अन्य देवों-देवताओं की साधना में समय व्यतीत करता है वह ठीक वैष्णा ही है जैसे जह देवता न देवत पर्ती और डाँलियों को सीधा चना। पीथे का लहनहाना तो जह में पानी देने से ही सम्भव है, ठीक इसी प्रकार से जीवन की निर्भीक और निश्चन्न बना देने की क्रिया तो जगदम्बा साधना से ही सम्भव है। जो जगदम्बा की आराधना सम्पन्न बन जाता है, उसके जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अआव रह ही कैसे सकता है।

फिर जगदम्बा की साधना में तो कहीं कोई निषेष है ही नहीं... चाहे वह शिव का भक्त हो, शैव हो, चाहे वह वैष्णव हो, विष्णु की आराधना करने वाला हो, चाहे तांत्रिक हो, चाहे योगी हो, चाहे संन्यासी हो, चाहे शृहस्य हो, चाहे किसी धर्म का मानने वाला हो, जगदम्बा तो सबके लिए सर्व मूलभूत है। किसी भी वुक्ति से, किसी भी स्थिति से जगदम्बा को प्राप्त किया जा सकता है।

सैकड़ों प्रकार हैं जगदम्बा की साधना सम्पन्न करने के लिए - मंत्रों के माध्यम से, स्तुतिनाथ आराधना के माध्यम से, तंत्र के माध्यम से, योग के माध्यम से, श्मशान साधना के माध्यम से, वैष्णव साधना के माध्यम से, दैविक क्रिया साधना के माध्यम से, जघोर पंथ से, नाथ पंथ से और जितने भी पंथ, जितने भी सम्प्रदाय, जितनी भी साधना जितनी भी आराधना है, उन सभी सम्प्रदाय में भगवती जगदम्बा की साधना का चिन्नन है, विचार है। लड़े आशर्चर्य की बात है, कि प्रकार जगदम्बा साधना ही ऐसी साधना है, जो प्रत्येक पंथ और प्रत्येक सम्प्रदाय में विद्यमान है।

प्रत्येक व्यक्ति, संन्यासी, योगी इस प्रकार की साधना को सम्पन्न करने में जीरक अनुभव करता है और फिर कल्युग में तो 'कली चण्डी विनायकी' कल्युग में तो गणपति और जगदम्बा ही शोध सिद्धि देने वाले देवता माने गये हैं। अन्य देवताओं की साधना जहां कठिन है, लम्बी है, वहां जगदम्बा की साधना सरल है, सामान्य है, स्पष्ट है, शीघ्र सिद्धिदायक है, जिसकी साधना करने से हाथों-हाथ फल मिलता है, वह चाहे रक्षा करने की साधना हो, वह चाहे धन प्राप्त करने की साधना हो, वह चाहे व्यापार वृद्धि की साधना हो, वह चाहे परिवार की सुरक्षा और परिवार की उत्तमि की साधना हो, वह चाहे स्वास्थ्य कामना की साधना हो सभी प्रकार की इच्छाओं का परिपालन जगदम्बा की साधना में निहित है।

साधक नव साधना सम्पन्न करता है, तो साधना सम्पन्न होते होते ही उसको फल प्राप्त होने लग जाता है। उसका कार्य सम्पन्न होता है। इसलिए तो कलियुग में जगदम्बा की साधना को सर्वश्रेष्ठ साधना कहा गया है।

जगदम्बा की नवार्ण मंत्र साधना कर साधक वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है, जो उसका अभीष्ट लदयाहै। यह अलग बात है, कि कुछ समझना और सीखना आवश्यक है, पर इस साधना में कोई जटिलता नहीं है, कोई विशेष क्रिया कलाप नहीं है, किसी प्रकार की न्यूनता नहीं है। जगदम्बा की साधना तो अन्यन्त सरल और सामान्य है, जिसे कोई भी बालक या वृद्ध, साधक या साधिका कर सकती है। जगदम्बा की साधना के द्वारा तो सबके लिए खुले हैं।

जगदम्बा की नवाधना के लिए कोई लम्बा चौड़ा मंत्र नहीं होता, इसमें कोई लम्बी चौड़ी क्रिया-कलाप नहीं होती,

जगदम्बा की साधना तो अत्यन्त सरल और सामान्य है, जिसे कोई भी बालक या वृद्ध, साधक या साधिक कर सकती है।

शरीर को किसी भी परिस्थिति में अनुकूल बना लेना, कहीं पर भी, किसी भी प्रकार से विचरण कर लेना, शवुओं के बीच में बने सहना और शरीर के चक्रों को जाग्रत कर देना, कुण्डली के सहस्र को प्राप्त कर लेना, ब्रह्माण्ड शेषन कर ब्रह्माण्ड के सहस्रों को आत कर लेना भी इस साधना के द्वारा सम्भव है।

इससे किसी प्रकार का नुकसान नहीं होता, क्योंकि मार्कांडेय ने तो स्पष्ट कहा है, कि यदि कोई साधक जगदम्बा की साधना सम्पन्न करता है और साधना बीच में ही छूट जाए, साधना अधूरी रह जाए, अनुहान किसी बजह से पूरा न हो सके या अनुहान में कोई वृद्धि रह जाए, तब भी उसे कोई विपरीत प्रभाव देखने को नहीं मिलता, तब भी साधक का किसी प्रकार से कोई अहित नहीं होता। यह अलग बात है, कि साधना को यदि बीच में ही छोड़ दिया जाता है, तो उसका जिन्ना फल मिलना चाहिए उतना फल न मिले, उसका कुछ आंशिक फल ही मिले, पर यह स्पष्ट है, कि फल अवश्य ही मिलता है। साधक को विपरीत फल प्राप्त नहीं होता है, साधक को किसी प्रकार से नुकसान नहीं होता है।

इसलिए तो शास्त्रों में जगदम्बा की साधना को जीवन की ऐष्ट साधना मान गया है, इसीलिए तो मानव जाति के कल्याण के लिए इस साधना को प्रायमिकता यी गई है, इसीलिए तो जीवन के सारे अमान्यों को दूर करने वाली नवार्ण मंत्र साधना बताइ गई है। इसलिए तो वेदों से लेकर शंखचार्य तक प्रत्येक ने जगदम्बा

की साधना को भलत्व दिया, अनुभव किया, यि वार किया, कि इस साधना के द्वारा हम अपनी समस्याओं का समाधान भर सकते हैं। समाधान ही नहीं कर सकते, उन बाधाओं से निनाश पा सकते हैं और जीवन को ज्यादा सुखद, ज्यादा सरल और ज्यादा आनन्दमय बना सकते हैं।

जगदम्बा साधना अपने आप में ही एक परिपक्व और पूर्ण साधना है। यह तो उसकी विशेषता है, इसलिए तो साधना को जीवन का एक अद्भुत प्रयोग कहा गया है। मैंने अपने जीवन में स्वयं अनुभव किया है, कि जो कार्य अन्य प्रकार से या अन्य वेतनाओं की साधना से सम्पन्न नहीं होता है वह भगवती जगदम्बा की कृपा से नवार्ण मंत्र द्वारा शीघ्र सहज और सामान्य तरीके से भी सम्पन्न हो जाता है। शरीर को किसी भी परिस्थिति में अनुकूल बना लेना, कहीं पर भी, किसी भी प्रकार से विचरण कर लेना, शत्रुओं के बीच में बने रहना और शरीर के चक्रों को जाग्रत कर देना, कुण्डलिनी के रहस्य को प्राप्त कर लेना, ब्रह्माण्ड भेदन कर ब्रह्माण्ड के रहस्यों को जात कर लेना भी इस साधना के द्वारा सम्भव है; भौतिक जीवन की कामनाओं की पूर्ति भी इस साधना के द्वारा सहज सम्भव है।

चाहे किसी भी प्रकार की इच्छा हो, चाहे किसी भी प्रकार का चिन्नन हो, ऐसा ही ही नहीं सकता, कि हम इस साधना को सम्पन्न करें और उसका फल प्राप्त न हो और इसके साथ साथ संन्यास जीवन की उच्चता को प्राप्त करना और श्रेष्ठतम गुरु को प्राप्त कर लेना भी इस साधना के द्वारा सम्भव है।

समस्त विद्याओं और साधनाओं में निष्पात हो जाना उच्चतम भाव भूमि पर्याप्त हो जाना, कठ में सरस्वती को स्थापित कर हनरों-हनरों श्लोकों और ग्रंथों को स्मरण कर लेना, केवल मात्र जगदम्बा साधना से ही सम्पन्न हो और भाष्य ही इस साधना के द्वारा वह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है, जो प्रत्येक साधक, प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक उपयोगी और अनिवार्य है।

## श्रद्धांजली देश प्रिदेशम्

श्रीमी साधकों पुरुष वृक्ष भाईहों, ये जियेक्ष हैं, कि ये अपने-अपने श्रीओं में सम्पन्न हुई श्रीक यमाप्तु सम्पन्न हुई तथा पूज्यपाद लालूदेव डॉ० बादायणदत्त श्रीमाती दो श्राविती श्रद्धांजलि अर्पित की थई।

श्रमपूर्ण आदर्श पुरुष विदेशों में भी श्रीक यमाप्तु सम्पन्न हुई तथा पूज्यपाद लालूदेव डॉ० बादायणदत्त श्रीमाती दो श्राविती श्रद्धांजलि अर्पित की थई।

श्रमपूर्ण आदर्श पुरुष विदेशों में भी श्रीक यमाप्तु सम्पन्न हुई तथा पूज्यपाद लालूदेव डॉ० बादायणदत्त श्रीमाती दो श्राविती श्रद्धांजलि अर्पित की थई।

# शास्त्रि

का  
प्रबोध  
जो दरिद्रता  
का समूल  
विनाश कर  
देता है

जीवन का सब से बड़ा अभिशाप है दरिद्रता, जिससे व्यक्ति की सामाजिक रूप से अथवा भरण-पोषण के प्रति ही क्षमता नहीं होती वरन् इसी से हो जाती है एक ऐसी आंतरिक क्षमता, जीवन के भाव की उत्पत्ति, जिसका समाधान सहज नहीं होता।

जीवन का इस रूप में क्षय केसे न हो, इसी का समाधान प्रस्तुत कर रही है यह साथना —

**य**ह सत्य है, कि धन जीवन में सर्वस्व नहीं होता, धन सम्पत्ति को सर्वस्व के भाव में दृष्ट करना भी नहीं चाहिए, किन्तु इसके उपरान्त भी धन, जीवन की एक महती आवश्यकता ही नहीं आधारभूमि भी होता है, इस सत्य से कीन लंकर कर सकता है? धन का तात्पर्य केवल उसके माध्यम से मरण लेवग की व्यवस्था कर लेना अथवा भौतिक सुख-सुविधाएं एकत्र कर लेना ही नहीं होता है, धन का आर्थ और कार्य क्षेत्र इससे भी कहीं अधिक विस्तृत होता है, जिसका अनुभव प्रत्येक व्यक्ति चेतन अथवा अवचेतन मन-मस्तिष्क से निरंतर करता ही रहता है।

धन-सम्पत्ति का यह अर्थ जो निरंतर किसी भी व्यक्ति के जीवनेतन में गुणरित रहता ही है, वह होता है जीवन की सुरक्षा का प्रश्न। यह सत्य है कि धन की प्रवृत्ति, जीवन की सुरक्षा का एक निश्चित मापदण्ड नहीं है किन्तु अन्ततोरुद्धारा किसी भी व्यक्ति को तभी सुरक्षा बोध की प्रतीति हो पाती है, जब उसके पास धन का एक संग्रह हो अथवा संशह की स्थिति न भी हो, तब भी उसे इस बात की पूर्ण निश्चितता हो, कि उसके पास धन का अविरल प्रवाह बना रहेगा। यह सत्य भी है, कि नब तक धन के आगमन की एक सुनिश्चित स्थिति नहीं होती तब तक संचित धन का कोई जर्य भी नहीं होता, क्योंकि भले ही किसी व्यक्ति ने कितना ही क्यों न संग्रहित कर लिया हो, जब तक नवीन प्रवाह की स्थिति नहीं होती, तब तक भय ही एक दुर्घटक व्यक्ति के मानस को एक अत्यक्त रीढ़यण में आबद्ध रखता ही है।

इन्हीं बातों की संदेश में इस प्रकार से कहा जा सकता है, कि धन की जीवन में तभी पूर्णता कही ना सकती है, जब किसी भी व्यक्ति के समीप जहाँ एक ओर यथेह मात्रा में संग्रहित धन हो, तो

वहीं ऐसी स्थितियां भी हों, कि उसे अपने संचित धन में से व्याप करने की बाध्यता न हो। यहाँ इस बात का शीघ्रत्य सिद्ध करने का प्रयास नहीं है, कि प्रत्येक व्यक्ति के पास बैंक बैलेंस हो, किन्तु एक युक्तियुक्त रूप में धन का संग्रह व्यक्ति को आश्वसित देता ही है, इस व्यवहारिक सत्य से इनकार भी नहीं किया जा सकता है।

धन का एक युक्तियुक्त रूप में संग्रहित होना किसी भी व्यक्ति को एक अदृश्य सा सुरक्षा चक्र ही नहीं देता वरन् उसके मन को प्रस्तुति करने का हेतु भी बनना है। आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक इच्छा को तृष्णा या भोग की उपाधि दे दी जाए। प्रत्येक इच्छा तृष्णा नहीं होती है वरन् कुछ ऐसी इच्छाएं भी होती हैं जिनकी पूर्ति के माध्यम से कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को और भी अधिक सुसन्नित करना चाहता है, स्वयं को सुसंस्कृत बनाना चाहता है, और इस रूप में उसे धन की आवश्यकता पड़ती ही है।

... कोई व्यक्ति अद्वालिका खड़ी कर सुख का अनुभव करता है, तो कोई उत्तम कोटि का वाहन रखकर, कोई अत्यंत कोमली वस्त्र पहनकर, तो कोई न्याय में अपना वर्चस्व स्थापित कर, किन्तु ये सब क्रियाएं केवल जीवन को सुसन्नित ही करती हैं, कोई आवश्यक नहीं कि इनसे व्यक्ति का जीवन सुसंस्कृत भी हो जाए, सुसंस्कृत होना वह स्थिति होती है जहाँ व्यक्ति अपने जीवन को पूर्ण करने के बाद उस पूर्णता से गिली तृप्ति का सकारात्मक और स्वनात्मक उपयोग करता है। तृप्ति तो एक प्रकार की ऊर्जा होती है, जिसका उपयोग कोई सामान्य व्यक्ति अपने दम्भ के पोषण के लिए करता है (और दम्भ के पोषण के लिए दूसरे के स्वाभिमान को कुपलना पढ़ेगा ही) तो वहीं कोई सुसंस्कृत व्यक्ति इसका उपयोग निर्माण के लिए करता है। केवल कला,

संगीत अथवा साहित्य आदि ललित कलाओं के माध्यम से ही नहीं वरन् वह किसी का भी मन गौरीक पूर्णता के पश्चात् संतुष्ट हो। एक आनंद के साथ विस्तारित हो जाता है, उसके मन में कुछ बाट देने जैसा भाव उमड़ मात्र है वास्तव में ऐसा प्रत्येक व्यक्ति ही सही भूमि में सुरास्कत कहा जा सकता है।

सब कहा जाएँगे कि समाज में ऐसे ही व्यक्तियों के पास यदि धन की प्रचुरता नहीं तो कम से कम सुनिश्चितता होना चाहिए जिससे समाज में सामंजस्य और अपनात्म जैसी भावनाओं का विस्तार हो सके, किन्तु यह एक सत्य है कि समाज में ऐसे ही (सुरक्षक) व्यक्ति सदैव से आर्थिक पक्ष से दुर्बल होते आए हैं, क्योंकि उनके पास वह छल, बल, कौशल नहीं होता जो धनोपालन की प्राप्त एक आवश्यक शर्त भी बन गई है। जो

भी सुरक्षक व्यक्ति होगा, जिसके भी मन में मानवीय भावनाओं के प्रति लगाव और सम्मान होगा, वह धूर्तता को घटणा कर ही नहीं सकेगा यद्यपि वहां यह कहने का कदापि प्रवास नहीं है कि जो घनवान होता है वह धूर्त हो जाता है। ऐसे भी अनेकोंके व्यक्ति हैं जिन्होंने अपने कठे परिश्रम से धन के क्षेत्र में न केवल अपनी स्थिति सुदृढ़ की है वरन् अपनी विशिष्ट पहचान भी समाज में बनाई है, किन्तु क्या यह बात एक नियम के रूप में कही जा सकती है, कि कठे परिश्रम से ही जीवन में आर्थिक सुनिश्चितता मिल जाएँगी? पूज्यपाद गुरुरेव ने अपने अनेक प्रवचनों में इस बात को बार-बार कहा है कि परिश्रम तो एक मनदूर से ज्यादा कोई भी नहीं करता किन्तु वही व्यक्ति समाज में आर्थिक रूप से सबसे अधिक दुर्बल होता है।

कोई आवश्यक नहीं है, कि जहां 'कौशल' की बात सामने आए वहां उसका तात्पर्य संदेश किसी धूर्तना से ही हो। प्रत्येक कार्य को पूर्णता के साथ सम्पन्न करने के लिए जिस योजनावधार की आवश्यकता होती है वास्तव में वहां कौशल होता है। यह तो

एक विड्यमान है, कि आतंकीशल का तात्पर्य धूर्तता से लिया जाने लगा है अथवा समाज के बहुसंख्यक व्यक्ति किसी कौशल को अपनाने के स्थान पर धूर्तता को ही प्रश्रय देने में अपनी योग्यता समझने लग गए हैं, किन्तु जो साधक है वह जिन्हें यह विश्वास है कि कोई आवश्यकता नहीं कि जीवन में मनोर्गांछित स्थितियां प्राप्त करने के लिए छल-बल का सहारा लिया जाए, वास्तव में भाधना का क्षेत्र उन्हीं के लिए गदेव से अपनी बाहि कैलाकर उनकी प्रतीक्षा कर रहा होता है।

जीवन में आर्थिक अभाव का सामना करना भी एक प्रकार से पशुबल का ही सामना करने के समान होता है। आर्थिक अभाव या दरिद्रता व्यक्ति के पूर्वजन्मों का दुष्परिणाम ही न होकर एक प्रकार का पशुबल हो तो होता है, क्योंकि समाज की जिन परिस्थितियों के कारण कोई भी व्यक्ति बदूधा आर्थिक अभाव भोगने को बाध्य हो जाता है ये स्वयं

पशुबल से ज़रूर हुई दरिद्रता स्वयं में एक पशुबल ही होती है, जो धीरे-धीरे व्यक्ति के हृदय का समस्त प्रवाह, चेतना और रस तिथोऽसा लेनी है और ग्रन्थ देनी है उसे देसे अध्यकार से नहां वह स्वयं को दीन, होन, पतित मानने पर विवश सा होता हुआ अपने आप से कट जाता है। दरिद्रता के क्षेत्र बाह्य रूप से अथवा सामाजिक रूप से ही व्यक्ति को क्षय नहीं देती वरन् स्वयं उसके प्राणों में उसे क्षय दे देती है और जिसके प्राणों का ही क्षय हो गया वह अध्यात्म के पथ पर चल भी सकेगा तो कैसे? अध्यात्म के पथ पर तो चलने के लिए सामान्य से कहीं अधिक प्राण ऊर्जा की आवश्यकता होती है।

भौतिक तृष्णि, व्यक्तिको एसा आळादेनी है जो व्यक्ति को जीवन के उच्चतर सोपानों की ओर बढ़ने का चिंतन एवं अवकाश

जेतल पूर्वे जन्म के कर्मों नहीं वरन् प्रायः  
अधिक समाजिक परिस्थितियां भी बनकर आ-  
ज्ञानी हैं अग्निशाप, अभाव को उपचार करने का  
कारण बनती हुई। मिन्हतु इनका समाधान  
उपज्ञान के द्वारा प्राप्त करना ही, तो साधक के  
जीवन का 'कौशल' होता है।

होते हैं। नियमका जीवन नित्य के भरण-पोषण की समस्याओं एवं विविध इच्छाओं की पूर्ति में ही अटका रह गया वह तो प्रयोग करके वह अन्ने जीवन को श्रेयता नहीं दे सकता है। यह नो व्यक्ति का अन्न कितन होता है कि वह उच्चतर सोपानों से नात्पर्य भौतिक ऊर्ध्वों में छला करता है अथवा आध्यात्मिक ऊर्ध्वों में, किन्तु दोनों ही व्यक्तियों में प्राथमिक भावस्थूकरा नित्य की समस्याओं से मुक्ति नहीं होता है। प्रत्येक समस्या यथापि धन से ही नहीं सुलझ सकती किन्तु विज्ञेयण करके देखें तो प्रायः आधी से अधिक समस्याओं का समाधान धन के माध्यम से होता ही है।

आज की आवश्यकता यह है कि प्रत्येक साधक, साधना की सामान्य पद्धतियों को प्रयोग में लाने के साथ-साथ उन पद्धतियों की ओर भी दृष्टिपात्र करें जो तंत्र की पद्धतियां कहाँ गई हैं, जिनके विषय में यह धारणा बना ली गई है, कि उनका प्रयोग सामान्य अन्यों के लिए वर्तित है।

तंत्र में कोई विकृतता नहीं है, तीक्ष्णता अवश्य है और कोई भी साधक, गले ही वह जीवन के किसी भी क्रम में क्यों न हो, तो भक्ति-भक्ति का उपायों का अवलम्बन उसी प्रकार ले सकता है जिसका कारण कोई शक्ति साधक अथवा सान्यस्त साधक। इसी भाव की वज़न में रखकर इस वर्ष दिनांक 26.11.98 को घटित होने वाले पदमावती सिद्धि दिवस' (सिद्धाश्रम पंचाग्नुसार) के अवसर पर धन प्रदायक साधनाओं से सम्बन्धित शक्ति तंत्र की ऐसी वज़न विधि की प्रसन्नति की जा रही है, जिसका प्रयोग कोई भी साधक अपने जीवन को संतुलित बनाने के लिए निः संकोच कर सकता है।

यहाँ यह बात भ्यान में रखने योग्य है, कि पदमावती निष्ठि दिवस से तात्पर्य केवल यहीं नहीं है, कि साधक मगवती जटमावती से सम्बन्धित साधना को ही सम्पन्न करें वरन् इसी नव्हृति का उपयोग वे शक्ति तंत्र (या तंत्र की कोई भी पद्धति) से सम्बन्धित लक्ष्मी साधनाओं को सम्पन्न करने के रूप में भी कर सकते हैं। प्रस्तुत साधना विधि इसी प्रकृति की साधना विधि है जो लक्ष्मी निष्ठि साधना के रूप में सवित्यान साधना नहीं है।

जीवन को दारिद्र्य के चंगुल से छुड़ाने व जीवन के भौतिक पदों को संबारने में दैवतल को यहाँ करने के लक्ष्य साथकों को

चाहिए, कि वे अवसर रहते 'लक्ष्मी नृसिंह यंत्र' को प्राप्त कर ले जो पूर्णतया चैतन्य एवं प्राण प्रतिष्ठित भी हो। साथ ही आवश्यक सामग्री के रूप में 'चार लक्ष्मी फल' एवं 'कमल गड्ढ की माला' को भी प्राप्त कर ले।

यह साधना उपरोक्त दिवस अर्थात् 26.11.98 के साथ-साथ किसी भी माह के शुक्ल पक्ष में पढ़ने वाले बुधवार को प्राप्त-भी की जा सकती है। यह प्राप्त कालीन साधना है जिसको आठ बजे के बीतर ही सम्पन्नता दे देनी चाहिए।

इस साधना में साधक पीले वस्त्र धारण कर पीले ही आँखेन पर पूर्व की ओर मुख करके बैठें और अपने मगज एक पीला वस्त्र बिछाकर लड्यारी नृसिंह यंत्र को किसी ताम्रपात्र में स्थापित कर उसे जल से धोकर, पौधकर कुकुम, अक्षत, पुष्प, मुगन्ध व नैवेद्य भेटकर थी का एक दीपक लगा लें। यदि चाहें तो सुगन्धित धूप आदि भी प्रच्छलित कर सकते हैं। इसके पश्चात् जीवन में जो कुछ शीतिक रूप से मनोबांधित हो, उन सभी कामनाओं का मन ही मन स्मरण कर 'नृ' बौज मंत्र के द्वारा चारों लकड़ी कलों को यंत्र पर भेटकर निम्न मंत्र की कलालगड़ी की माला से चार माला मंत्र जप सम्पन्न करें -

॥ उमे श्री हीं जवलकमी पिवावे कित्य प्रमुचित  
चेतसे स्वदमी श्रितर्दृ वेहाव श्री हीं ब्रह्मः ॥

Om Shreem Hreem Jay-lakshmi Priyaayei Nitya Pramudit  
Chetasee Lakshmi Shritisardh Dehaav Shreem Hreem Namah.

मंत्र जप के पश्चात् अपने दैनिक कार्यों को कर सकते हैं किन्तु समस्त साधना सामग्री को उसी स्थान पर रहने और सुनिश्चित कर लें, कि वीं का श्रीपत मायकाल तक अखण्ड रूप से प्रब्लित रहेगा। सांयकाल को यंत्र, लक्ष्मी फल एवं माला को किसी मंदिर में कुछ दक्षिणा के साथ रख दें। इस प्रकार से यह साधना सम्पूर्ण होती है। यदि सम्भव हो तो आगे उपरोक्त मंत्र को एक माला मंत्र जप अपनी नित्य प्रयोग में लाने वाली माला से करते रहें।

लक्ष्मी तत्व में मगवान श्री गुरुसिंह की तेजस्विता समाहित होने से इस मंत्र की चैतन्यता अवधृत ही है, जो इस प्रकार से हो गानों सूर्य के उत्तित होते ही समस्त लादल स्वयं ही उसके तेज से छोट्टपर इष्टपर दृष्टपर विभग्नों को बाल्य ही जाए।

यह साधना पूर्ण गुरुदेव ने आशीर्वद म्बलप्प प्रवान की है। जिसकी भाषणा मायार्थी आप ने मूल्क प्राप्त कर सकते हैं। आप केवल ये परिवक्त सदस्य बनाएं (जो आपके परिवार के सदस्य न हों), और संस्कार प्रेसकार्ड भर कर भेज दें।

इम 423/- (दो पत्रिका सदस्यता शुल्क) 195+195/- डाक व्यय 33/- -423/- की बी.पी.पी. से मंत्र सिल्ह प्राण प्रतिष्ठान युक्त लकड़ी नुसिल चंद्र, 'वार लकड़ी फल' और 'कमल गढ़े की माल'

ठिं: शुल्क

# [आष्टमांशा खंड]

जीवन के तप्त मरुस्थल में रिमडिम पृहरों के मध्य जब किसी सुनंधित काली का प्रस्फुटन होता है, तो ऐसा प्रतीत होता है, कि जीवन में बहुत बड़ी उपलब्धि मिल गई हो। वास्तव में जीवन में माधुर्य, आनन्द का होना ईश्वर की ओर से प्रदान किया जाने वाला प्रत्यक्ष उपहार ही तो है मानव को, लेकिन कुछ लोग इससे तंचित ही रह जाते हैं, और यदि आप भी माधुर्य, प्रेम, आनन्द से तंचित हैं तो आप भी ईश्वर की कृपा को प्राप्त करने में समर्थ हो सकते हैं। इस यंत्र को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर नित्य यंत्र का पूजन करें। तीन माह के बाद यंत्र नदी में प्रवाहित कर दें।

**जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान 'ज्ञान दान'**

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। आप २० पूर्ण प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंडिरों में, अरपतालों में, सामारोहों में, मंगल कार्यों में, बायांों को, लिंगांश पार्श्वारों को दान कर सकते हैं और हस्त प्रकार उनके जीवन को भी हस्त श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक हस्त से तंचित हैं। हस्त किया के माध्यम से अतीक मनुष्यों को साधानात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

**आप क्या करें?**

आप केयल एक पत्र (संलग्न पोस्टफार्ड) भेज दें, जिस पर "मैं २० पूर्ण प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूँ। आप बिंशुल्क 'अष्टमा यंत्र' ३३०/- (२० पूर्ण प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क ३००/- + लाठे द्वय ३०/-) की टी.पी.पी. जिज्या दी.पी.पी. आवे पर, मैं पोस्टमैन को ज्ञानशाश्वी देकर सुख्या लूंगा। टी.पी.पी. शूटने के बाब्त मुझे २० पत्रिकाएं रजिस्टर्ड लाठ द्वारा भेज दें।"

आपका पत्र आवे पर ३००/- + लाठे द्वय ३०/- = ३३०/- दी.पी.पी. से 'अष्टमा यंत्र' जिज्या देंगे, जिससे इस आपको यह कुर्तम उपहार सुशक्तित रूप से प्राप्त हो सके।

अपवा पत्र जोशपुर के पते पर भेजें।



**सम्पर्क**

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हार्डकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राज.)

फोन - 0291-32209, टेली फैक्स : 0291-32010

# धन धान्य, ऐश्वर्य, सुख सीरभ प्रदायक काल भैरव साधना

जीवन में अभाव भी शत्रुवद् ही होते हैं, जो स्वमित कर देते हैं व्यक्ति के जीवन की सहज गति और प्रायः उसकी मति भी...

...आश्चर्य है! ऐसे 'शत्रुओं' को समाप्त करने के लिए साधक वर्यो नहीं सहायता लेते भगवान् श्री भैरव की, जो आपने स्वरूप में प्रबल शत्रुहंता ही स्वीकृत किए गए हैं।

प्रस्तुत है काल भैरव अष्टमी के पर्व पर भगवान् भैरव की साधना से सम्बन्धित एक नवीन आयाम—

**D**त्येक साधना एवं साधना पद्धति की अपनी एक पुराण विशिष्टता होती है और उस विशिष्टता के साथ का साधना स्वयं में सम्पूर्ण भी होती है, यह साधना जगत का एक नहर्चर्चण तथ्य है। आज इस बात को उल्लिखित करना इस कारण से जावश्यक हो गया है, क्योंकि न केवल साधना के मार्ग में प्रविष्ट शुद्ध साधकों के मन में वरन् इस मार्ग पर कई वर्ष तक चल चुके साधकों के मन में यह धारणा घर बन गई है, कि विशिष्ट साधनाएँ केवल विशिष्ट लक्ष्यों की पूर्ति तक ही सीमित होती हैं।

इस विचार-विमर्श के क्रम में यदि भगवती बगलामुखी शत्रु संहार की देवी (या साधना) है, लक्ष्यों के बहल धन-सम्पत्ति देने की एक हेतु है, दुर्गा दुष्टों का संहार करने का एक उपाय भर है तो इसी प्रकार से अन्य देवी-देवताओं अथवा साधनाओं के भी निरचित अर्थ सुस्थापित हो चुके हैं।

यह सत्य है, कि विशिष्ट साधनाएँ विशिष्ट उद्देश्यों की वृत्ति में सहायक होती हैं किन्तु है अन्ततोगत्वा एक अर्थसत्य ही और अन्यसत्य सदैव किसी छूट से भी अधिक प्रभित करने वाला होता है।

साधनाओं अथवा देवी-देवताओं को उनके विशिष्ट स्वरूप से कुछ अलग हटकर एक सम्पूर्ण दृष्टि से देखने की शीर्णा वाली विकसित नहीं हुई अथवा साधकों के पास जीवन का व्यरन्तता में इतना अवकाश नहीं रहा, कि वे इस विषय पर चिंतन कर सकें क्योंकि इस तीव्र युग में साधक का ध्यान साधना से भी अधिक

इस बात पर केंद्रित रहता है, कि कैसे उसके जीवन की किसी समस्या विशेष का समाधान शीघ्रातिशीघ्र हो सके।

यद्यपि ऐसा करने में कोई दोष नहीं है। प्रत्येक साधक से यह अपेक्षा नहीं की जाती है, कि वह पहले किसी साधना अथवा देवी-देवता के स्वरूप का तात्त्विक विवेचन कर ले तब साधना में प्रवृत्त हो किन्तु एक सम्पूर्ण दृष्टि की अपेक्षा तो की ही जा सकती है और इसका सर्वाधिक लाभ भी अन्ततोगत्वा किसी साधक को ही तो मिलता है।

साधना एक व्यवसाधिक विषय वस्तु नहीं होती है कि मुंह मांगा दाम देकर अपनी मनोवालित वस्तु को प्राप्त कर लिया जाए। किसी भी साधना को पहले अपने रोम-रोम में समाहित करना होता है तभी उस साधना से सम्बन्धित मंत्र जप को सम्पन्न करने का कोई अर्थ होता है और यह किसी अन्य युक्ति से नहीं वरन् सम्भव होती है तो केवल ज्ञान के माध्यम से, तात्त्विक विवेचन के माध्यम से।

पत्रिका में कोई साधना विधि प्रस्तुत करने से पूर्व उसकी संक्षिप्त व्याख्या करने के पीछे यही मतव्य होता है।

नेमा कि प्रारम्भ में कहा, कि प्रत्येक साधना यद्यपि स्वयं में किसी एक विषय तक ही केंद्रित प्रतीत होती है किन्तु वही साधना स्वयं में एक सम्पूर्ण साधना भी होती है, इसका भी अर्थ केवल इतना ही है, कि साधना कोई भी क्यों न हो, यदि साधक की अन्तर्भुक्ति उसमें रच-पच जाती है तो न केवल उसके तात्कालिक उद्देश्यों की

पूर्ति सम्बन्ध होती है वरन् वह उसी साधना के माध्यम से निश्चिए आध्यात्मिक अनुभूतियों एवं चेतन्यता को प्राप्त करने में भी सक्षम होने लगा जाता है।

यह कदापि

महन्वपूर्ण नहीं है कि किस साधक के इष्ट कीन है, क्योंकि कोई भी देवी या देव न तो छोटे होते हैं न बड़े। न कोई देवी (या देवता) न्यून होते हैं और न कोई उच्च, यदि साधक के पास एक सम्पूर्ण दृष्टि हो। अंतर तो केवल साधक के लक्ष्यों से पड़ता है, जिस प्रकार ज्ञे आज भैरव को केवल एक धीरण देव मानने से उनकी छवि जनमानस में प्राप्त एक विकृत देव के रूप में स्थिर हो गई है, किन्तु भगवान भैरव का परिचय इस रूप में प्रस्तुत होना एक प्रकार का अपार्थित ही है।

यह सत्य है, कि जीवन की धीरणताओं को समाप्त करने में भगवान भैरव की साधना के समकक्ष कोई साधना नहीं प्रतीत होती, शब्दहता स्वरूप में उनकी

सिद्धि प्राप्त करना वास्तव में जीवन का सौभाग्य ही होता है, श्रमशान साधनाओं एवं उत्तर साधनाओं में पूर्णता उनकी प्रसन्नता के बिना मिलना कठिन ही नहीं असम्भव भी होता है किन्तु इसके पश्चात् भी मानों भगवान भैरव का चित्र पूर्ण नहीं होता है।

भैरव साधना का एक गोपनीय पक्ष यह भी है, कि जहाँ वे एक उषा देव हैं वहाँ अन्तर्मन से पूर्ण शांत व चेतन्य देव भी हैं जिनकी यथेष्ट रूप में उचित साधना विद्या से उपायन करने पर यह सम्भव ही नहीं है कि उनके साधक के जीवन में किसी प्रकार का भौतिक अमाव रह जाए।

इसी तथ्य का और अधिक गूढ़ विवेचन यह है, कि जहाँ जीवन में धूस-समृद्धि का आशयन किसी तेजस्वी साधना के माध्यम से सम्भव होता है वहाँ, वह उच्च साधनाओं की कपेक्षा कहीं अधिक स्थायी, आभास्युक एवं जीवन में निश्चित रूप से सुखद परिवर्तनकारी होती है।

भगवान श्री भैरव की व्याख्या केवल 'विभेति शत्रू'

इति भैरवः (अर्थात् जो शत्रुओं को भयभीत करने वाले हैं वे भैरव हैं) ही नहीं बरन् 'विभर्ति जगदिति भैरवः' (अर्थात् जो समस्त जगत का भरण धोषण करने वाले हैं, वे भैरव हैं) भी है। यह बात और है, कि उनकी जनसमान्य में छयि एक धीरण देव के रूप में ही सुस्थापित हुई।

जब समाज किसी तेजस्विता को सहन नहीं कर पाता है तो यही किया होती है। जब विवेचन का क्रम स्तम्भित हो जाता है तो एक प्रकार का गोंडामन उपज आता ही है और इन सभी बातों के मूल में जो त्रुटि होती है, वह अपना ध्यान केवल लद्य का पूर्ति तक केंद्रित रखने के कारण ही होती है।

इसके उपरांत भी इस सत्य से तो कोई इन्कार नहीं कर सकता, कि जीवन में भौतिक लक्ष्यों की प्राप्ति करना, भौतिक बाधाओं को दूर करना जीवन का प्रथम एवं अत्यावश्यक सोधान होता है।

जिसके अगाव में चित्र स्थिर हो ही नहीं सकता। साधक का चित्र नहाविभिन्न भौतिक बाधाओं की समाप्ति में सुसिंगर हो सके वही उसके जीवन में एक तेजस्विता का भी समावेश हो सके, इन्हीं दीनों उद्देश्यों को ध्यान में रखकर आगामी 11.11.98 को घटाट होने वाली 'काल भैरव अष्टमी' के अवसर पर एक विशिष्ट साधना प्रस्तुत की जा रही है।

**प्राप्तेक साधना का होता है एक गृह्णा सत्य**  
या key point, जिसके अमाव नै निलिप्त हो गता है समर्थत मंत्र जप या फोई भी लायजा।

— और यही धारा पूर्णिता सत्य है भगवान भैरव के फिली भी दृप्तिप से सम्बलित साधना में भी।

**न कोई देव (या देवी) छोटे होते हैं, न कोई उच्च। आवश्यकता होती है, तो केवल एक सम्पूर्ण दृष्टि की – और यही बात कहीं जा सकती है अंगराज भैरव के प्रति प्रचलित जन्मताओं के प्रति भी... .**

भगवान शिव की ही भाँति भगवान भैरव का स्वरूप भी जन्मता होता से प्रसन्न होने वाला माना गया है। आवश्यकता है तो केवल इस बात की, कि साधक को भैरव साधना में आने वाले विशेष चरणों का विशेष रूप से जान हो।

प्रत्येक साधना का एक गुह्य सूत्र होता है या यूँ कह सकते हैं कि key point होता है जिसके अधार में भले ही कितने ही तत्त्व नये कर्यों न सम्पन्न कर लिए जाएं, सफलता पूर्णसूपेण नहीं मिल पाती है। यह key point प्रत्येक साधना की अन्तर्भुक्ति के साथ परिवर्तित होने वाला तत्त्व होता है अर्थात् यह आवश्यक नहीं, कि जो बात एक साधना के विषय में सत्य हो वही प्रत्येक साधना के लिए अंतिम रूप से सत्य हो तथा इसका निर्धारण किसी तर्क के आधीन न होकर भाव के हो आधीन होता है।

काल भैरव का स्वरूप भी किसी तर्क का आधीन होकर भाव के आधीन आने वाला विषय होता है। साधक सामान्यतः काल भैरव संज्ञा से किसी भीषण आकृति की कल्पना कर लेते हैं और यदि तत्सम्बन्धित साधना में प्रवृत्त होते भी हैं, तो एक साधनित जुगृप्ता के साथ। उनका ऐसा भाव रखना ही साधक के लिए सर्वाधिक न्यून हो जाता है।

वरनुतः काल भैरव का अर्थ है, जो काल वक्र में पड़े हुए दीव (साधक) को अपनी चैतन्यता से मुक्त कर श्रेयस्कर मार्ग की ओर प्रवर्तित कर दें और निश्चय ही ऐसे वेव का पूजन, साधना अन्त आङ्गार के साथ सम्पन्न की जानी चाहिए।

यूँ इन पंक्तियों में भले ही कितना कुछ कर्यों न वर्णित कर दिया जाए, कि काल भैरव की साधना से जीवन में क्या-क्या लाभ होते हैं, वह तब तक फलप्राप्त हो छी नहीं सकेगा जब तक साधक काल भैरव के प्रति एक सशब्दाभाव को आपने मन में रखा नहीं देगा, उनसे सम्बन्धित साधना विधि को प्रयोग में पूर्ण लाभ्यता से नहीं लाएगा।

आगे की पंक्तियों में उपरोक्त विवर की चैतन्यता के अनुरूप साधना विधि प्रस्तुत की जा रही है जो किसी भी भैरव

साधक अथवा गृहस्थ साधक द्वारा अवश्यमेव प्रदोष में लाने योग्य है। इस विधि की विशिष्टता है, कि जहाँ एक ओर से यह दुर्बलता, हीनता आदि की स्थितियों को समाप्त करने की साधना है वही दूसरी ओर से पूर्ण गौतिक सम्पूर्णदयक साधना भी है। इसे सम्पन्न करने के इच्छुक साधक को चाहिए, कि वह समय रहते 'भैरव यंत्र' व 'भैरव माला' को प्राप्त कर दिनांक 11.11.98 की (या किसी गो रविवार की), रात्रि में दस बजे के आसपास काले वस्त्र पहन साधना में प्रवृत्त हो। दक्षिण दिशा की ओर मुख कर बैठना आवश्यक है। यंत्र व माला का सामान्य पूजन कर एक तेल का बड़ा सा दीपक जलाएं और उसको निम्न मंत्र से अध्यार्थीना करें –

**ॐ ह्रीं हैं श्री कलीं हैं हौं श्री सर्वज्ञाय प्रचण्ड पश्यकमस्य दृट्काद इमं दीर्घं ब्रह्मण सर्वकार्याणि साधव लाभव, दुष्टान ब्रात्यव नाशव, ब्रात्यव ब्रात्यव सर्वतो मम रक्षां कुरु कुरु हुं कष्ट स्वहा।**

इसके पश्चात अक्षन, कुरुकुम, पुष्प व नल हाथ में लेकर दीपक का समक्ष छोड़ निम्न मंत्र उच्चारित करें –

**ब्रह्मण दीर्घं देवेश, दृट्केश महाप्रभो, ममाभीष्टं कुल विप्रमापदभ्यो लमुद्दर।**

फिर निम्न मंत्राच्चारण के साथ दीपक को प्रणाम करें –  
**भो दृट्क / मम् सम्मुखोमव, मम् कार्यं करु करु हृच्छितं देहि-देहि मम् सर्वं विद्यनाद् नाशव ब्रात्यव स्वहा।**

अपने मन की इच्छाओं व उनमें आ रही बाधाओं का उच्चारण कर (अथवा मन ही मन उनका स्मरण कर) साथ ही भगवान भैरव से उनकी पूर्ति की प्रार्थना कर भैरव माला से निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जप को सम्पन्न करें। यदि सम्मव जो तो यह मंत्र जप दीपक की ली पर ध्यान केंद्रित करते हुए हो जाएं।

**मंत्र**

**॥ उं ह्रीं काल भैरवाय हौं नमः ॥**

Om Hreem Kaul Bheiravay Hreem Namah

मंत्र जप के पश्चात् पुनः दीपक के सम्मुख निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

**श्री भैरव ब्रमस्तुभ्यं सर्वदं कार्यसाधक रत्सर्वायामि ते दीर्घं ब्रात्यव सर्वसाधारात् मंत्रापारक्षर होरेन पुष्पेण विकले ब्रवर् यूजितोऽसि मवरेषं । तत्सर्वस्व मम प्रमो**

ज्ञान रखें, कि दीपक को बुझाना नहीं है आपितु वह जब तक जले उसे नलने देता है। दूसरे दिन सभी साधना सामग्रियों को नहीं मैं निसर्जित कर दें। जीविकोपार्नन के देवत में आ रही बाधाओं को समाप्त करने के लिए यह एक अनुभव रिक्ष नाशना है।

साधना सामग्री पैकेट - 210/-

# यह हमने नहीं बनाया है मिहिर ने कहा है

विष्णु भी कार्य के प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपरियत वही हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्थित को तलावरहित कर पायेगा या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिससे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुचकूल एवं आवश्यक बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समझ पर्युत हैं, जो बहाहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रन्थों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक विषय के अनुसार पर्युत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

- |  |   |
|--|---|
| <p>15 सितम्बर 'हनुमान बाण' (प्रत्यक्ष हनुमान सिद्धि पुस्तक से) का पाठ करके ही कार्य पर जाए।</p> <p>16 सितम्बर 'कली ऐं ही औं फट' (Kleem Ayem Hreem Om Phat) का ग्यारह बार उच्चारण करके ही कार्य पर जाए।</p> <p>17 सितम्बर सीधी (न्यौछावर - 40/-) को पूरे दिन अपने पास रखें, कार्यों में सफलता मिलेगी।</p> <p>18 सितम्बर पांच लौंग को एकत्र कर उसे कागज में बांधकर अपने कार्य की सफलता के लिए प्रार्थना कर, उसे किसी मन्दिर में ढाँड़ दें।</p> <p>19 सितम्बर सरसों के तेल का दान करें।</p> <p>20 सितम्बर पितृ तर्पण जौ, तिल, गंगाजल से करें, पितृ कार्य को सफलता प्रदान करने में सहायक होंगे।</p> <p>21 सितम्बर भगवती दुर्गा का ध्यान करके ही कार्य पर जाए।</p> <p>22 सितम्बर दुर्गा चालीसा का पाठ करके ही कार्य पर जाए।</p> <p>23 सितम्बर नवार्ण मंत्र का नप करके कार्य पर जाए।<br/>मंत्र - 'ऐं हीं बलीं चामुण्डायै विच्छे' (Ayem Hreem Kleem Chaumundasayel Vichche)</p> <p>24 सितम्बर दुर्गा विश्वह के समझ लाल पूज्य अर्पित करें, भगवती आपके कार्यों की सफलता में सहायक सिद्ध होंगी।</p> <p>25 सितम्बर तांत्रिक फल (न्यौछावर 42/-) को भगवती दुर्गा के समझ चढ़ाते हुए जाएं, कार्य में सफलता मिलेगी।</p> <p>26 सितम्बर दस महाविद्या का ध्यान करके ही कार्य पर जाए।<br/>ध्यान - 'शक्ति नमामि दस वक्त्र गीताम्'<br/>(Shakti Namaami Das Vaktra Geetam)</p> <p>27 सितम्बर दुर्गायै नमः (Om Durgaayei Namah) का सात बार जप कर ही कार्य पर जाए।</p> <p>28 सितम्बर एक गिलास पानी लेकर पूर्व विश्वा की ओर खेड़ होकर, उसमें 'ऐं' (Ayem) बोन का ग्यारह बार</p> | <p>29 सितम्बर उच्चारण कर जल को अभिमंत्रित कर जल पी लें।<br/>काली स्तोत्र ('महाकाली' पुस्तक से) का पाठ करके ही कार्य हेतु जाए।</p> <p>30 सितम्बर 'वीरा सूक्त' का पाठ करके ही कार्य हेतु जाए।<br/>1 अक्टूबर 'ॐ हीं प्रसाद सुमुखाव रुद्राय नमः' (Om Hreem Prusad Sumukhav Rudray Namah) का जप ग्यारह बार कर, घर में प्रसाद वितरित करें।<br/>'निश्चिलेश्वर शतकम्' के पांच इलोकों का पाठ करके जाए।</p> <p>2 अक्टूबर सरसों के तेल का दान करें।<br/>कुंकुम, अशत से भगवान सूर्य का पूजन करें।<br/>खूब का भोज भगवान कृष्ण को अर्पित कर, कार्य पर जाए।</p> <p>3 अक्टूबर विलंबी की नाल (न्यौछावर 60/-) को अपने सिर के ऊपर से तीन बार घुमाकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें।</p> <p>4 अक्टूबर 'ॐ कलीं हीं फट' (Om Kleem Hreem Phat) का २१ बार जप करके ही कार्य पर जाए।</p> <p>5 अक्टूबर प्रातः काल ही भगवती पार्वती का पूजन कर ही कार्य पर जाएं, सौभाग्य प्रदायक दिन व्यतीत होगा।</p> <p>6 अक्टूबर 'कीं' (Kreem) बोन का उच्चारण प्रत्येक कार्य से पूर्व पांच बार कर लें।</p> <p>7 अक्टूबर 'हनुमान विश्वह' के समझ तेल का दीपक जलाएं।</p> <p>8 अक्टूबर 'ॐ हां हीं हूं नमः' (Om Hreem Hreem Hreem Namah) मंत्र का ग्यारह बार जप करके ही कार्य पर जाए।</p> <p>9 अक्टूबर राधाकृष्ण का पूजन कर ही कार्य पर जाए।</p> <p>10 अक्टूबर हनुमान चालीसा का पाठ कर ही कार्य पर जाए।</p> <p>11 अक्टूबर तुलसी जी के वृक्ष में जल डालकर प्रदक्षिणा करें, कार्य में सफलता की सम्भावना लेंगी।</p> <p>12 अक्टूबर</p> <p>13 अक्टूबर</p> <p>14 अक्टूबर</p> |
|--|---|

# वर्वार्ण भूत्र लिखि दीक्षा



**जो** गवम्बा साधना के कहे भ्वन्नप हैं, इनमें से एक प्रमुख साधना स्पष्ट कर रहा हूँ। यह है नवार्ण मंत्र वाला। नवार्ण मंत्र साधना का तात्पर्य अपने जीवन की समस्त अन्तर्मितिक इच्छाओं की पूर्ति करना, ज्ञान प्राप्त करना, चेतना उत्तम करना, भिन्नियों को इम्प्रतगत करना, केंठ में वाण् देवी सरस्वती की स्थापित करना, सहसार भेदन कर कुण्डलिनी नागरण के गाध्यम द्वारा इच्छापूर्ण चेतना को प्राप्त करना, यह सभी नवार्ण मंत्र साधना से बहुत सम्भव है।

इसके लिए नवार्ण मंत्र, यंत्र और दीक्षा की आवश्यकता होती है, यंत्र जो निरुद्ध हो चेतना युक्त हो, क्योंकि यंत्र का साधा उच्च साधक के चिन्ह से होता है। निष्पक्षी वज्र द्वारा उसी साधना और निष्पक्ष प्राप्त होती है।

नवार्ण मंत्र के नी अक्षर है इसलिए तो इसे नव वर्ण या नवार्ण यंत्र कहा गया और इसे लिखि करने में 'ब्रह्मिक माला' से या 'स्फटिक माला' से राति की सबा लाख मंत्र जप ९ या २१ दिन में सम्पन्न कर लें। इसके लिए समय-अवधि, मंत्र जप संस्थापना निश्चित हो। अनुष्ठान के नप में ही साधना करने से पिछले प्राप्त होती है। इससे साधक स्वयं खुद ही जिसाव लगा ले उसे रोज कितना मंत्र जप करना है। वह जाहे तो एक ही बेटक में मंत्र जप सम्पन्न कर सकता है, चाहे तो दिन में दो बार या तीन बार बैठकर भी मंत्र जप सम्पन्न कर सकता है। उच्चवीटी के योगी और भू-यासी नी इच्छापूर्ण के रहस्य को नानने के लिए उत्तम होती है, वे नवार्ण मंत्र की साधना को श्रेष्ठ मानते हैं, वे चाहे अन्य साधना सम्पन्न करें था न करे नवार्ण साधना तो सम्पन्न करते ही हैं।

आत भी निश्चित है, कि जब तक नवार्ण सिद्धि प्राप्त नहीं हो जाती, तब तक हवय कमल विकसित नहीं होता, तब तक मूलाधार जाग्रत नहीं हो सकता, तब तक चेतना युज्ज्वल स्पष्ट नहीं हो सकता, तब तक सहस्रार भेदन नहीं हो सकता। वह चब कुछ तो नवार्ण मंत्र के नाध्यम से ही सम्भव है, क्योंकि इसके प्रत्येक बींज अपने आप में महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के प्रतीक है। यह मंत्र अपने आप में अद्विकर और समाप्त करने वाला है। यह व्यक्ति को अच्छी प्रवृत्ति की ओर अग्रसर करने में सहायक है और मानसिक तनाव को दूर करने में यह मंत्र सर्वोत्तम है, क्योंकि इसके माध्यम से व्यक्ति अपने आप जीवन के रहस्य को समझ सकता है। साधनाओं में सिद्धि प्राप्त कर सकता है और वह सब कुछ अनुभव कर सकता है, जो जीवन के लिए आवश्यक है। मात्र जिन्हा रहना हो जीवन नहीं है, जीवन के बारे में चिन्तन करना और जीवन को समझना भी जम्मी है। इसलिए शास्त्रों में कहा गया है,

कि जो जीवन में पूर्णता चाहते हैं। उन्हें चाहिये, कि वे नवार्ण साधना को सम्पन्न करें और लिङ्ग गुरु द्वारा दीक्षा प्राप्त करें।

नवार्ण मंत्र अपने आप में छोटा सा मंत्र होते हुए भी अत्यन्त तीव्र प्रवाह उत्पादक है, तुरन्त असर करने वाला है और सारे शशीर को चेतना युक्त बनाने में समर्थ है, क्योंकि इस मंत्र के द्वारा जीवन को चेतना युक्त क्राया जा सकता है। इस मंत्र के द्वारा जड़ा महानदीमी को भी प्रसन्न किया जा सकता है, वहाँ महाकाली का आशीर्वद भी प्राप्त किया जा सकता है, और साथ ही साथ भगवती नगदम्बा को प्रसन्न कर उनके साक्षात् दर्शन करने के लिए यह मंत्र अपने आप में नवीतम है।

यह जरूरी है, कि इस साधना को सम्पन्न करने से पूर्व यदि साधक या साधिका किसी वीर्य गुरु से नवार्ण दीक्षा प्राप्त कर लेना है, तो उत्तम रहता है। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो उसे नवार्ण दीक्षा प्राप्त करने ही चाहिये, क्योंकि इससे नवार्ण मंत्र साधक के पूरे देह में सम्पूर्णता के साथ स्थापित कर दिया जाता है और भाग रोम-रोम नवार्ण मंत्र उच्चरित करने लग जाता है।

यह दीक्षा अपने आप में जटिल है, किन्तु भास्मान्य गुरु के बस की बात नहीं है, कि वह इस प्रकार की दीक्षा प्रदान कर सके।

यह तो तेजस्वी दीक्षा है, जो स्वयं समर्थ गुरु है, जिन्होंने जगदम्बा साधना को सम्पन्न कर रखा है, जिन्होंने भगवती जगदम्बा को प्रत्यक्ष प्रकट किया है। वे इस दीक्षा को प्रदान कर सकते हैं। यदि साधक को या शिष्य को ऐसे गुरु प्राप्त हो जायें और चाहे उसने किसी भी अन्य प्रकार की दीक्षा प्राप्त की हो, फिर भी उसे चाहिए, कि वह अपने गुरु से प्राचना कर इस प्रकार की दीक्षा प्राप्त करे अपने शरीर में नवार्ण मंत्र की स्थापित करे, ऐसा करने पर नवार्ण सिद्धि प्राप्त होती ही है। दीक्षा लेने के पश्चात् यह अनुष्ठान सम्पन्न होते-होते भगवती जगदम्बा के स्वरूप के साक्षात् दर्शन हो जाते हैं। यही तो इस मंत्र की विशेषता है।

... और जीवन में चाहिये ही यथा, यह साधना सम्पन्न करे और मां भगवती जगदम्बा हमें नाश्चात् जाग्रत्यमान स्वरूप में उपस्थित हो दें, उनका वरद हस्त सिर पर हो — यह मनुकुछ इस मंत्र के द्वारा नम्भव है।

**यह तिशेष दीक्षा नवशत्रि में प्रदान की जाएगी।**

# शाक्रमणी साधना

सफल गृहस्थ जीवन, शत्रु रहित जीवन,  
आधिक पूर्णता और दृढ़ावस्था का निराकरण...  
क्या नहीं प्राप्त हुआ गुह्ये।



क्या यह वांछय है कि आज के दिन में भी कोई साधक किली की व्यापा देखता का अपने हड्डी बेत्रों की साक्षात् व्यापक पर्याप्ति... पूर्ण प्रामाणिक, तेजस्वी और जाज्वल्यमान व्यक्ति। एक साधक की प्रत्यक्षा अनुशृण्टि पर आवाहित यह वर्णन तो प्रेया ही छिद्र पर्याप्ति है।

**बा**

त उन दिनों की है जब मैंने साधना के घने जंगल में पहला ही पग रखा था और जैसा कि स्वामानिक ही था, कि गुरु निर्देशन के अभाव में एक धने दन प्रातर की ओर बढ़ गया था। अधिकांश साधकों की यही तो नियति होती है, क्योंकि अध्यात्म आज हमारे बीच जंगल बले जाने का पर्याय हो गया है। न तो किसी साधना विधि का ज्ञान था न ही किसी उचित मंत्र का। या यों कहें, कि यायावरी का कोई आकर्षण था, बधनों, दायित्वों से मुक्त होने की कोई छटपटाहट थी, इसी से पलायन न होते हुए भी पलायन रा कर गया था। गुरु का महत्व तो मैंने बहुत बाद में जाना। कई उत्तर-वदाव देखने के बाद साधना के नमे को समझा और वारसात्मिक रूप में अब जाकर यथोर्ध्व साधक बनने के उपक्रम में पहला पग रखा है।

उन दिनों ने न तो कही रहने का स्थान निश्चित था और न जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करने का लक्ष्य। बस कोई एक प्रवाह था, जिसमें बहता चला जा रहा था। कहाँ जाना है, कैसे जाना है, क्यों जाना है, कुछ पता ही नहीं था। शायद ऐसा भी था, कि इस तरह से भटकने में अपने पौरुष के दम को भी तुष्टि मिलती थी, कि मैं अपने पैरों से सारा भारत नाप देने निकला हूँ।

जीवन की अनेक विद्या धाराएँ, जो मैंने गुरु साहब्य को प्राप्त करने से पूर्व निर्गत की थीं, उनकी वारसात्मिकता और उनमें निहित गूरुकर्त्ता तो मुझे बाद में पता चला। गुरुदेव ने मुझे बैठा कर ज्ञान नहीं दिया किंतु यही तो अद्युक्त क्षमता होता है, कि मैं अपने भौति से ही सब कुछ व्याखित करते चलते हैं। इसके पूर्व दीक्षा जाति उपायों से ही ही 'जीन का श्रवण' करने की कला भी लिखते हैं। यह तो मेरे जीवन का एक पृथक और रुपिस्तु अध्याय है।

मैं यहाँ करना चाहता था जीवन के उस प्रसंग की जो

मुझे अपने यायावर जीवन (अब मैं उसे संयास जीवन कहने की क्षमता नहीं कर पाता) के किसी रूप पर अनुभूत हुआ और जहा से मैंने साधना-सिद्धि का प्रथम पाठ पढ़कर वारसात्मिक रूप में ज्ञानार्जन की प्रक्रिया प्रारम्भ की!

अधिक से अधिक मैं इतना ही कह सकता हूँ कि भारत के किसी पूर्वी भाग की है यह घटना। मिशालन ही मेरी पृथि थी और किसी ग्रामीण से सुनकर उन सौम्य ग्रीष्म महिला के साहचर्य में पहुँचने का सीमाया मुझे मिल गया था। उस क्षेत्र में वे निर्दिता मां के नाम से विद्यारत थीं। पूरा नाम था उनका निरिता मुखोपाध्याय। वे अविवाहित थीं अथवा कैव्य प्राप्त - इसके विषय में किसी को भी कोई ज्ञान नहीं था। या यों कहें, कि इस विषय में जानने की बेट्टा करना भी उस क्षेत्र के निवासियों की दृष्टि ने पाप था। ठीक भी था, जगदब्बा की धारणा भी तो तत्र उनके कौमार्य रूप में ही करता है। मुझे भी इससे कुछ विशेष लेना-देना नहीं था। मैं तो बस अपने किसी गंतव्य तक पहुँचने के लिए चल रही थाक्का मैं रात्रि-विश्राम का कोई उपयुक्त स्थान नहीं रहा था। रात्रि विश्राम के लिए व्यधि अनेक उपाय थे, जो मैंने केवल इस कारणवश छोड़ दिए, क्योंकि निरिता मां के विषय में सुनकर मुझे एक प्रकार का कोतूल मी उड़ा आया था। मुझे लगा, कि कोई आध्यात्मिक महिला होगी, जिनसे मिलकर प्रवास का सदुपयोग मी हो जाएगा।

निरिता मां के विषय में मैंने मार्ग में ग्रामीणों से सुनकर जो धारणा बनाई थी वे ठीक उसी के अनुरूप थीं। एक सीधी-सादी प्रायः पवास-पवपन वर्ष की प्रतीत होती निरिता मां का स्वरूप अपूर्व मातृत्व से भरा था। उनके केश प्रायः अर्धश्वेत ही चुके थे, किंतु चेहरे पर विद्यमान ओज और नेत्रों में करुणा की तरलता उन्हें किसी दैरीय व्यक्तिगत से कम नहीं लगने दे रही थी। साधारण से वस्त्र पहने वे सौन्दर्य प्रराशनों के उपर्योग से तो कोसों दूर, अपने बालों में कदाचित कंपी तक

ने नहीं कहती थी। तभी तो उसके बीच आपस में मिलकर जागृत बन गई थी, जो निश्छल विजय से स्पन्दित हो यूं अमर्मन हो जाती मानों कोई जल नहीं नदी तट, को अपने जलके से त्वर्ष से सहला गई है। ऐसा ही मुझे तब भी लगा जब उन्होंने मेरे पहुँचने पर स्मिता युक्त स्वगत के साथ सिर पर इन्द्र के ठोड़ी का अपनी जगतियों से त्वर्ष कर, बंगाल की झज्जा के अनुसार फिर अपनी जगतियों का चुम्बन कर मानों कुछ सहसित ही कर दिया। सच्चास का जीवन एक रुक्ष जीवन होता है। भौह—ममता से तो पता नहीं कितनी दूरी होती है उस जीवन में, साथ ही जगतियों के प्रति मन में एक रुक्षर की अवहेलना सी पनप जाती है या यों कहें, कि शास्त्रों में संचास का ऐसा ही विवरण रुक्षर हम अपने मन में सप्रयास द्वारा अवहेलना (जिसमें दधि निश्चित होता है) विकरित कर लेते हैं, फिर भी कुछ ऐसा था जो मुझे स्निध कर गया। उनका यहला प्रश्न था — ‘आ गए।’

उन्होंने मेरे अगमन का उन्हें पहले ही समाचार मिल गया था। वे किसकी शिष्या थीं, क्यों उस निर्जन से लगते बन जाती की सीमा पर नियास कर रही थीं — इसको कुछ तो मैं स्वयं विशेष रूप में समझ नहीं पाया हूं और जितान जान पाया उसे नी बताने में असमर्थ हूं लेकिन उनके आमा गंडल से प्रमाणित हो मैं संचास के नियमों के विपरीत एक सप्ताह से अधिक उनके सामीप्य में यदि कहूं, कि रुक्ने को बाध्य हो गया तो कोई अत्युक्ति न होगी। इस एक सप्ताह में उनके साथ साधानात्मक ज्ञान के विषय में कोई चर्चा न हुई। बस अध्यात्म के विषयों पर ही वार्तालाप होता था जिसमें मैं कुछ देर परश्वात् मूँह होने को बाध्य हो जाता था। ज्ञान—चर्चा करने के लिए अथवा ज्ञान सामंजी प्रश्न पूछने के लिए भी एक स्तर का होना आवश्यक होता है, जिसका अमाव मैंने उनके ही साक्रिय में रहकर अनुमति किया। अतः मैंने एक दिन आगे प्रस्थान करने का निश्चय ले उन्हें नूरित करना चाहा। प्रत्युत्तर में उनके घेरे पर करुणा और विता का गिला—जुला भाव तैर गया।

‘कहाँ जाएगा? कैसे रहेगा? क्यों जा रहा है?’ जैसे



अनेक प्रश्नों का कोई मैं स्वयं कोई समुचित उत्तर नहीं जानता था, अतः उन्हें क्या उत्तर देता? बस एक सुनी—सुनाई परिमाण रगता जोगी बहता पानी कह कर टालने की बेटा की। यो मुझे भी उनका साक्रिय छोड़ने की इच्छा नहीं थी, किंतु उन पर अनावश्यक बोझ समझ कर मन में खेद होता था। प्रसंगदश कहना चाहूँगा, कि मुझे उनके सामीप्य में रहते हुए कभी ज्ञात ही न हो सका था, कि उनके दैनिक जीवन की आवश्यकताएं कैसे पूरी होती हैं?

मेरे उत्तर से उनका कलेश और भी बढ़ गया। उन्होंने मुझसे पूछा, कि क्या मेरे गुरु ने मुझे यही सिखाया है? किंतु तब तक तो मैं गुरुदेव के साक्रिय में आया ही नहीं था, अतः मैंने उन्हें सहज रूप से बता दिया, कि मेरे कोई गुरु है ही नहीं। मेरा उत्तर सुन वे पता नहीं किस विचार-विभाषा में तीन हो गई और मुझे रुकने को कह घर (जिसमें घर के नाम पर बस दो कोठरियां ही थीं) के भीतरी कमरे में बली

गई। दिवस के मध्यान्ह से सायकाल हुआ और सायकाल के पश्चात रात्रि की भी क्षण आ गए। मैं घबराया, कि लगता है आज अगी और रुकना होगा। मैं जाना चाहता था, किंतु कुछ तो उनके प्रति सम्मानवश और कुछ एक विचित्र से सम्मोहन में आबद्ध हो मैं जाना तो दूर बांधा दैवा ही रहा।

रात्रि का प्रथम प्रहर बीता और सहस्रा वे कक्ष से बाहर आई। नंदिता मां के बेहरे पर उस समय वात्सल्य के स्थान पर एक विचित्र सी दृढ़ता दिखाई दे रही थी। यह बात और है, कि उस दृढ़ता में भी उनकी आत्मीयता छुप नहीं पा रही थी। बिना कुछ बोले, उन्होंने मुझे अपने पीछे आने का संकेत किया और घर से निकल उस और बढ़ गई जहाँ से बढ़ानों का अवरोध पार करते हुए पहाड़ी की ओटी की ओर एक पगड़ंडी जाती थी। मैं मंत्रबद्ध सा उनका अनुसरण करता जा रहा था। उनसे प्रश्न पूछने का मेरा साहस ही नहीं था।

पहाड़ी पर बढ़ते—चढ़ते अचानक वे एक स्थान पर रुकी, कुछ विचित्र से परीक्षण किए और सहस्रा संतुष्ट हो इस

यह तो अज्ञपूर्णा की ही  
बाधाद् तांत्रोक्ता बाधिता है  
पूर्ण प्रामाणिक, विशिष्टा और  
शीघ्रादिशीघ्र फल देने में सक्षम।

यात्रा में प्रथम बार बोली — “... उधर बैठ जा।” मैंने भी वैसा ही किया। मुझसे कुछ अलग हट कर वे एक ऊंची सी चहान पर बैठ गई और वही से मुझे निर्देश दे कर, कि मैं अपने स्थान से न उड़ूं मेरी ओर पीठ करके मन्त्र जप में लीन हो गई। माह कदाचित् कृष्ण पक्ष चल रहा था। अतः उन सुनसान बन-प्रांतर में हाथ को हाथ नहीं दिखाइ देने वाली स्थिति थी, किंतु पता नहीं क्यों जहाँ नदिता मां बैठी थीं, उस स्थान पर प्रकाश की हल्की सी आमा झलक रही थीं। मैं बार-बार आखेर बद कर, खोल कर समझने का प्रयास कर रहा था, कि क्या यह प्रकाश इस चहान की विशेषता है अथवा नदिता मां के शेष केष इस अधिकार में विरोधाभास उत्पन्न कर प्रकाश का अभास दे रहे हैं? किंतु कुछ समझ में आ नहीं रहा था। केवल 17-18 वर्ष की ही तो आयु थी मेरी उस समय। न तो जगत् का व्यावहारिक अनुभव था और साधना के क्षेत्र में तो पूर्णतया अनभिज्ञ ही था। मैं नदिता मां के क्रिया-कलापों को किंवित् कौतूहल से देखता जा रहा था और सब कहूं तो उस गहन अधिकार में जहाँ अनंक कीड़े-मकोड़े बार-बार काट कर शरीर में जलन उत्पन्न कर दे रहे थे, मैं मन ही मन खीझता भी जा रहा था। अपने को कोस रहा था, कि क्यों नहीं बिना बताए निकल पड़ा? इसी झुंगलाहट में मुझे तन्ना आ गई थी, कि सहसा एक हल्की सी धम्प की ध्वनि के साथ जो मेरे नेत्र खुले तो मैं सामने का दृश्य देख कर स्तब्ध रह गया। मैंने अपने को चिकोटी काट कर निश्चित करना चाहा, कि जो कुछ मैं देख रहा हूं वह सत्य ही है या कोई धिनम हो गया है? मेरे सामने की चहान पर नदिता मां उसी प्रकार से मेरी ओर पीठ किये बैठी थीं, किंतु उनके सामने पता नहीं किसी चहान पर अथवा शून्य में (अधिकार में स्पष्ट नहीं हो पा रहा था) एक विकराल और विशालकाय स्त्री उपस्थित थीं।

बासाव में वह केवल अपने लिंग से ही स्त्री कही जा सकती थी अन्यथा उसमें स्त्रीत्व जैसा तो कुछ था ही नहीं...

अत्यंत विशालकाय और घोर काली उस स्त्री का उदर प्रदेश आवश्यकता से कहीं अधिक विस्तृत था एक प्रकार से कहूं तो उसके शरीर में केवल उदर ही उदर परिलक्षित हो रहा था। अपने उत्तर क्षास्थलों और कटि प्रदेश को उसने छाल जैसे आवरण से ढक रखा था तथा हाथ, पाव, गले और जहाँ-जहाँ संभव हो सकता था, उसने कौड़ियों की माला से अपने शरीर को संभवतः स्थयं के विचार से तो सुसज्जित किया था किंतु अन्ततोन्त्रा वह उसकी वीमत्सरा बढ़ाने में ही सहायक सिद्ध हो रहा था। पता नहीं माये पर लिपटे सिंदूर के कारण अथवा उसके शरीर से निकलती आमा के कारण नदिता मां की झुग्ग शेष आमा में एक लालिमा-घुल मिल गई

थी। उसके स्वरूप से भी अधिक जो भयकर था वह था उसका श्वास-प्रश्वास लेने का डंग।

नथुनों से श्वास-प्रश्वास लेने के स्थान पर वह विवित्र प्रकार से बार-बार अपने मुह को खोलती और फूट ५५ की घटनि कर पता नहीं श्वास लेती या जुगुप्सा उत्पन्न करने की कोई क्रिया करती जा रही थी। मेरा मन उसकी इस क्रिया को देख जुगुप्सा से भी अधिक भय से भरा जा रहा था। मैं समझ नहीं पा रहा था, कि नंदिता मां ने मुझे किसे वीभत्स घटना को देखने के लिए आज की रात्रि में रोक लिया है? उस अज्ञात स्त्री के कपोल, जो स्थूलता से लटक गए थे, उसकी इस फुफकार से हिल-हिल कर विवित्र सा रोमांच उत्पन्न कर रहे थे। मैंने कब यह दृश्य देखते-देखते अपने नेत्र बंद कर लिए, मुझे रद्द थी पता नहीं चला। मेरा मन तो यद्यपि आसन से उठ कर भाग जाने का अथवा घीखेने का कर रहा था, किंतु मेरी याणी के साथ-साथ मेरे पग भी स्तम्भित हो गए थे...

कुछ देर बाद जब एक प्रकार से कहूं बैतना लौटी तो सामने न कोई स्त्री थी और न नदिता मां स्थिर। मैं विवित्र से खेद से भर गया और नदिता मां पर क्रोध आने लगा, कि वे मुझे किस स्थिति में छोड़ कर चली गई हैं। न तो मुझे याप्स जाने का मार्ग पता था और न उस गहन अधिकार में ऐसा कर पाना मेरे लिए सम्भव था। प्रातः होते ही अनुमान से मार्ग ढूँढ़ मैं नदिता मां के स्थान तक पहुंचा। मन में सोचा था, कि उन्हें खीरी-खीटी सुनाकर अपनी राह हो लूँगा, लेकिन उनके समीप पहुंच उनकी बही निश्चल स्मित देख गैं सब बुँध भूल, एक बालक बन गया। नदिता मां ऐसे बैठी थीं जैसे कल रात की किसी भी घटना का उन्हे ज्ञान ही नहीं है!

कुछ क्षणों के बाद प्रकृतिस्थ होने पर मैंने अपनी नाराजगी से उन्हें अवगत भी करा दिया, किंतु पता नहीं क्यों मेरे मन का क्रोध तब तक दूर भी हो गया था। नेरी बातों की दीर्घ पूर्वक सुनने के बाद ये उठी और धीरे गमीर चाल से भीतर जाकर एक पोटली लेकर लौटी। मुझे वह पोटली उन्होंने धमाकर कहा “जहाँ जाना है जा! लेकिन यह लेता जा, आगे भी काम आएगी।”

मैंने पोटली को खोल कर देखा तो उसमें ताम्र पत्र पर अकेल एक यन्त्र, एक विवित्र-आभा से युक्त गुटिका और ऐसे मनकों की माल थीं, जिसको भी मैंने पहल कभी नहीं देखा था। मैं प्रश्नवाचक मुद्रा से उनकी ओर देखने लग गया। नदिता मां की बही पुरानी मुद्रा लौट आई थी और वे धीरे-धीरे मेरे सिर पर रमेह से हाथ फेरती हुई युग्मीर स्वर में बोलने लगी — “न तो संन्यास बुझ है न गृहस्थ जीवन। न संन्यास श्रेष्ठ है न गृहस्थ जीवन। तो जहाँ मन हो जा लेकिन इस तरह से तो न भटक। इस तरह से तो तू न इधर का रहेगा न लधर का...”

मैं किर भी उनका आशय समझने में असमर्थ था अतः पुग उसी मूक भाष से उनकी ओर निहारने लग गया। ऐसा लग रहा था, कि नदिता मां कुछ बताना भी चाह रही है और

हृष्ण जो आत्मर किष्ट्य का पोषण करने के लिए जिन शाश्वती देवी के रूप में, जिवा शाश्वती देवी के रूप में, जब वह साध्य है, फिर उनकी साध्यक का ज्ञातिक जीवन अपूर्ण रह सके?

जूँ जियाना भी चाह रही है। उनके मन में कोई दृढ़ घल रहा था। उन्होंने मन ही मन कुछ निश्चित कर ये निर्णयिक रवर में बोलीं “यह यह है और यह गुटिका है। हर एक माह के हृष्ण ज्ञ की चतुर्थी को इसे अपने सामने लाल दस्त्र पर रख दूँगी जाला से ग्यारह गाला मंत्र जप करते रहना। गृहस्थ में वह या सन्ध्यास में लेकिन इस तरह पराश्रित होना पुरुष को छोड़ नहीं देता।” उनके स्वर में दृढ़ता उत्तर आई थी और जैसे उठाने मेरे जाने का अपना निर्णय सुना दिया था। बात जो कहकर ये धर की भीतर जाने लगी फिर सहरा जैसे कुछ बद आया और लौट कर उन्होंने मुझे एक विशेष मंत्र भी बता दिया। मैंने साहस करके मूँछना चाहा। लेकिन माँ! मैं काक किशर? यह भी तो बताती जाइए। प्रत्युत्तर में ये हल्का लहसी और गूँठ रवर में खोली “जिशर के लम्पक्ष प्रबल होंगे ज्ञ वे ही चीज़ लेंगे। तू क्यों लोचता है मैं?”

नदिता माँ की बात असत्य नहीं थी! वास्तव में ऐसा लहस हुआ कि मैं संयोगवश ही पूज्य गुरुदेव के सम्पर्क में आ जाना और फिर वह तो एक अलग ही गाथा है। पूज्यपाद गुरुदेव से ही मुझे जात हो सका, कि वास्तव में उस दिन नदिता माँ ने किसी करुणा के वशीभूत होकर मुझे न केवल शाकम्भरी देवी के ताणात दर्शन करवाए थे वरन् वह साधना विधि भी उपलब्ध करवा दी थी, जो शाकम्भरी देवी की सर्वार्थिक प्रामाणिक साधना विधि है। मैंने स्वयं इस बात का पग—पग पर अनुमत किया है। बाद में तो मैंने अनेक साधनाओं के आयामों को स्पष्ट किया, किन्तु जीतिक जीवन को संवारने में जितना अधिक प्रगादशाली शाकम्भरी

— क्या नदिता माँ वास्तव में सिद्धाश्रम संस्पर्शित कोई विशिष्ट योगिनी हैं?

— क्या भगवती शाकम्भरी का वही मूल रूप है, जो मैंने उनके साधय में अनुभूत किया?

— क्या देवता अथवा देवी साधक की मनोगावनाओं के अनकूल और किन्हीं गुदा वित्तों के वशीभूत हो कर अपना कोई एक विशिष्ट स्वरूप ही साधक के समक्ष प्रस्तुत करते हैं? तो फिर उनका मूल स्वरूप क्या होता है . . . ?

ऐसे ही अनेक प्रश्न आज भी मेरे मानस में अनुत्तरित हैं जिन्हें प्राप्त करने की वेष्टा में मेरा आध्यात्मिक जीवन अत्यंत आनंद के साथ संलग्न है।

## साधना विधि

पूज्यपाद गुरुदेव ने शाकम्भरी साधना के विवेचन में स्पष्ट किया है, कि वस्तुतः यह संतुलित जीवन की साधना है और संतुलित, जीवन जिन चौदह बिंदुओं से गठित होता है वे हैं — सुविट लग्न दोग दृहि द्वे, पूर्ण आयु, मन में आनंद, सफल गृहम् जीवन, सुख व मनोहारिणी पत्नी, उद्धति को अद्वाट पुत्र-प्रियं, शत्रु व्यहत जीवन, दात्य लम्भान, आर्द्धक दृष्टि से पूर्णता, मध्यालं की ओट लंघि, तीर्थ यात्रा एवं पदोपलक्षण जैसे ऐसे कर्त्यों में व्यवहार करने की प्रतीता, वृद्धावस्था एवं निदाकट्य, जीवन में गुण व इष्ट से माधुकाट, वृत्तु के उपर्यांत सद्वाति व भोग प्राप्ति।

पूज्यपाद गुरुदेव के संशोधन के अनुसार (जो पूर्ण प्रामाणिक है) यह साधना 27.11.98 को सम्पन्न करें। यह साधना न केवल किसी भी माह की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी वरन् कृष्ण पक्ष के किसी भी मंगलवार अथवा शुक्रवार को भी सम्पन्न की जा सकती है।

इस साधना में वस्त्र, दिशा का कोई बंधन नहीं है न ही किसी अन्य धूप दीप आदि उपकरण की, किंतु साधक के पास इस साधना की आधारभूत

# चम्पकारिक बजरंग बाण

बजरंग लली श्री हनुमान की कृपा से सभी जन कभी न कभी अतुष्टित होते ही हैं। श्री हनुमान अपने भक्त पर, अपने साधक पर जितनी सरलता से कृपा दृष्टिकरते हैं, उतनी ही सरल है उनकी साधना विधि भी। कोई भी साधक सिर्फ हनुमान पाठ कर ले अथवा यदि थोड़ा ज्यादा कठिनाई का समय आए, तो बजरंग बाण का नियमानुसार पाठ करें, तो शीघ्र ही समस्या का समाधान प्राप्त होने लगता है।

## य

दि बजरंग बाण का नियमानुसार जप किया जाए और अद्वैतिक बजरंग लली की उपासना की जाए, तो मन को शांति तो प्राप्त होती होती है, दृढ़ इच्छा शक्ति भी अप्रत्याशित गति से बढ़ती है, और दृढ़ इच्छा शक्ति से कठिनतम् कार्य भी आसान हो जाते हैं, यह मेरा अटल विश्वास है, क्योंकि इसमें मैंने अनेक लोगों को लाभ प्राप्त करते देखा है।

सर्वप्रथम बजरंग बाण की विधि व सम्बन्धित जप प्रस्तुत है तथा इसके बाद बजरंग बाण दिया जा रहा है।

## विधि

अपने पूना कक्ष में हनुमान जी की मूर्ति अथवा चित्ररथ्ये फिर स्नान के बाद चंदन, पुष्प, धूप अग्रवती, निवेद आदि से पूजन करें, इसके बाद श्री हनुमान जी को श्रद्धा पूर्वक प्राप्ताम करते हुए निम्न स्तुति करें—

अतुस्ति वस्त्राम हैम शैलाम देहं ।  
दनुजवन् कृशालु इतिवामत्रजण्यम् ॥  
सकल तुष दिव्यालं वादरण्मधीरू ।  
रघुपति दिव मर्त्तं वरत जातं नमामि ॥

इसके बाद उपर्युक्त बजरंग बाण का प्रथम पूर्वक पाठ करें प्रतिदिन एक ही बार पाठ करना पर्याप्त है, आप मैं जितनी अधिक श्रद्धा डोगी, उतनी ही जल्दी लाभ भी नहर आयेगा।



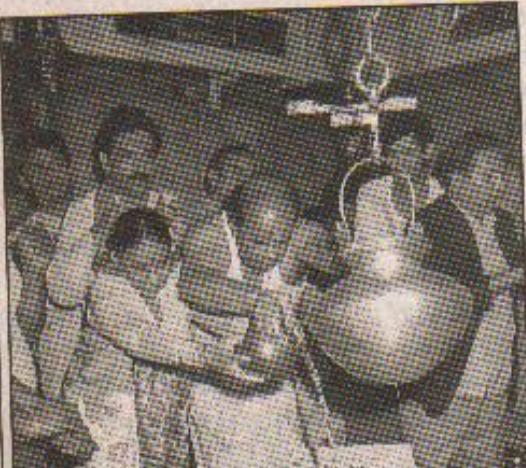
मेरा अनुग्रह तो यह कहता है, कि तीन दिनों पश्चात ही ऐसा लगने लगता है, मार्गों अन्तर्मन में अद्भुत शक्ति का सञ्चार होने लगता है। दृढ़ इच्छा शक्ति बढ़ने लगती है।

दसवें न्यारहवें दिन से भय, शोक जैसी मन, स्थितियां समाप्त होने लगती हैं, मन सेवा भाव और आनन्दतिरक से उल्लभित रहने लगता है।

अद्वा पूर्वक विश्वास के साथ कोई भी व्यक्ति इसे आपने उपयोग में ला सकता है। अन्त में एक आत और स्पष्ट कर देना चाहता है, स्त्रियों भी इसका प्रयोग कर सकती हैं, केवल रजस्वला काल में और सूतक काल में उनके लिए यह वर्जित है।

विश्व व्रेम प्रतीति ते विनद करै सद्गमान । तेहिके कारज सकल सुम सिद्ध करै हनुमान ॥  
 नद हनुगना सबत हितफारी । सुर समृह समरथ भट्टानार ॥ ताकी सपश विलंब लावी ॥  
 हुड़ी लीजो प्रभु विनय हमारी ॥ हणु हणु हणुमंत हठीले । जय जय जय धुनि होत अकारा ॥  
 नद के कान विलम्ब न कीजो । वैरिहि भाल बज की कीले ॥ सुगिरत होय दुसह दुखा जासा ॥  
 जातार दौरि महा सखा दीजो । ही ही ही इति सत्ता कारीजा ॥ गगां पारहि न

# असुरों की लड़ाई



असुरों और देवताओं ने अपने परस्पर विरोध छोड़कर मन्दरा पर्वत को वासुकि नाग में लेपटकर मंथन किया और जैसे जैसे मंथन होता गया तो इसमें से तीव्र ज्वाला युक्त विष का प्रादुर्भाव हुआ। इसके फलस्वरूप असुर व देव भयभीत होकर भागने लगे, मंथन रुक गया। इस हलाहल विष से समस्त जीवों को आकुल देख कर भगवान शिव ने इसे अपने कण्ठ में धारण कर लिया। तदुपरान्त पुनः मंथन प्रारम्भ हुआ और धनवन्तरी अमृत कुम्भ लेकर समुद्र से प्रगट हुए।

असुरों और देवों में अमृत घट को पाने के लिए युद्ध प्रारम्भ हुआ और जब देवताओं को लगा, कि वे हार रहे हैं तो इन्द्र के पुत्र जयन्त ने अपने आपको एक अश्व में परिवर्तित कर लिया और अमृत कुम्भ लेकर असुरों से बचते-बचाते पृथ्वी और स्वर्ग का चक्कर लगाने लगा। इस अविद्या में जयन्त ने



**परम पूज्य गुरुदेव ने अपने सांसारिक जीवन में अनेकों स्थानों की यात्रा कर साधनात्मक शितार्थों का आयोजन किया, और अपने दिव्य प्रवचनों से वहाँ के वायुमण्डल को ब्रह्म उर्जा से चैतन्य किया और वहाँ की भूमि को अमृतमय बना दिया, क्योंकि गुरुदेव तो स्वयं ही अमृत घट थे, बल्कि अमृत के समूद्र थे। आगे वाले समय में ये स्थान पावन तीर्थ बनेंगे, जहाँ के रजा-कर्ण मस्तक पर धारण करने में लोग अपने को धन्य अनुभव करेंगे।**

और अमृत प्राप्ति ही जीवन को सुख और दुःख से परे निवाश की स्थिति में ले जाती है।

लेकिन हर व्यक्ति अपने जीवन में मंथन कैसे करे? वह जीवन के क्षम में जो जिस प्रकार से विश्रुत रहा है उसे परे भ्रात्य से देखे और उसके मूल कारणों को समझे, अपने मस्तिष्क को वास्तविक रूप से और मनोवैज्ञानिक रूप से अलग अलग रखकर जीवन की घटनाओं को समझने का प्रयास करे। यदि कोई व्यक्ति आपको अपशब्द बोलता है, तो वह एक दैविक क्रिया है, अपरे क्रिया है, इससे क्रोध, पीड़ा और जो उद्ग्रे उत्पन्न होता है – वह आपमें जो 'मैं' है, उसपर मनोवैज्ञानिक प्रभाव है। और यदि हम उस 'मैं' को हटा देते हैं तो जीवन में एक अनिरिक्त ऊर्जा आ जाती है और भौतिक रूप में स्थित नकारात्मक स्कावर्टें, क्रोधप्रेरित भावनाएं शान्त हो जाती हैं। जीवन में जो अमृत घट का द्वार खुलता है, वह नकारात्मक विचारों को तो हटाता ही है, साथ ही घनीभूत ऊर्जाओं के स्रोत को जागृत कर देता है।

जब तक मन में चैतन्य रूप से तनाव है, तो वह चेतन रूप में विष को और ऊपर उठा देता है। इससे परे हट कर जब कोई अपने मन में विष को धारण करने की स्थिति बना लेता है,

तो वह शिव स्वरूप बन जाता है। जीवन में यदि विष को ब्रह्म करने की क्षमता आ जाएँ, तो अमृत भी प्राप्त हो सकेगा और अमृत के साथ-साथ अन्य उपहार भी स्वतः प्राप्त हो सकेगे।

पूज्य सदगुरुदेव का सांसारिक जीवन भी क्या था, हर स्थिति में कष्ट ही कष्ट तो थे और इस कष्ट रूपी विष को धारण किए हुए भी के शान्त थे और उनके पास अमृत घट था, इस अमृत घट की अपने हाथों में लिए उन्होंने कहाँ-कहाँ की यात्रा नहीं की, उन्होंने अपने इस लघु सांसारिक जीवन में छरिवार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक के अलावा भोपाल, चण्डीगढ़, हैदराबाद, बम्बई, अहमदाबाद, वाराणसी, बैंगलोर, नेपाल, पानीपत, इलाहाबाद, लखनऊ, दिल्ली, कोटा, बोकारो, वैधनाथ धाम, भिलाई, मारिशस जैसी जगहों पर तो यात्राएं कर अमृत घट में से कुछ बून्दे हर स्थान पर बरसाई हैं। इसके अलावा उन्होंने छोटे-छोटे स्थानों पर भी चढ़े वह बैतूल हो, शिवरी नाशयण हो, अथवा पुणे, वारी, कलसाड, नवसारी, डाकोर, राजकोट, झंदीर, विदिशा, बिजनौर, सहारनपुर, अम्बाला, देहरादून, होशियारपुर, मनाली, पण्डोह, सुन्दरनगर, विलासपूर, शिमला, कलकत्ता, रांची,

लेता है और यहीं सो जीवन की पूर्णता की स्थिति में आकर से

जीवन का सब भी तल

... वृुलदेव तो हृषि क्षण ही 'भीट' करने को आत्मर रहते हैं अपने शिष्य से, शिष्य में मिलने वाली चेटाना हो या न हो, लेकिन अद्वितीय आनन्द छलक उठता है वृुल-शिष्य के मध्य जब शिष्य समझने में सक्षम हो जाता है कि वे तो बड़े 'गव्या' (गव्यीर) हैं। स्वामी अनुश्रूतानन्द जी द्वादश लिखित धारावाहिन्द उपन्यासिका 'अष्टद वर्ण' से हंस हमारा, वही नवीं कड़ी वृुल के इसी स्वरूप के वर्णन की एक चेष्टा है ...

## ॥कर्मिता गुरु गव्या मिल्या ॥

आनन्द की पराकाष्ठा ही थी और आनन्द के इस आधिकाय के कारण मैं स्ववेतना विस्मृत कर दैठा था। कभी मुझको लगता कि मेरे अन्तः स्थल से एक ज्योति (जो किंवित अग्निवर्ण थी) निकल कर मेरे समझ आरीन उसी दिव्य गूर्ति में विलीन हो रही थी तो अगले ही क्षण लगता, कि उस दिव्य गूर्ति में से कोई निर्मल प्रकाश निकलकर मेरे अन्तः स्थल में समाहित हो रहा है।

वह गुरुदेव का ही वैतन्य स्वरूप था, वह तो मुझे कह वही बाद ज्ञात हो जाका मैं तो उसको आत्म स्वरूप ही मानझाता था मैं गलत भी नहीं था यह अत्य है कि व्यक्ति का आत्म स्वरूप 'अंगुच्छ प्रभाण' ही होता है अर्थात् जिसे डाक नश्वर देह में 'जीवित' कहा जा सकता है, वह ज्योति या प्राण अवधा आत्म केरल एक सूक्ष्म ज्योति भट्ट ही होती है, किन्तु उसका गतिशील स्वरूप गुरु गूर्ति होती है। वही गुरुगूर्ति ही तो 'अंगुच्छ प्रभाण' स्वरूप लेकर प्रत्येक जीव में समाहित होती है। दीक्षा एवं शिष्यत के पालन के हृदय उसी गूर्ति के ही तो जाग्रत करना होता है। कोई भी साधक किटी भी व्यक्ति से बिज्ज नहीं है। अन्नट है तो केरल इसी जाग्रति का 'आत्म ज्ञान' से यही गुरुत्व जागत हो जाता है।

संस्कृत के एक सुभाषित में वर्णित किया गया है, कि एक योगी की वास्तविक मा, पिता, बन्धु-बान्धव आदि गुरु होते हैं तथा विभिन्न गुणों अथवा स्थितियों को ही

## को

तूहल से मैं चीखने—चीखने को ही हो गया था, किन्तु किसी दूढ़ मर्यादा के बन्धनों में बद्ध होकर मैं वैरा न कर सका। मैं अपने नेत्रों पर विश्वास नहीं कर पा रहा था। तर्क व्यर्थ होते जाते रहे थे और मेरे ऊपर वही दृश्य हावी होता चला जा रहा था। मैं उस दृश्य में एवं स्वयं में कोई भेद ही नहीं कर पा रहा था। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मैं प्रकृति के भाल पर बने किसी विशाल वर्पण में स्वयं को ही निहार रहा हूँ और इसी प्रकार निहारते निहारते कव्य में आत्ममुख सा होकर समरत वातावरण को विस्मृत कर दैठा, मुझे इसका ज्ञान नहीं हो सका।

यह विस्मृति अत्यन्त आहलादायक थी। मुझे इस विस्मृति में ऐसा नहीं लग रहा था कि मेरा कुछ विलीन हो रहा है, वरन् समस्त प्रकृति ही मुझे अपने आप में समाहित होती अनुभव हो रही थी। समस्त प्रकृति मेरा अग बन गयी थी और भेद था तो केवल स्वरूप का। आनन्दरिक रूप से कोई भी भेद नहीं लग रहा था। वह

उसका सगा—सम्बन्धी बताया गया है। मुझे उसी अनुसार अनुभव हो रहा था। मैं अपने आप में तृप्त एवं सन्तुष्ट था। मुझे प्रतीत हो रहा था कि मुझे जो कुछ जानना था, मैंने जान लिया है। मुझे जो कुछ प्राप्त करना था वह मैंने प्राप्त कर लिया है। मैं व्यक्त नहीं कर सकता था कि इन्हुंने अनुभव कर रहा था और इन्हीं क्रमों के मध्य मित्रा जी की समाधि भंग हुई। हम दोनों ने दृष्टि के मिलने साथ ही साथ संवाद भी सम्पन्न हो गया।

— “तुमने कुछ अनुभव किया?”

— उनकी मूरुङ दृष्टि मुझ से प्रश्न पूछ रही थी।

— “मैंने सब कुछ अनुभव कर लिया है।”

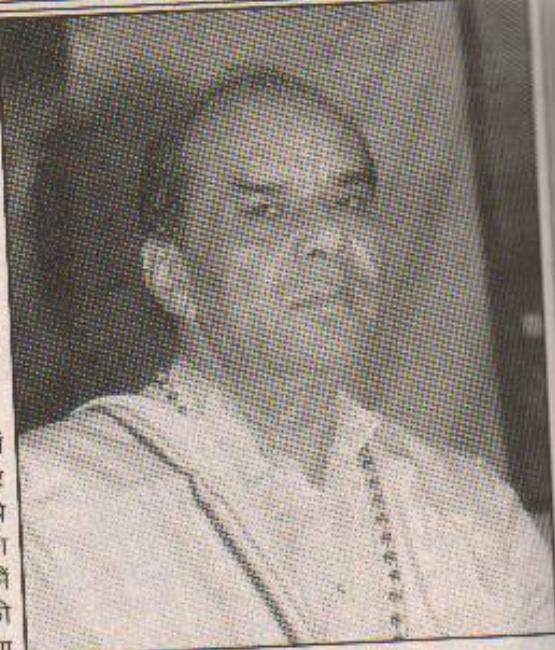
— मेरी मूरुङ दृष्टि में कृतज्ञता भरी हुई थी।

चित्त की एक दशा ऐसी भी आती है जब वही उसके पटल पर प्रश्न उमसरो हैं और तत्काल वही उत्तर भी उमर आता है। मेरे चित्त में कई प्रश्न शेष रह गए थे जो बार-बार अन्तर्मन के किसी अज्ञात पद्म पर उमर आ रहे थे, फिर भी मुझे आश्वस्त नहीं हो पा रही थी। मैं प्रत्येक उत्तर प्राप्त होते ही दृष्टि उता कर मित्रा जी की ओर देखता और मूरुङ दृष्टि से ही पूछना चाहता कि क्या मैं वही समझ रहा हूँ जो यास्तविकता है।

कुछ प्रश्नों में वे भी अपनी सहनति दृष्टिपात के माध्यम से प्रदान करते, तो कहीं वे भी उलझ जाते। सत्य का अन्तिम छोर कौन जान सका है? फिर भी हम अपने आधे—अधूरे ज्ञान से ही जो कुछ निर्मित करने का प्रयास करते हैं वही साधक जीवन का आनन्द है। अपने—अपने संस्मरणों को सुनाने में यदा—कदा जो नवीन ज्ञान का विद्यु छलक उठता है वही तो आहलाद का भोती होता है— जिसे साधक तत्काण हस की भाति घुण कर लेता है। जो प्रश्न शेष रह जाते वे भी आनन्द की विषय वस्तु होते हैं, क्योंकि उनकी खोज में एक नयी यात्रा का सूत्रपात जो होता है।

अध्यात्म क्य मार्ग इड़ी काटपथ की प्रवीन नहीं है लकड़ा है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति उस सत्य का कितना ही दहल्योदापान करें न कर दे, वह फिर भी शेष रह मैं जात है। इड़ी ‘शेष’ को प्राप्त करने में लौटै नवीन यात्रा क्य मूल्यपात होता रहता है। और जीवन की गति बनी रहती है।

रात्रि का कितना काल शेष रह गया है, इस बात का कोई ज्ञान नहीं था, न ही यह जानने की आतुरता ही। फिर तो वही जीवन है ही, किन्तु ये अमृतमय धड़ियां सुलभ हो पाएँगी, इसकी कोई भी आश्वस्त नहीं। वह पवित्र शिला साधना काल रामाया हो जाने के बाद इस प्रकार की हो गयी थी ज्यों सूर्य दिन भर अग्निवशी करने के उपरान्त अपने अस्तकाल में केवल शान्त ही होता है,



निस्तेज नहीं। शिला का प्रकाश में अवश्य हो गया था, पर उसकी प्रखरता में कोई भी कमी नहीं आयी थी। मेरा विचार है, कि उस मत्र जप से शिला का विशेष सम्बन्ध था जो मित्रा जी ने सम्पन्न किया था। मैं अपने शरीर में एक विचित्र प्रकार का प्रवाह अतिरिक्त रूप से अनुभव कर रहा था। यह प्रवाह मेरे अन्दर संचरित उत्साह की तरणों से भिन्न था। वर्षों तक साधनाओं में निमग्न रहने के कारण एवं प्रकृति की विरोधी परिस्थितियों को सहते रहने के कारण मुझमें जो जर्जरता और कदुता आ गयी थी वह समाप्त होती लग रही थी। मन में कुछ ऐसा उमड़ रहा था जो मुझे दिनभ्र एवं समर्पित बनाता जा रहा था।

समर्पण कोई ऐसी धारणा या वस्तु नहीं होती जो हमारे उच्चरित करते ही शून्य से उत्पन्न हो जाए। मन में जब प्राप्ति का सुख होता है, वह भरा—भरा सा अनुभव करता है तभी वह फल भरी ठहनियों की तरह झुक जाता है। रिक्तता से समर्पण नहीं आता, प्रचुरता से आता है, और यह प्रचुरता देने की बात केवल गुरुदेव ही जानते हैं।

किसका अन्तर्मन किस प्रकार से तृप्त होगा, यह सूक्ष्म में उनके अतिरिक्त जान में कौन सकता है? कोई भोग से सन्तुष्ट होता है तो कोई योग भी। किसी को आहलाद की अनुभूति यश प्राप्त करके होती है तो किसी को अपनी भावनाएं निर्विदित करके। यही कारण है कि गुरु की दृष्टि में भौतिक एवं अद्यात्मिक जगत में भेद की रेखा अत्यन्त क्षीण ही होती है।

जब दो सहोदर व्यक्तियों की रुचियों में अन्तर होता है, तो इस विशाल जगत में सन्तुष्टि एवं तृप्ति के किन्तु अधिक भेद होंगे, इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है। केवल उदर सम्बन्धी एवं यीन राम्बन्धी सन्तुष्टियाँ ही व्यक्ति के जीवन में प्रधान नहीं होतीं। ये तो भोग के जल्दन स्थूल रूप हैं।

भावनाओं का छांटाएँ आत्मिक व्यापक है जिनका जल सम्बन्धित व्यक्ति को भी नहीं होता। यही हमारी 'अज्ञान मृगि' का रहस्य है।

पूर्व जन्मकृत एवं इह जन्मकृत संरक्षणों का जो जल हमारे प्रारब्ध के साथ बुना होता है और जिसने अनेक नहाने गुणियाँ पढ़ी होती हैं उसे सुलझाना किसी प्रश्ना-पुरुष जी कमता की विषय वस्तु ही हो सकती है। इसी कारणवश सदगुरु की दृष्टि में न तो कोई हेय है न पतित।

यथार्थ चिकित्सक को रोगी से पृथग् नहीं होती बत्तन चिन्ता होती है, कि कैसे वह शीघ्र से शीघ्र अपने स्वास्थ्य स्थापित रोगी को शाति का, विश्रांति का अनुभव करा दे। यही सदगुरु व गुरु में भेद है। यही परीक्षण का एक उपाय है। जिस दिन सदगुरु को भी थेव दृष्टिगोचर होने लग गया उस दिन से इस जगत में केवल पशुवत जीवन यापन ही शेष रह जाएगा। व्यक्ति अपने कर्मों में जावद्ध आता है और तदनुसार फल भोग करता ही है। यदि यही जीवन का क्रम है तो इसमें गुरु की आवश्यकता ही क्या? वह सदगुरु क्षेत्र आद्या का एक आधार ही नहीं होता वरन् वह उपाय होता है जो जीवन के कर्म जाल के उत्तम कट टक्का है।

मेरे मन में विचारों की अटूट शृंखला प्रारम्भ हो गयी थी। मुझे स्वयं से ही कोई नवीन परिचय होता जनुभव हो रहा था। मेरे मन में पहले तो कभी ऐसी विचार शृंखला नहीं प्रारन्न हुई थी — यह बात मैं अनुभव कर रहा था। यद्यपि मेरे हाथ—पाय नहीं कापे थे, मुझे किसी जो रदार जटके की भी अनुगृहीत नहीं हुई थी, लेकिन मुझे लग रहा था, कि मुझे गुरुदेव ने किसी न किसी रूप में दीक्षित किया ही है। मन में सार्वथा नवीन सचरण भी क्या किसी दीक्षा का प्रमाण नहीं है? दीक्षा के तो अनेक प्रकार कहे गए हैं।

कई वर्षों बाद जब मैं विकट बाबा के सम्पर्क में आया तब जान टाक्का, कि विद्या प्रकाश ले उस दिन गुणदेव ने ही मित्रा जी की देह का आश्रय लेकर मुझे आत्मज्ञान दीक्षा दी थी। यद्यपि आज तो मित्रा जी की देह शांत हो चुकी है और इस बात की सत्यता को मैं उनसे ही जानने में असमर्थ हूँ, किन्तु इस बात पर विश्वास करता हूँ। मेरे लिए कुछ घण्टों में जगत का रवरूप बदल चुका था। मैं अब केवल द्रष्टा मात्र ही नहीं वरन् प्रकृति का एक अंग

बन चुका था। मेरे रोम-रोम में नर्तन हो रहा था और समस्त शरीर मेरे चिरा की ही भाँति सूक्ष्म होकर नृत्यरत हो गया था। जीवन क्षण से आया है और मृत्यु के बाद क्या होगा? — ये दो प्रश्न प्रत्येक व्यक्ति को पीड़ा देते ही रहते हैं। क्या योगी और क्या भोगी दोनों ही इन प्रश्नों से आक्रान्त रहते हैं, किन्तु मुझे इन प्रश्नों के उत्तर कुछ ही समय में स्वयं मिल गए थे। भगवतपाद आद्य शंकराचार्य ने अपने ग्रन्थ विवेक बृहामणि में इस रिथति का अत्यंत सुन्दर निरूपण किया है —

जब गत कृत वां नीतं कृत लीत मिदं जगत।

अथृनव शरा दृष्टं तास्ति किं महदद्भुतम्॥

अर्थात् 'वह सासार कहां बला गया? उसे कौन ले गया? वह कहां लीन हो गया? अहो! कितना आश्चर्य है कि जिस संसार को मैं अभी तक देख रहा था वह कहीं नहीं दिखाई देता।'

व्यक्ति को व्यष्टित करने वाले प्रश्नों को केवल इसी प्रकार विलीन होकर समझा जा सकता है। योग की पराकाशा विरक्ति में नहीं अपितु राब कुछ आत्मसात कर लेने में ही तो है। योग के माध्यम से व्यक्ति एक और सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होते हुए उस पीड़ादायक 'आहं' से सदैव के लिए मुक्ति प्राप्त कर लेता है जो उसे कभी स्थिर रहने ही नहीं देता। मन की वंचलता का गूल यही अह ही तो है, तो दूसरी ओर वह विराट की अनुभूति भी करके वह जान लेता है कि वही (साधक) इस विश्व का निर्धारक है। संकल्प उसी से उद्भूत होकर संरचना कर रहे हैं।

... किंचित् अस्पद सी प्रतीत होती ये बातें ही आत्म ज्ञान की मनोदशा का कुछ-कुछ परिचय दे सकती है। उस रिथति को आज तक कोई भी यथार्थतः वर्णित नहीं कर सका है। भगवतपाद आद्य शंकराचार्य जैसे उत्कृष्टि के व्यक्तित्व एवं आत्मदर्शी उस रहस्य को जब चब घ्वास्य निज घृणौर् अर्थात् चन्द्रमा का प्रकाश जैसे केवल अपने ही नेत्रों का विषय होता है, कह कर मौन हो गए हैं फिर क्षुद्र साधकों की गणना ही कहा? यह तो प्रयास होता है प्रत्येक साधक का कि वह आपने दंग से कुछ व्यक्त करना चाहता है, क्योंकि 'आनन्द' का धर्म ही है व्यक्त हो जाना। आनन्द आत्मलीनता की रिथति नहीं होती।

(क्रमशः)

# स्नाधक साक्षी हैं

## गुरु मंत्र छिल्या मंत्र हैं

हमारे परिवार में कई समस्याएं थीं और चारों ओर से बच कर हमने गुरु मंत्र का जप करने का संकल्प किया। सबसे पहले गुरुदेव के बिम्बात्मक दर्शन मेरे छोटे भाई की पत्नी को हुए। उसको गर्भवती हुए चर-पांच महीने हो गए थे, परन्तु उसको कुछ महसूस नहीं होता था, लेकिन जिस दिन गुरु मंत्र का जप प्रारम्भ किया, उसी दिन शत्रि में उसे गुरुजी के संन्यासी स्वरूप में दर्शन हुए। उसके तुरन्त बाद ही गर्भ में पल रहे शिशु में चेतना आई और उसे महसूस हुआ, कि मेरे पेट में बच्चा है।

गुरुदेव। परिवार के हम सभी लोगों ने अपना जीवन आपके चरणों में समर्पित कर दिया है।

— अंबरलाल सीताराम सोनी, सीधी कट्टा, सुजानगढ़, चूल।

## आकस्मिक महालक्ष्मी यंत्र से दूर होना सप्तलता मिली

बारामती नगर परिषद् प्रेसिडेण्ट के इलेक्शन चल रहे थे, हमारा भाई इलेक्शन में प्रेसिडेण्ट की पोस्ट के लिए चुनाव लड़ रहे थे। विरोध में थे और उम्मीदवार खड़े थे। तभी की. पी. पी. द्वारा 'आकस्मिक धनप्राप्ति महालक्ष्मी यंत्र' प्राप्त हुआ और मैंने भाई को यंत्र का वर्णन करवाया।

हमारे दिन ७.२.२८ को चुनाव होने वाला था, कि उच्चानक शोपहर के समय हमारे दोनों विरोधी उम्मीदवारों ने अपनी-अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली और मेरे भाई बिना विरोध कही बारामती नगर परिषद् के प्रेसिडेण्ट बन गए। यह सब कुछ परम पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद स्वरूप उस महालक्ष्मी यंत्र से ही हुआ है।

— संजय मोतीलाल शहा, मु. पो. बारामती, पूर्ण।

## गुरु कृपा से बालक चलने लगा

मेरी लड़की का आठ महीने का शिशु आठ मिट्टी की ऊंचाई से आंगन के फर्श पर गिर पड़ा। बालक गिरा ही था,

कि मेरी लड़की के मुंह से निकला — 'गुरुदेव बचाओ, तुम्हारा ही दिया हुआ पाई है।' तब तक मेरी पत्नी बच्चे को उठा उठा की थी, बच्चा जरा सा भी रोया नहीं। बच्चे को तुरन्त अस्पताल में ले जाकर दिखाया, तो डॉक्टर ने कहा, कि लड़का तो पकड़ रहा है, इसे तो कुछ हुआ ही नहीं है।

जिरने से पहले जहां लड़का दोनों हाथ नमीन पर रखकर चल नहीं पाता था, वहीं जिरने के बाद से ही चलने लगा।

— भाई लाल हरिन, शाहपुर, जीनपुर।

## बगलामुखी दीक्षा से सप्तलता प्राप्त की

बैतूल शिविर में आपसे गुरु दीक्षा प्राप्त करने का दीमाण्य प्राप्त हुआ। वहीं पर हम दोनों पति-पत्नी ने 'बगलामुखी दीक्षा' भी प्राप्त की। शिविर के बाद जैसे ही मैं घर वापस आया, तो मुझे प्रमोशन के लिए इंटरव्यू कॉल प्राप्त हुआ, जिसे मैंने आपको सूचित किया, बाव में आपका आशीर्वाद युक्त पत्र भी प्राप्त हुआ। आपके आशीर्वाद से ही मेरा प्रमोशन हो गया है। मुझ पर आपकी ऐसी ही कृपा बनो रहे।

— देवेन्द्र सिंह पुषरीज, नागपुर।

## गुरु वचन पूर्ण होते हैं

आपसे दीक्षा प्राप्त करने के बाद मैंने कई साधनाओं को सम्पन्न किया, लेकिन उनसे मुझे कोई अनुभूति नहीं हुई। परन्तु चण्डीगढ़ गुरु गुरीमा शिविर में आपने कहा — 'जो जिस कामना से यहां आया है, उसकी मनोकामना पूर्ण होगी।' घर जाकर मुझे स्वप्न आया, कि पूजनीय माता जा मेरे घर आई, उनके आगे एक लड़की है, माताजी कहती है, इसका नाम शीतल है। उसी समय मेरी नींद खुलती है और मैं देखता हूं कि मेरी मां मेरी पत्नी को अप्पानान ले जाने की तैयारी कर रही है। डॉक्टरों ने कहा, कि डिलेक्टरी के समय खुल की आवश्यकता पड़ेगी; इस से मैं भयभीत हो गया था और मन ही मन गुरु मंत्र का जप करता रहा। घोड़ी देह में मां ने आकर बताया, कि मां एवं बच्ची सकुशल हैं। मैं समझ गया था चण्डीगढ़ में दिए गुरु वचन एवं माताजी के स्वप्न में दर्शन से आज मैं कृतार्थ हो गया हूं।

— विजय गर्भ, आर.एम.फ्स. कार्यालय, कट्टनी।



## १० वर्ष पूर्व स्वोई नौकरी प्राप्त की

'ब्रैंसल-९६' में आपके द्वारा मैजा गया 'मारुति स्टोर' जल्द हुआ, जिसे मंगलवार रात्रि ८,०० बजे से आरम्भ करने का निर्णय था, साथ ही इसके पूर्व राम रक्षा स्टोर का जप भी करने का निर्णय था। जिस हाल में मुझसे बना, मैंने वह प्रयोग सम्पन्न किया और १० वर्ष पहले की खोई नौकरी को पूर्ण गुरुद्वेष के अशोकन द्वारा इस स्टोर के प्रभाव से पुनः पाया। बाद में मैंने कार्यालय से 'कल्याचल्य यंत्र' मंगाया और उसके प्रभाव से भी संतुष्ट हूं।

- मोहनशाह वडोवा, न्यू डी.आर.पी. लाइन,  
नेहरू नगर, घोपाल।

## पत्रिका का मिलना ही भाव्योदय है

मेरे बड़े भाई बुक स्टोर पर 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका देख कर स्वरीद लाए, पत्रिका पर भगवती बगलामुखी का चित्र था। मेरे पिताजी ने उसे पढ़ा और अनुमति किया, कि वह पत्रिका निश्चय ही सोना है और पढ़कर मेरी माता जी को भी सुनाया, बस उसी दिन से हमारे घर में मंत्र-तंत्र, मूठ आदि जो बाधाएँ थीं, वे जाग्रत हो गई और मेरी माताजी को माध्यम बनाकर उपदेव करने लगीं। हमें एहतास हुआ, कि जब मात्र पत्रिका को बढ़ने से ये सभी बाधाएँ घटकर उपदेव करने लगती हैं, तो उसमें लिखे मंत्र यथे साधनाएँ कितने प्रभावशाली होंगे? हमारे परिवार में खुशी की पक लहर दौड़ गई।

लेकिन तब से शायद हमारी परीक्षा शुरू हो गई थी। तंत्र बाधा ने नित्य नए तरीके से हमें परेशान करना शुरू कर दिया। हमीं बीच गुरुद्वेष से फोटो द्वारा दीक्षा भी प्राप्त की। दीक्षा लेने के बाद स्थिति में सुधार तो हुआ नगर हर दो दिन के बाद छोटी सी बात पर ही झगड़ा हो जाता था। तंत्र बाधा जब भी उपदेव करती, तो गुरु मंत्र का जप करने से जल्दी ही नियंत्रित हो जाती थी।

एक दिन फिर माताजी को माध्यम बनाकर हमें परेशान किया और बोली, कि तुम यह सब फेंक दो, ये हमें अच्छा नहीं लगता। हमारे इंकार करने पर माताजी ने उग्रता विरुद्ध। इस बार हम योद्धे घबरा गए, लेकिन तभी ऐसा लक्षण, कि कोई आवेदन दे रहा है, कि तुम इस पर बगलामुखी प्रयोग करो। फिर मैंने पीली धोती धारण कर पत्रिका में लिखी विधि के अनुसार प्रयोग किया। अभी करव्यास पूरा ही किया था, कि मेरी मों जो निर्जीव सी पड़ी थी उठ कर बैठ गई और मेरी ओर मुँह कर बोली— 'तेरे गुरुदेव नेरा कुछ नहीं थिगाइ लेंगे।' उसकी तरफ ध्यान न देकर, मैं आपने कार्य में लगा रहा। मैंने मंत्र जप आरम्भ करने के लिए माला उठाई ही थी, कि माताजी सामने आकर बैठ गई और

जलते हुए दीपक को हाथ में लेकर बोली— 'मुला उपने गुह को।' किन्तु मैंने मंत्र जप आरम्भ कर दिया, थोड़ा ही जप हुआ था, कि माताजी ने दीपक स्वतः ही नीचे सख्त विद्या और दूसरे ही क्षण वे तीन मुट दूर निर्याई, ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उठा कर फेंक दिया हो। मैंने अपना मंत्र जप पूरा किया, उस दिन के बाद से हमें तंत्र बाधा से मुक्ति मिल गई और अन्य भी समस्याओं पर विजय प्राप्त होती जा रही है। सब गुरु-कृपा का ही फल है।

— राजेश चौहान, प्लाट नं.४६२, नूतन नगर,  
महुआ, भावनगर (गुजरात)

## कार्यसिद्धि प्रयोग सफल हुआ

 दिनांक १२.३.९८ को शाम चार बजे अम्बिकापुर में तथा ओलावृष्टि व अंधड तूफान आया, जिसने गिले की समस्त फसलें और पेड़-पौधे समाप्त हो गए। उसी समय मैंने याद किया, 'प्रशु द्वारा फसल की रक्षा करें' मैं अनवरत रूप से गुरु मंत्र जप करता रहा और पत्रिका में विए 'कालचक्र' रन्धन के अन्तर्गत दिए गए 'कार्यसिद्धि प्रयोग' को समझ किया। आश्चर्य है, कि इतने भयंकर आंधी व ओलावृष्टि से भी मेरा घर व फसलें पूरी तरह सुरक्षित थीं।

— लाल बडावुर तिवारी, द्वारडीह, अम्बिकापुर, सरगन्या।

## गुरु मंत्र का चमत्कार

'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका पढ़ कर अपनी सारी समस्याएँ जोधपुर शुक्रधाम लिख भेजीं। उत्तर में गुरु मंत्र—'ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः' का जप करने का आवेदन प्राप्त हुआ। मैं विद्यिपूर्वक तो गुरु मंत्र का जप नहीं कर सका, परन्तु यह मंत्र मेरे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। जब भी कपी विकट स्थिति होती, तो मैं मन ही मन जप करने लग जाता, जिससे मुझे काफी तसल्ली मिलती।

२५ जनवरी १८ के दिन मैंने अपनी पत्नी को सिर दर्द से बेचैन पाया। घर में रखी दबाई भी थी, लेकिन दर्द घटने की बजाय बढ़ता ही गया, कि बेवैषी से अपना सिर को चौकी के पावे पर पटकने लगी। यह देखकर मुझे न जाने कहाँ से प्रेरणा मिली, कि गुरु मंत्र से पत्नी के सिर पर २०-२३ बार जप शुरू कर दिया। इसका गाढ़ सा असर हुआ, वह तुरन्त प्रसंजीवित होकर उठ बैठी तथा अपने धरेन्हू काम में लग गई। गुरुदेव ये प्रार्थना है, कि अपनी कृपावृष्टि बनाए रखें।

— मनोहर पासवान, मोरडीहा, गोदावरी।

# रामा

## सामाया

सावधान, पातक तथा सर्वेजन सामान्य के लिए समय के बे सभी रूप यहाँ प्रस्तुत हैं जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उत्तमता या अवनति के कारण होते हैं तथा जिन्हें जान कर आप सभी अपने लिए उत्तमते का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय को तीन रूपों में प्रस्तुत किया गया है — श्रेष्ठ, भवयम और निकृष्ट। अब समय जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य को, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत ३५.५% आपके माय में अंकित हो जायेगा।

गढ़ किसी कारणवश आप श्रेष्ठ समय का उपयोग नहीं कर सकें, तो मध्यम समय का उपयोग कर सकते हैं और इस प्रतिशत ३५.५% आपके माय में अंकित हो जायेगा। गढ़ किसी कारणवश आप श्रेष्ठ समय का उपयोग नहीं कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत ३५.५% आपके माय में अंकित हो जायेगा।

गढ़ किसी कारणवश आप श्रेष्ठ समय का उपयोग नहीं कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत ३५.५% आपके माय में अंकित हो जायेगा।

वह भी निकृष्ट समय में हो जाय, तो वह बिगड़ जाता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति जो चाहिए, कि निकृष्ट समय में किसी भी प्रकार के कार्य का प्रारम्भ न करे। यहाँ पर यह बात ध्यान रखने योग्य है, कि यदि आपने कोई कार्य श्रेष्ठ अथवा मध्यम समय में प्रारम्भ किया है और उसके समाप्तन का समय निकृष्ट माय से प्राप्तित हो, तो उन में संशय का भाव नहीं लाना चाहिए, किन्तु यदि आपने दीक्षा ले रखी है, तो सदैव गुरु नंब्र का जप करें। यदि नहीं तो रखी है, तो इष्ट-स्मरण कर कार्य की पूर्तता करें। ध्यान दें — इस महं मैं दिनांक १ से ६ सिताम्बर तक अग्रस्त अंक में प्रकाशित राशी हीं लगू होगी।

दार/दिनांक	श्रेष्ठ समय	मध्यम समय	निकृष्ट समय
रविवार (13, 20, 27 सितम्बर)	ब्रह्ममुहूर्त ४.२४ से ६.०० तक प्रातः ७.३६ से १०.०० तक दोपहर १२.२४ से २.४८ तक सायं ४.२४ से ४.३० तक सायं ७.३६ से ९.१२ तक रात्रि ११.३६ से २.०० तक	प्रातः १०.०० से १२.२४ तक दोपहर २.४८ से ४.२४ तक रात्रि ९.१२ से ११.३६ तक रात्रि ३.३६ से ब्रह्ममुहूर्त ४.२४ तक	प्रातः ६.०० से ७.३६ तक सायं ४.३० से ७.३६ तक रात्रि २.०० से ३.३६ तक
सोमवार (७, १४, २१, २८ सितम्बर)	प्रातः ६.०० से १०.४८ तक दोपहर १.१२ से सायं ६.०० तक सायं ८.२४ से ११.३६ तक रात्रि २.०० से ३.३६ तक	ब्रह्ममुहूर्त ४.२४ से ६.०० तक सायं ६.०० से ८.२४ तक रात्रि ११.३६ से २.०० तक	प्रातः १०.४८ से १.१२ तक रात्रि ३.३६ से ४.२४ तक
मंगलवार (८, १५, २२, २९ सितम्बर)	प्रातः ६.०० से ७.३६ तक प्रातः १०.०० से १०.४८ तक दोपहर १२.२४ से २.४८ तक सायं ८.२४ से ११.३६ तक रात्रि २.०० से ३.३६ तक	ब्रह्ममुहूर्त ४.२४ से ६.०० तक प्रातः ७.३६ से १०.०० तक सायं ५.१२ से ८.२४ तक रात्रि ११.३६ से २.०० तक	प्रातः १०.४८ से १२.२४ तक दोपहर २.४८ से ५.१२ तक रात्रि ३.३६ से ४.२४ तक
बुधवार (९, १६, २३, ३० सितम्बर)	प्रातः ६.४८ से ११.३६ तक सायं ६.४८ से १०.४८ तक रात्रि २.०० से ४.२४ तक	ब्रह्ममुहूर्त ४.२४ से ६.०० तक प्रातः ११.३६ से १२.०० तक सायं ५.१२ से ६.०० तक रात्रि १०.४८ से २.०० तक	प्रातः ६.०० से ६.४८ तक दोपहर १२.०० से ५.१२ तक सायं ६.०० से ६.४८ तक
गुरुवार (१०, १७, २४ सितम्बर)	प्रातः ६.०० से ६.४८ तक प्रातः १०.४८ से १२.२४ तक दोपहर ३.०० से ६.०० तक रात्रि १०.०० से १२.२४ तक	प्रातः ५.१२ से ६.०० तक प्रातः ८.२४ से १०.४८ तक दोपहर १.१२ से १.३० तक सायं ७.३६ से ९.१२ तक रात्रि १२.२४ से २.४८ तक रात्रि ३.३६ से प्रातः ६.०० तक	ब्रह्ममुहूर्त ४.२४ से ५.१२ तक प्रातः ५.४८ से ८.२४ तक दोपहर १२.२४ से १.१२ तक दोपहर १.३० से ३.०० तक सायं ६.०० से ७.३६ तक रात्रि ९.१२ से १०.०० तक रात्रि २.४८ से ३.३६ तक
शुक्रवार (११, १८, २५ सितम्बर)	प्रातः ९.१२ से १०.३० तक दोपहर १२.०० से १२.२४ तक दोपहर २.०० से ६.०० तक सायं ८.२४ से १०.४८ तक रात्रि १.१२ से २.०० तक	प्रातः ६.०० से ९.१२ तक दोपहर १२.२४ से २.०० तक सायं ६.०० से ७.३६ तक रात्रि २.४८ से ६.०० तक	प्रातः १०.३० से १२.०० तक सायं ७.३६ से ८.२४ तक रात्रि १०.४८ से १.१२ तक रात्रि २.०० से २.४८ तक
शनिवार (१२, १९, २६ सितम्बर)	प्रातः १०.४८ से २.०० तक सायं ५.१२ से ६.०० तक सायं ८.२४ से १०.४८ तक रात्रि १२.२४ से २.४८ तक	प्रातः ७.३६ से ९.०० तक दोपहर २.४८ से ४.२४ तक सायं ६.४८ से ८.२४ तक रात्रि १०.४८ से १२.२४ तक रात्रि २.४८ से ४.२४ तक	प्रातः ६.०० से ७.३६ तक प्रातः ९.०० से १०.४८ तक दोपहर २.०० से २.४८ तक सायं ४.२४ से ५.१२ तक सायं ६.०० से ६.४८ तक

# की बात माँ बैटों से

मेरे प्रिय देटी,

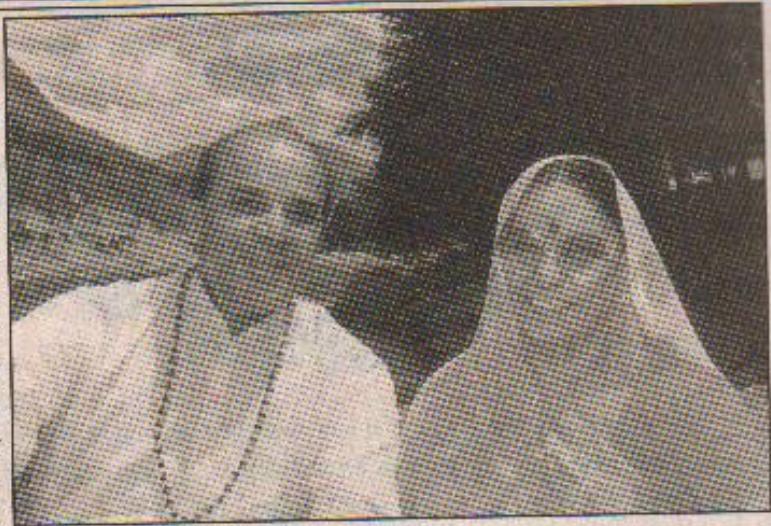
आज जीवन में जिस विकाद की घड़ी में तुम हैं लिम रही हूं, वह घड़ी किसी के जीवन में न आए। तुमने तुरु रूप में जिन्हें धारण किया था, तुमने जिन्हें अपने प्राणी से प्रिय माना था, जिनकी छन छड़कन में अपने शिष्यों के लिए ही कुछ आवाज थी, हर क्षण शिष्यों के लिए कुछ करने का ही जिरजतम प्रयास था, वे स्वयं ही आज ब्रह्मलीला ही नहे।

मेरे हृक्य की पीड़ा को छोल समझ सकता है? मैंने उनके साहसर्य में जीवन के इन्द्रियवन वर्ष बिलाए और उन सभी वर्षों में ऐसा कीर्ति पर्य, त्योहार, उत्सव नहीं था, जिसमें उन्होंने अपने शिष्य रूपी बैटों को नहीं दुलाया। वे सर्वेव कहते थे, कि “मैंना परिवार बहुत बड़ा है, जबकि मैंने साथ शिष्य-शिष्याएं नहीं हैं, तब तक मैं साली-साली अनुभव करता हूं। मैंने अपने शिष्यों की लाल डाटा है, तो बहुत उन्हें प्यार भी किया है। कठीनता के साथ व्यवहार किया है, तो उन्हें कुछ सिखाने का प्रयास भी किया है, जिससे कि वे जीवन में कुछ बल सकें। मैं नहं या न रह, मेरे शिष्य ही मेरे ज्ञान दीप हैं।”

दै सर्वेव कहते थे, कि “रोगवनत, अस्थाय उन दूर्लिंगों के महाने का जीवन में नहीं जिक्रमा, मैं जीवन भर अपने स्वाधिमान के लाय, जिस सुरक्षा के समूह समन्वय वाल अपने जगते साथ दिया हूं। और जिस दिन मुझे इस केवल सी शिकायत दी गई, विस दिन मैंने इसे भूल कर पूरा समझाया बहुत ही ना, उस दिन मैं यह कहे त्याग कूमा। डाजनिक से मैं अपने जगत के लिए बहुत अधिक विद्युत ले ला दिया, जब भी शिष्यों के सागरी सड़ा ही कूमा, तो पूरा बड़ा चौस्थ दो साथ कड़ा रहना।” वह गवर्नर आज बार जान आव आते हैं, कि किस प्रकार मन से बूँजाते थे, किसी भी प्रणीत करके साथकी की शिष्यों की जाओ और वीक्षा कीजिए थे। वह स्वरूप तो निराला ही था। मैं कभी हार वाले प्रष्ठाएं था, विजे मापकी मध्यस्थिती है, और पूरा नहीं तो आथा अधिकान तो मैरा है ही। वे भी मुस्कना कर रहे हैं, “हाँ आथा अधिकार तुम हैं, मैं भी आथा अधिकार मेरे शिष्यों का है, मैंना स्वयं का कुछ नहीं हूं, मैं जाकर तो एक फल के छाँटी देता रखता त्याज कूमा।” कितना प्यार करते थे वे तुम सब शिष्यों को...

आज तुम्हें तो उनकी कमी खल नहीं है तो मुझे भी कितनी आधिक कभी महसूस ही नहीं होगी, लैकिन पिछले एक महीने से मैंने जी अनुभव दिया वह मैंने लिए बड़ा ही सांचगा परक था, एक भी शिष्य जै ऐसा नहीं कहा, कि हमारा नाता केवल तुरुजी से ही था और अब तुरुजी ब्रह्मलीला ही नहै है, तो हम अपने छन को जाने हैं। जीद्युपुर में, बिल्ली में कार्यरत जीवनकानी शिष्यों में से प्रत्येक जै यही कहा, कि माताजी आपके दुःख की हम कह तो नहीं कर सकती, लैकिन आप का दुःख बांटडौ का प्रयास अवश्य कर सकते हैं। हम सेवा का जी आव, संकल्प लैकर आए है, उससे डगमगाएंगी नहीं। आज तुरुजी ने हमें बालक से मुगा बना किया है, इतना ही नहीं पूरे आदत वर्ष से और विदेशी से शिष्य आकर मुझसे मिले और कहा कि “मातेश्वरी! तुम तुरु स्वरूप हो, हमें जी भी आदेश दें, उसे हम पूरा करेंगे।”

काल की  
अविनल बहती थाना में  
तुम्हारे जीवन के पल  
अपनी जगि सौ  
मतिमाल हैं, इन क्षणों  
में जो अवतरात  
आया है, उसी क्षण के  
लिए मैं कुछ कहना  
बाहरी हूँ। तुकजी तौ  
अपने जीवन में कई  
महान कार्य कर दिए  
और कई महान कार्य  
करने के उनके विचार  
हैं, विद्यार्थी का प्रवाह ही



विद्यारथ चलता ही रहता था। आगे बढ़े दिनों में हमें कुछ विशेष कार्य करने हैं और उसके लिए आदेशकर्ता हैं  
संयम और धैर्य के साथ शर्ति की। शर्ति स्वयं में एक प्रवाह हीती है और विनी भी प्रवाह की सार्थकता उसकी  
विशिष्टता स्पष्ट हीती है, तो वह केवल संक्षण के काल में अथव संक्षण की अवस्था में ही ही स्वरी है।

तुकजी का कोई भी संकेत व्यर्थ नहीं था, वे जानते थे कि आगे बढ़े दिनों में वया निधिति बढ़ेगी,  
इसीलिए उड़होंने नवरात्रि पर्व 'आरोव्य धार' भी किए और 'शर्ति स्थल' स्वरूप बन गया है, मैं सम्पूर्ण  
करने का निश्चय किया था।

जिस प्रकार से सूर्य उक्ति हीने पर पुष्प रखता है वह अवगुंठन की निधिति की त्याक प्रस्फुटन, प्रमुखन  
की अवस्था में आ जाता है, उसी प्रकार से शर्ति तत्कालीन निधिति हीने पर जीवन का पुष्प भी प्रस्फुटन की  
अवस्था में आ जाता है। जब जीवन में शर्ति तत्कालीन निधिति हीना है तभी सीढ़दर्थ में एक आभा का समावेश  
होता है, तभी सुधार सुवर्धन की आति विनारित हीने की स्थिति भी समावृत आ जाती है और तभी आद्यात्मिक  
श्रेष्ठता की स्थितियां निर्भर होती हैं। जीवन के प्रत्यक्ष उद्देश्य का समिपूर्ण होना, सर्वतुलित और विकसित होना  
ही बारतव में विद्या की स्थिति होती है।

केवल सर्वतुलित जीवन की अवस्था हाउडिकाय प्रकार प्रतीत होता है। असर्वतुलित जीवन ही  
विकार बनता, विषाद बनता होता है और असरती जलवायन की 'रक्षा ऐसे जय जैसे यशो देहि छिकी जहि'  
प्रार्थना रुपों का यही धारणा है यही रक्षा, विषाद, विद्या जैसे तरीके समझ के विषय स्वरूप, लिंगल हीकन  
आद्यात्मिकता की आवश्यक योग्यता नहीं रहता है।

जीवन के इस संक्षण काल में मुझे तुमसे कुछ बते कहाँ हैं, मुझे अपने मानस पुत्रों से मिलना है  
और जीवन की श्रीतिक एवं आद्यात्मिक नवूनता की नमापन करने के लिए अनेकती जगद्गम्य की आनादग्नि  
करनी है। दिनांक २९-२२-२३ भृष्मन की सर्व मिथिप्रदा नवरात्रि शिवि, आरोव्य धाम विल्ली में  
तुम्हारी उपनिधि आवश्यक है।

सगाज या राष्ट्र इवादा लिखते हैं कि यह नाम जगत की विभिन्न हीतों स्वरूप वित्त, सम्पूर्ण व  
श्रेत्रव्याप्ति व्यापित्वों से, साधकों से। अमा क्षमा का बाबू, दीनदीनजर देह पक्ष, प्रयोक्त दृष्टि से परिपूर्ण  
ही सहै और एक सामज्जन्य युत जीवन का इस द्वारा पर प्राप्तुर्भव ही सहै, इसी सहैता व आशीर्वद के साथ  
इन कोर्नी नवरात्रि शिविरों में तुम सब का पुनः पुनः आहोग है।

— तुम्हारी माता अगवती

# विराट शक्ति का संगुम्फान है

## नवार्ण मंत्र



व शुक्ल प्रतिपदा से नवरात्रि प्रारम्भ होती है और नवार्ण हुओं की साधना में नवार्ण मंत्र का विशेष महत्व है। नवार्ण मंत्र के बारे में तो अधिकतर लोगों को जान है, परन्तु उसकी साधना और प्रयोग के बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है।

जागे के पृष्ठों में, मैं सर्वमन्द साधना प्रयोग दे रहा हूँ, जो कि किसी भी भाष्यक के लिए अनुकूल है।

विद्वानों ने कहा है, कि याहे व्यक्ति शिव ज्ञानक हो या विष्णु उपानक, वह चाहे किमी या धर्म का मानने वाला हो, नवार्ण साधना तो उसके जीवन की उत्तरति के लिए अनुकूल एवं सुखदायक है ही, उसके नवर्ण उत्तरति नव अद्वार अपने आप में विराट शक्ति पुज्जन लिये गुण हैं। इस गुण में प्रथमेक अद्वार की साधना ही हुई है। इसने विस्तार में फिलहाल जीवों को जन्मरत्नहीं है, परन्तु गुप्त चामुण्डा तंत्र में बताया गया है, कि नवार्ण मंत्र से नव अक्षरों की सिद्ध करने पर नीं लाभ तुरन्त अनुग्रह किये जा सकते हैं।

गुप्त चामुण्डा तंत्र के अनुसार नवार्ण मंत्र के ये अक्षर या नीं बीज तथा उनसे सम्बन्धित फल प्राप्ति इन प्रकार से हैं—

१. एं

यह बीज नवार्ण मंत्र का पहला और सर्वस्वती बीज है, इसको सिद्ध करने पर स्मरण शक्ति तीव्र होती है, यदि ब्रात्तक इस साधना को या इस बीज का उच्चारण करे तो, निश्चय ही वह परीक्षा में सफलता प्राप्त करता है, सिर दर्द, माझेन, आधा शीशी आदि विकार और बीमारियां इस बीज के निरन्तर उच्चारण करने से ठीक हो जाती हैं, यहीं बीज अच्छा बना बनने में, वाणी के द्वारा लोगों को प्रभावित करने में पूर्ण रूप से समर्थ है।

२. हं

२. हं

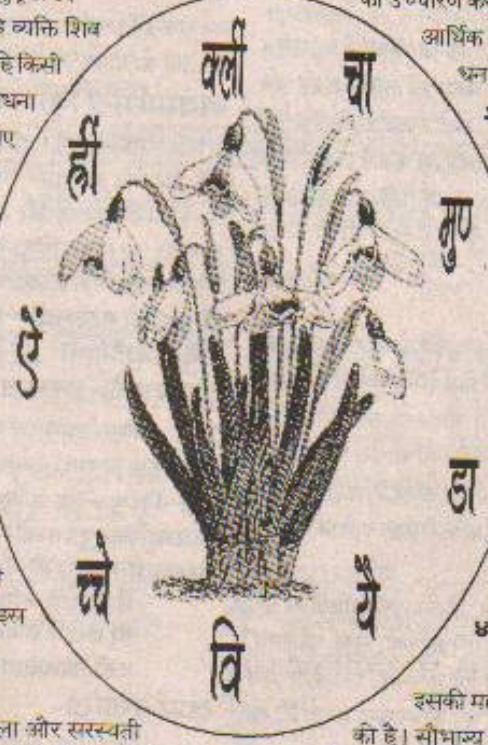
यह लक्ष्मी बीज है, जो कि सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित है। इस बीज की साधना करने से या इसका मंत्र जप करने से दरिद्रता दूर होती है, निरन्तर आर्थिक उत्तरति होने लगती है और अर्थ सम्बन्धी रूपे द्वारा काम त्रैक हो जाते हैं। जो व्यापक निरन्तर केवल इसी बीज का उच्चारण करना है, उसका व्यापार बढ़ने लगता है, आर्थिक स्रोत मनवृत्त होने हैं और अनायास धन प्राप्ति के विशेष अवसर बन जाते हैं।

३. वर्ली

यह काली बीज है, शत्रुओं का संहार करने, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने, मुकुलमें में सफलता प्राप्त करने और मन के विकारों, काम, क्रोध, लोभ, मोह, आदि पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए यह महत्वपूर्ण बीज है। जो इस बीज का उच्चारण कर कोट्ट कवर्णों में जाना है, तो उस दिन उसके मनुकूल बाताचरण बना रहता है। काली के प्रसन्न करने और उसके प्रत्यक्ष दर्शन करने के लिए यह अपने आप में सिद्ध बीज है।

४. चा

यह सौमान्य बीज है और इसकी महना शासनों ने एक स्वर से स्वीकार की है। सौभाज्य की रक्षा, पति की उत्तरति, पति के स्वास्थ्य और पति की पूर्ण आयु के लिए यह अपने आप में अद्वितीय बीज है। इसी प्रकार यदि पत्नी बीमार हो या उसे किसी प्रकार की तकलीक हो, तो इस अद्वार का निरन्तर जप करने से वा पत्नी को इस बीज मंत्र से सिद्ध करके नल पिलाने से उसके स्वास्थ्य में आश्वर्यनक अनुकूलता आने लगती है, गृहस्थ जीवन की सफलता के लिए यह बीज मंत्र ज्यादा उपयोगी है।



#### ५. मुं

यह आत्म मंत्र है, आत्म की उन्नति, कुण्डलिनी जागरण, जीवन की पूर्णता और अन्त में ब्रह्म से पूर्ण साक्षात्कार के लिए यह मंत्र सर्वाधिक उपयुक्त एवं अद्वितीय है। उच्चकोटि के संन्यासी निरन्तर इस मंत्र का जप करते हुए, अपने जीवन को पूर्णता प्रदान करते हैं, जो साधक निरन्तर इस बीज मंत्र का उच्चारण करता रहता है, उसकी कुण्डलिनी शीघ्र ही जाग्रत हो जाती है।

#### ६. डा

यह सन्तान सुख बीज है, और भगवती जगदम्बा का सर्वाधिक प्रिय बीज है, यदि पुत्र उत्पन्न हो रहा हो या सन्तानबाधा हो अथवा किसी प्रकार की पुत्र से सम्बन्धित तकलीफ हो, तो इस बीज मंत्र की विद्धि करने से अमङ्गलता प्राप्त होती है। पुत्र के स्वास्थ्य और उसकी दीर्घायु के लिए भी इसी बीज मंत्र का सहाय लिया जाता है।

#### ७. ई

यह भास्योदय बीज है, और मानव जीवन में इस बीज का सर्वाधिक महत्व है, यदि दुर्मिल साथ नहीं होइ रहा हो, परं पर बाधाएं आ रही हों, कोई काम भली प्रकार से सम्पन्न नहीं हो रहा हो, तो इस मंत्र को विशेष महत्व दिया गया है। जो साधक निरन्तर इस बीज मंत्र का जप करता रहता है, उसका शीघ्र भास्योदय हो जाता है और वह अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है।

#### ८. वि

यह सम्मान, प्रसिद्धि, उच्चता, श्रेष्ठता और सफलता का बीज मंत्र है। किसी प्रकार के पुरस्कार प्राप्त करने, समाज में सम्मान और यश प्राप्त करने, राज्य में उन्नति और सफलता पाने के लिए इस बीज मंत्र का उपयोग किया जाता है। जो साधक निरन्तर इस बीज का प्रयोग करता है या इसकी साधना करता है, वह विश्वय ही राज्य सम्मान एवं राज्य उन्नति प्राप्त करने में सफल हो पाता है।

#### ९. च्छे

यह सम्पूर्णता का बीज है, जीवन सभी दृष्टियों से पूर्ण और सफल हो, चाहे स्वास्थ्य धन, परिवार यश, सुख, सौभाग्य, सन्तान, भास्योदय और सफलता का तत्व हो, इसे बीज राज कहा जाया है। जो साधक इस बीज मंत्र की साधना करता है, वह विश्वय ही अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

#### नवार्ण मंत्र

इस प्रकार प्रत्येक बीज का अध्ययन करने से नवार्ण मंत्र इस प्रकार से बनता है—

*// ई हीं चत्तीं चामुंडार्दौ विञ्चे //*

शास्त्रों में कहा गया है, कि नवार्ण मंत्र का जप करते

समय इसके प्रारम्भ में “ॐ” या प्रणव नहीं लगाना चाहिए। शास्त्रों में कहा गया है—

*ब्रह्म वैव काम स्तितिश्च प्रणवः श्रीश्च कवते ।  
तदवर्यु च मन्त्रेषु प्रणवं द्वेव वरेवर्येत् ॥*

अथात् जिन मंत्रों के प्रारम्भ में १. ईं, २. कलीं, ३. हीं, और ४. श्रीं उधार लगा हो, उन मंत्रों में ३० नहीं लगाना चाहिए। जिस प्रकार से मंत्र दिया गया है, उसी प्रकार से मंत्र जप करना चाहिए।

नवार्ण मंत्र की सिद्धि हेतु नीचिं में सबा लाख मंत्र का तात्पर्य ३२५० मालाएं मंत्र जप करने से सफलता मिलती है। सबा लाख मंत्र का तात्पर्य ३२५० मालाएं मंत्र जप करने से सबा लाख मंत्र जप हो जाता है।

इस साधना को किसी भी महीने की त्रयोदशी से प्रारम्भ कर अगले नीचिं में यह नवार्ण मंत्र सिद्ध किया जा सकता है। साधना काल में साधक पौली धोती पड़िन, उत्तर की ओर मुँह कर सामने भगवती जगदम्बा वा चित्र स्थापित करें साधना कर सकते हैं। साधना के समय तेल का दीपक लगा रखा चाहिए, वह तेल का दीपक अखण्ड होना चाहिए।

#### नवार्ण मंत्र विनियोग

दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग का उच्चारण करें और जल को सामने रखे हुए पात्र में छोड़ दें—

*ॐ अस्य श्री नवार्ण मन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्र-  
ऋषयः गायत्र्युष्टिण्डनुसुप्तन्दक्षिः, श्री महाकाली-  
महालक्ष्मी-महाद्वादस्त्वत्यो देवताः एं बीज हीं शक्तिः वर्तीं  
कीलकं श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महाद्वादस्त्वती ग्रीत्यर्थे  
जपे विनियोगः ।*

#### ऋष्याद्वि-न्यास

निम्न उच्चारण करते हुए बतावे हुए शरीर के अंगों को दाहिने हाथ से व्यर्षा करना चाहिए—

*ब्रह्म-विष्णु-रुद्र-ऋषयिन्द्रो नमः ।* (विर्यम)

*गायत्र्युष्टिण्डनुसुप्तन्दक्षिः नमः ।* (मुख)

*महाकाली-महालक्ष्मी-महाद्वादस्त्वती-देवताभ्यो नमः ।* (रथ)

ऐं बीजाय नमः । (गङ्गा)

हीं शक्तये नमः । (पात्राः)

वर्तीं कीलकाय नमः । (नामी)

#### कठर न्यास

कठर न्यास करने से साधक स्वयं मंत्र मय बन जाता है, उसके बाहर-शीतर को शक्ति हो जाती है तथा दिव्य बल प्राप्त करने से वह साधना में सफलता प्राप्त कर लेता है।

ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

हीं दजनीभ्यां नमः ।

चामुण्डाये अनामिकाभ्यां नमः ।

विञ्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

हे हीं वर्तीं चामुण्डायै विच्छे - करतल कद पृष्ठाभ्यां नमः ।  
हृदयादि न्यासा

हे	-	हृदयाय नमः ।
हृ	-	शिरसे रुचाहा ।
वर्ती	-	शिखायै वधृ ।
चामुण्डायै	-	कवचाय हुं ।
विच्छे	-	नेत्र-त्रयाय वीधृ ।
हे हीं वर्तीं चामुण्डायै विच्छे -		अस्त्राय फट् ।

### अक्षर न्यासा

हे नमः ।	(रिवाया)	हीं नमः ।	(रक्षित नेत्र)
हर्ती नमः ।	(वाम नेत्र)	चां नमः ।	(दक्षिण कर्ण)
मु नमः ।	(वाम कर्ण)	डां नमः ।	(दक्षिण नासा मुटे)
हे नमः ।	(वक्षण नासा मुटे)	विं नमः ।	(मुख)

स्त्रे नमः । शुभः

### नवार्ण मंत्र ध्यान

'वाग्' दीजं हि दीप-समान-दीपम् ।  
मायो ति-तेजो द्वितीयाक-विम्बम् ।

'कामं' च वै इवानेऽ तुल्य सूपम् ।

प्रतीयमानं तु सुखाय विन्द्यम् ।

'चा' शुद्ध जाम्बू नद तुल्य कान्तिम् ।

'मु' पंचमं दक्ष तद प्रकल्पम् ।

'डां' पष्टमुग्रार्ति हरे सुनीलम् ।

ये सप्तमं कृष्ण तरं दिपुष्टम् ।

'वि' पाष्टुर चाषमादि द्विद्विम् ।

'ये' सप्तमं कृष्ण वर्ण नवमं विश्वालम् ।

एतानि दीजानि नवात्वकर्त्य । अपात् प्रवद्यः

### स्थकलार्थ तिथिम् ।

नवार्ण मंत्र रितिं जीवन की ओछ सिद्धि है, स्थूल रूप से नवार्ण मंत्र का अर्थ है — हे चित न्यूरूपिणी महा लक्ष्मी ! हे आनन्दन्यूपिणी महाकाली महालक्ष्मी ! पूर्णन्व प्रदान करने वाली है महासरस्वती ! ब्रह्म-विद्या प्राप्त करने के लिए हम साधक तुम्हारा ध्यान करते हैं, हे महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी चण्डिके ! आपको नमस्कार है। आप मेरे अन्दर आविष्या लूपी रञ्जु की दृढ़ गोठ को खोल कर मुझे सभी दृष्टियों से पूर्ण मुक्त कर दें।



सिद्धाश्रम की चेतना के कांक्षपर्नित अद्भुत व्रंथ  
एक युग्मपुराष द्वयं योगीद्वयवर की लेखनी के

विश्व की श्रेष्ठ साधनाएँ विश्व की श्रेष्ठ दीक्षाएँ

सताधिक गोपनीय,  
अद्वितीय एवं द्वित्यतम  
साधनाएं जो आज तक गुरुओं  
ने छास प्रकार स्पष्ट रूप से  
प्रदान की ही नहीं . . .

इन साधनाओं को  
सम्पज्ज करना ही जीवन की  
पूर्णता है ।

दीक्षा वह अद्भुत प्रक्रिया  
है, जिसके द्वारा एक कण में  
पत्थर को भी हीरा बनाया जा  
सकता है . . . और राजयोग दीक्षा  
जैसे दीक्षाओं का ज्ञान प्राप्त होना  
तो जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि है

स्वयं परमपूज्या गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त  
श्रीमाली द्वारा रचित अद्वितीय कृतियां जो शीघ्र ही  
सिद्धाश्रम (विल्लो) तथा जोधपुर में उपलब्ध होंगी ।

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराएं ।

ग्रन्थ 40

अष्ट देवी  
सिंहि साधना

# गानें या न गाने

हमने सदैर्य यह प्रयोग किया है, कि आपके समक्ष सदैर्य नवीन साधनाओं और प्रयोगों की प्रस्तुति करें। इस बार मानें न मानें स्तरभ के अन्तर्गत आपके समक्ष तंत्र की तिथिशुद्धि देवियों की साधना प्रस्तुत हैं।

अष्ट देवी सिंहि की साधना तंत्र के तिथिशुद्धि साधनाओं में से एक मानी जाहै है, इनकी साधना को जीवन के प्रत्येक शेत्र में पूर्णता देने में सक्षम है। विश्वामित्र ने इसकी साधना को स्वयं शम्पन्न किया, साथ ही इनसे मन्त्रविद्यत लघु प्रयोग हिए जो किसी भी साधक के लिए अनुकूल सिंहि हो सकते हैं।

अष्ट देवी सिंहि की साधना करने से पूर्ण साधक को चाहिए कि वह स्नानादि से निवृत होकर गुरु पूजन कर गुरु मंत्र का जप कर ले। इसके पश्चात ही किसी भी प्रयोग को आरंभ करें।

## १. शोध कामना पूर्ति प्रयोग

अष्ट देवी सिंहि की प्रथम देवी 'छिलोचना' है, जिनकी साधना सम्पन्न करने पर साधक विविध धन, आमृषण अलंकार, वस्त्र आदि प्राप्त करता है। साधना को सिंहि होने पर साधक की निरन्तर किसी न किसी प्रकार से कामना पूर्ति करती ही रहती है। अष्टसिंहि की प्रथम देवी छिलोचना से सम्बन्धित यह प्रयोग सम्पन्न कर आप अपनी कामना की शीघ्रता से पूर्ण कर सकते हैं मग्नाम हो जायें।

किसी भी दिन स्नानादि से निवृत होकर पीली धोती धारण करके, साधना स्थल पर आटे से अष्टब्दल कम्ल का निर्माण करें। उसके मध्य में कलश जल भर कर स्थापित करें, कलश के ऊपर किसी पात्र में 'छिलोचना गुटिका' स्थापित करें। गुटिका का पूजन कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से करें। निम्न मंत्र का २१ बार उच्चारण करते हुए २१ बार गुटिका पर पुष्प ढायें—

मंत्र

द्वि मुखां शुक्ल रुद्यां व ख्येतस्त्वंजन भागिनीं।  
द्वितीयनां शशिरुद्यां सिन्दूर तिलकोन्द्यल्लां॥  
तस्म हटक निर्मण ब्राह्मणं कर शूषितां।  
वरडिमी दीज खदूश दशन बुति शौभनां॥

क 'शितम्भर' १४ मंत्र-तंत्र-यत्र विज्ञाल '५८' ४

Dvi Bhujam Shukla Roopam Cha Khetatkhanjan Bhasamineem.  
Dvibuchaam Shashipulam Sindoor Tilakojvalam. Tupt  
Haatik Nirmanam Naanankankar Bhooshitaam. Daadimee Beej  
Sadrich Dashan Dysti Shobhanam.

इस प्रकार यह प्रयोग पांच दिन तक करें। पांचवें दिन गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - ६०/-

## २. कार्य सिंहि प्रयोग

अष्ट देवी सिंहि की क्रितीय देवी 'सिंहिदा' है, इनकी साधना सम्पन्न कर साधक शीघ्रता से आपने अमीष की पूर्ति कर नेता है। देवी सिंहिदा नीचन के प्रत्येक शेत्र में सिंहि प्रदान करने वाली मानी जाती है, साधक जिस कार्य को लेकर इनकी साधना करता है, देवी उस कार्य के पूर्णता में सहायक होती है। सिंहिदा की साधना के पश्चात साधक का कोई भी कार्य अधरा नहीं रहता है।

जब भी किसी कार्य को पूरा करने में बाधाएं अड़चने आ रही हो, तो साधक को देवी सिंहिदा का ही प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

साधक शनिवार को स्नान कर, सफेद वस्त्र धारण कर आपने साथे लाल रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर किसी धाली में आठ पुष्प रखें। उनके ऊपर 'सिंहिदा गुटिका' स्थापित करें। धो का दीपक लगा दें। संकल्प ले, कि आपका कार्य देवी सिंहिदा पूर्ण

संतो व  
जाती व  
मेव व  
कु ल  
सि  
विश्व  
प्रदी  
विश्व  
किसी व  
३. दे  
जाति व  
प्रेमिका  
प्रेमिका  
स्वास्थ्य  
कहे तो  
साधक

शोक, व

स्वप्न व  
कायाक  
लगा दें।  
रख दें।  
का २१

मंत्र  
शुद्ध  
हास्य  
क व  
मृग  
Shuddh  
Yuktas  
Dh

किसी व  
करें। पर

करे। इसके पश्चात् 'सिद्धिदा गुटिका' पर निम्न मंत्र का ध्यान  
खड़ते हए ५५ बार वायल चढ़ाएं—

सहित नदी में विसर्जित कर दें।

साधना साप्तशी पैकेज - ₹३०/-

३४८

स्तिद्विरा शुक्ल वर्णां सा ज्ञात्वा खिद्धिता ब्रजेत् ।  
कुन्न पुष्प समभासां द्विमुजां लोत्स लोचनां ॥  
शुक्ल वस्त्र परीवाहां शुक्लाभरण भूयितां ।  
सिन्दृप लिलकां वीरां लक्ष्यनां चित लोचनां ॥

Siddhas Shukla Varunam San Gyaatva Siddhitam Brajet. Kand  
Pushp Samaabhaasum Dvibhujam Lol Lochanam. Shukla  
Vstra Pareedaanam Shubhbaahur Bhoohochitam. Sindoor  
Titikshaan Deepataan Khujananchit Lochanam.

यह प्रयोग तीन दिन तक करें, तीसरे दिन गुटिका को किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सापगी ऐक्य - 45/-

### ३. योगमुच्चिष्ठ प्रयोग

जष्ट देवा सिद्धि की तृतीय देवी 'कटाक्षा' है, यह गन्धर्व नाति से सम्बन्धित है। यह साधक को सिद्ध होने के उपरान्त प्रेमिका के रूप में उसका अभीष्ट सिद्ध करने में सहायक होती है। प्रेमिका के रूप में साधक को रोग-जरा से मुक्ति प्रदान कर उसे स्वास्थ्य, आरोग्यता, सुदृढ़ता प्रदान करती है या एक प्रकार से कहे तो यह साधक का कायाकल्प करने में सहायक होती है तथा साधक को शारीरिक और मानसिक बल प्रदान करती है।

यदि साधक के घर में समस्याएं, बीमारी, उदासीनता, गोक दख्ख व्यास हो, तो साधक यह प्रयोग समर्पण करें।

विज्ञो भी शुक्रवार को साधक स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर लें, अपने सामने किसी पाप में 'रोगमुक्ति कायाकल्प गुटिका' को स्थापित करें। गुटिका के चारों ओर धूप लगा दें। गुटिका के ऊपर चावल की ढेरी बनाकर एक इलायची रख दें। लाल रंग के प्रष्ठ लेकर गुटिका पर चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का २५ बार ध्यान करें—

三

शुद्ध स्फटिक संकाशां श्वेत वस्त्रोपरि स्थितां ।  
गारुद्य वुक्तां प्रसाद्वास्वां कटाक्ष विशिखोज्ज्वलां  
कर्वर्प धनु राकार भूतलां परिशोभितां ।  
मुण्णाल अदध्याकार वाह वल्ली विशाजिता ॥

**Shuddh Statik Sankashamam Shvet Vastropari Sthitam. Hanuya  
Vulhaam Prasannasyaam Kataksah Vishikhajjvalasam. Kandarp  
Dhanurasar Bhootalsam Parishohitam. Mirinnaal  
Sadrishtakar Baalu Balli Visessita.**

मंत्र जप के पश्चात् नित्य समस्त पृथग्गों को एकत्र कर किसी स्थान पर बोध कर रख दें। यह प्रयोग सात दिन तक करें। प्रयोग समाप्त कर समस्त पृथग्गों को एकत्र कर मन्त्रा।

४. सुरव - दीमान्य प्राप्त करन्वो का प्रयोग

मण्डेवी मिहिं की चतुर्थ देवी 'लोल-लोचना' है। यह साधक को धन-धान्य, सुख-सोमाग्य, भोग प्रवान करने वाली है। इसकी याधना करने के उपरात साधक के जीवन में भौतिक वृष्टि से कोई न्यूनता नहीं रहती है, क्योंकि आज किसी भी व्यक्ति की उच्चता, श्रेष्ठता उसके रहन-सहन, उसकी भौतिक सुख-सुविधाओं को ही देखकर प्रमाणित किया जाता है। अतः साधक जीवन में सुख-सुविधाओं की उपलब्धि पाना चाहते हैं, वह यह प्रयोग सम्पन्न करें -

किसी भी बृहस्पतिवार को सानादि से निवृत हो पीले वस्त्र धारण करें। लकड़ी का बानोट बिछाकर उस पर कलश में जल भरकर उसके ऊपर नारियल रस्वकर एक और स्थापित कर दें। 'सुख-सीधार्य प्रदायिका' को किसी पात्र में स्थापित करें। 'सुख-सीधार्य प्रदायिका' का संक्षिप्त पूजन के बाद अगरबत्ती लगा दें। निम्न मंत्र द्वारा का उच्चारण स्थापित हो जाए-

कुन्द युध्य समाभासां द्विभुजां सोत लोचनां ।  
 कटाक्ष विशिष्टांशीतां सिन्दूर तिसकोज्जवलां ॥  
 बाहिमी रीज सदूष दर्शक बुतिमुज्जलां ।  
 द्वि भुजां चन्द्र वदनां वावेदात्म विमतवे ॥

Kund Pushp Samanabhaasam Dvibhujaam Lol Lochanaam,  
Kataaksh Vishikhadeepntam Sindoor Tilakojvalam. Daadineet  
Beej Sadrish Darshin Dvijutmojivalam. Dvi Bhujam Chandra  
Vadanaam Dhyaayedantaam Vibhooteay.

मंत्र जप के पश्चात् कलश में से शोडा सा जल लेकर किसी भी पौधे में डाल दें, कैटटर के वृक्ष में जलन दें। इस प्रकार यह प्रयोग ज्यारह दिन तक करें। ज्यारह दिन के बाद किसी भी पृथिवी को 'सुख सौभाग्य प्रदायिक' को नदी में प्रवाहित करें।

साधना समिती गोदावरी - ०० /

## ५. साधना सिद्धि प्रयोग

अष्टदेवी शिद्धि को पांचवीं देवी 'शशि शेखरा' है, यह साधक को साधनाओं के मर्ग पर तीव्रता से गतिशील करती हुई साधनाओं में पूर्णता प्रदान करने में सहायक होती है। इनकी साधना के पश्चात साधक की इच्छाशक्ति इतनी प्रबल हो जाती है, कि वह जिस किसी भी कार्य को भी करने की ठान लेना है वह उस कार्य को पूर्णता देकर ही रखता है।

किसी भी दिन स्नानादि से निवृत होकर लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर आठ दीपक प्रज्ञालित

करें। उनके मध्य में 'साधना सिद्धि गुटिका' स्थापित करें। 'साधना सिद्धि गुटिका' का पूजन करें। इसके समान निम्नध्यान मंत्र का उच्चारण ३६ बार करें—

श्रुच्छबद्ध प्रतीकास्तरं द्विभुजं शक्षि शैखरां ।  
स्तोचन द्रव्य संबुद्धां खेलत खंजन जामिद्वौ ॥  
सिन्दूर तिलकोदीपामंजवरं वित त्वोचनां ।  
कटाक्ष विशिष्टारेतरं भूतता परिशोभितां ॥

Shuruchchandra Prateekasham Dvibhujaam Shashi  
Shekharaam Dvay Sanyuktam Khetat Kharjan  
Gaamineem. Sindoor Tilakodeepam-anjanasachit Lochanam.  
Kataaksh Vishikhopetnam Bhroolutaa Parishobhitam.

यह प्रयोग सात दिन तक करें। सात दिन के पश्चात् साधना सिद्धि गुटिका नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 60/-

#### ६. शत्रु विनाशक प्रयोग

अष्ट देवी सिद्धि की छठी देवी 'कुटिला' है। कुटिला अन्यन्त प्रचण्ड रथरूप की है, इनकी साधना साधक शत्रुओं के विनाश के लिए करता है। इनको सिद्ध करने के पश्चात् साधक के जीवन में शत्रु बाधा जैसा कुछ उपस्थित होता ही नहीं है। साधक इसकी साधना मौतिक रूप में मुकुमों में सपलता पाने के लिए, किसी भी कार्य को निर्विघ्न रूप से सम्पन्न करने के लिए करता है, जिससे उसके मार्ग में कोई कठिनाई न आए। इस प्रयोग के माध्यम से साधक अपने शत्रु पर निधंत्रण प्राप्त कर उन्हें शात बैठने को मन्त्रबूर कर देता है।

किसी भी शुक्रवार को किसी पात्र में कुंकुम से त्रिशूल का निर्माण करें। उस पर 'शत्रुसंहारकगुटिका' स्थापित करें। तेल का दीपक प्रज्ञवलित करें। गुटिका का पूजन जाग्रथ, पुष्य, अक्षत से करें। निम्न मंत्र का जप गुटिका के समक्ष ३६ बार करें—

शक्ता चन्द्रप्रतीकास्तरं द्विभुजं चन्द्र परिच्छदां ।  
यूर्ध्व चन्द्र मुख श्रेणी कुटिलालक शोभितां ॥  
हास्य बुद्धां प्रसादास्यां द्वेत वस्त्र परिच्छवां ।  
श्वेताभरण शोभद्वारां किशोरी तव वौवनाम् ॥

Raksha Chandra Prateekasham Dvibhujaam Chandra Parichhadam.  
Poorus Chandra Mukh Shrenni Kuttalak Shobhilaam. Pausya  
Yuktam Prasannasyam Shvet Vastram Parichhadam.  
Shobhadharmam Shobhadharmam Kishoreem Nav Yovvanam.

यह प्रयोग नदी विन तक करें। नींदन के बाद गुटिका नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 45/-

#### ७. दूष प्राप्ति प्रयोग

अष्ट देवी सिद्धि की सातवीं देवी 'धनदा' है, साधक इनकी साधना के फलस्थरूप जीवन में अतुलनीय धन व्यापार

जैसे 'रितम्भर' १४ मंत्र-लत्र-यत्र विज्ञान '६०' के

वृद्धि और आकस्मिक धन प्राप्त करता है। प्रत्येक साधक जो आज के भौतिक युग में धन प्राप्ति के स्रोत पाना चाहता है उसे यह प्रयोग अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

किसी भी शुक्रवार को सफेद वस्त्र धारण कर सफेद वस्त्र बिछावें। किसी पात्र में 'धनदा यंत्र' स्थापित कर दें। आठ घोड़ी के दीपक प्रज्ञवलित करें। एक पुष्प अपने आसन के नीचे रखकर चार पुष्प चारों दिशाओं में यंत्र के चारों ओर रख दें। निम्न मंत्र का ३६ बार जप करें—

केतकी पुष्प संकरां भूततां परिभूषितां  
द्वादश कटाक्ष संबुद्धां मंत्र द्विरवज्वरितोम् ।  
द्वादशलंकार सुभजां पीत वस्त्र परिच्छवां ।  
पीत यंत्र प्रतिमांजीं सिन्दूर तिलकोज्ज्वलां ॥

Ketaki Pushp Sankarām Bhootatalām Paribhūshitaam. Naahas  
Kataaksh Sanyuktām Mantra Dvir-dagaameem.  
Naanaalaukar Subhagam Peet Vastra Parichhadāam. Peet  
Gandhi Pralliptaangeem Sindoor Tilkojjvalāam.

यह प्रयोग ६ दिन तक नित्य करें। ६ दिन के पश्चात् 'धनदा यंत्र' नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 90/-

#### ८. नव योग्यवान प्राप्ति प्रयोग

अष्ट देवी सिद्धि की आठवीं देवी 'नवयोग्यवान' है, यह साधक को पूर्ण आरोग्य, आकर्षण शरीर और जीवन में निरन्तर गाध्युर्ध प्रदान करती है। इनकी साधना करने के पश्चात् साधक के जीवन में हास्य, कोमलता, तनाव रहित जीवन और प्रसन्नता का समावेश होता है। प्रत्येक व्यक्ति ऐसे साधक के साथ अपना समय बिताना चाहता है और उनके लिए अनुकूल सिद्ध होता है।

किसी भी शुक्रवार की रात्रि को साधक यह प्रयोग सम्पन्न करें। लकड़ी के बाजौट पर पांच पान के पते स्थापित कर उस पर 'नवयोग्यवान प्रदावक गुटिका' स्थापित कर दें। उनके समान धी के दीपक प्रज्ञवलित कर दें। निम्न मंत्र का उच्चारण ३६ बार करें—

शुद्ध स्फटिकसंकाशां हरित वस्त्र विद्वैदिनीं,  
द्वादशलंकार सुभजां पीत माल्य परिच्छवां ।  
कटाक्ष विशिष्टारीमां सिन्दूर तिलकोज्ज्वलां,  
हास्य बुद्धां प्रसादास्यां किशोरी तव वौवनाम् ॥

Shuddh Sfatak-sankasham Harid Vastram Vinodineem.  
Naanaalaukar Subhagam Peet Maalyam Parichhadāam.  
Kataaksh Vishikhandeepam Sindoor Tilkojjvalāam. Haansya  
Yuktam Prasannasyam Kishoreem Nav-Yovvanam.

यह प्रयोग न्यारह दिन तक करें। न्यारह दिन के बाद गुटिका नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 60/-

गोशा गोशा विश्वा है जल्या उम्रके हुम्ज़ु का . . .

# उवाची



**यं**

दूर-दूर तक धूप के किसी एक कठारे का नामो-  
निशान तक न था पर क्या कभी-कभी चांदनी भी  
धूप सी बन तग-मन को झुलसाने सी नहीं लग जाती है?

— यूं चांदनी का भी दूर-दूर तक कोई नामो-निशान नहीं  
था, पर क्या कभी-कभी चांदनी के न होते हुए भी मन में कुछ  
खिल कर, कुछ सिखरन देता हुआ, फृटनी हुई अंगड़ाई के ज्वार  
सा बिखर नहीं जाता है?

क्या कभी-कभी ऐसा नहीं लगता, कि धूप और चांदनी  
दोनों साथ-साथ उत्तरती चली आई है? क्या कभी ऐसा नहीं  
होता, कि मन ठिठक कर रह जाता है, समझ ही नहीं पाता है, कि  
अभी-अभी उसके सामने से क्या कुछ गुनर गया। धूप और  
छाँव के खेल तो चलते रहते हैं, पर धूप और चांदनी की कोई  
आंख मिचीली? पहले तो कभी नहीं सुनी यह बात . . .

पर होता है कभी-कभी ऐसा भी। होता है नब कभी  
खिले हुए गोरे रंग में थौकन की एक सुनहरी किरण भी आकर धुल  
मिल जाए, जब मादकता एक लाली सी बन कपोलों को थपथपा  
कर, कानों में बढ़े नाज से कुसफसाकर, कुछ कहती सी चली  
जाए। कहती जाए यहीं कहीं है जीकन की वह धड़कन, निन्दगी की  
वह मङ्गिम सी आँच जिसे सौन्दर्य कहते हैं, तो क्या इस आश्वस्ति  
में छिपी नहीं होती है चांदनी की सी ठंडक, मन को कुछ सहला सी  
जाती हुई, रिमझिम फुलार बन कुछ मिंगो सा जाती हुई . . .

— या फिर छिपी होती है यह आश्वस्ति रूप के उस  
सागर में जिसे कहते हैं — अप्सरा!

सच ही तो है अप्सरा को रूप का सागर कहना। ऐसा  
सागर, जिसमें छिपे मेतियों को, खुद अपने ही मीतर, उसे देखकर

उमड़ आए सागर में गहरे तक हूब कर पाना होता है।

निसके मन में सौन्दर्य को देख एक सागर सा ही न  
लहर उठा उसने तो मग्नो अप्सरा का अर्थ ही नहीं समझा। सामने  
पूर्णिमा का चंद्रमा खिलकर बिखर रहा हो और मन में कोई ज्वार  
ही न उमड़े, तो फिर सागर की बात ही कहाँ? मेतियों को बटोरना  
तो बड़ी दूर की बात होगी।

जिसकी नजरे उसके लिये मैं बंधे बदन पर, उसके उत्तर  
चढ़ावों पर यूं न बिखर चलें, ज्यों किसी वीणा वादक की उंगलियां  
वीणा के तारों पर फिलनकर उन तारों से खेल उत्तरी हैं, तो मन में  
संगीत की रागिनी फूटेगी भी कहाँ से?

मन में कोई रागिनी नहीं फूट रही, मन में कुछ झंकूत सा  
नहीं हो रहा, तभी तो सूना-सूना सा लगता है यह जगत।

बह बह रसत है बहाँ खूब न हरय को हरय  
खद्यासरै दूर ब बातरे बड़ी उदास है रसत

यूं जिन्हें इबने से डर लगता हो, तो वे हुप भी सकते हैं।  
जुप सकते हैं गहरी नदी सी लगती, कई-कई राजा, कई-कई बान  
लिए, चुपचाप बह रही उन अंखियों में जिनके किनारों को धने बूरगुट  
सा ढक रही होती हैं उसकी धनो पलकें, अलस हो, हर तपन से  
बचाने का इसरार लिए।

या हुप सकते हैं उन पलकों की हो रही आंख मियोली  
में, उठ-उठ के गिर रही (या पता नहीं गिर गिर के उठ रही) धनी  
बरीनियों की छाया में। किसी नाव सी डोलती पुतलियों में बैठकर  
भी तो को जा सकती है रूप के समृद्ध की यात्रा, पर उसके लिए तो  
स्वृत रूप बनना पड़ेगा।

— क्योंकि रूप ही तो समा सकता है रूप में।

चारों  
भी अ  
पर उ  
त्तमन  
सत्ता क  
को पर  
की जा  
दा सत  
करिय  
बहुत है सारे  
साल,  
नया व  
सकता  
मन में  
कर, के

समझ  
भी तो  
सा क  
सीने न  
जाती  
में बव  
ब ३

माहन  
कुछ  
कमी  
नहीं र  
बकत  
को उ  
की स

— ब्रह्मोकि कोई रूप की स्वामिनी किसी रूप को ही नो  
कृपा सेकेगी अपनी पलकों की छाँब में, अपनी मादकता को कुछ  
और भी मादक बनाने के लिए।

— ब्रह्मोकि मादकता से सरोबार एक कविता ही तो होती  
है कोई भी आप्सरा, जिस कविता की पंक्तियों को वह रह रह कर  
अपनी एक-एक विरकन से गुनगुना कर बिखेर देनी है, फिजों को  
कुछ और नशीला बनाने के लिए, मन में करके का नादू जगाने के  
लिए....

**सबे फिराक उठे कुछ और भी दर्द स्थिर में,  
के से कहूँ रात भर तेरी धार नहीं भार्ह**

कुछ का ख्याल होता है, कि वह (आप्सरा) बस एक  
बदन होती है, कुछ की इसरत होती है, कि वह उन्हें बस एक बदन  
बनकर ही मिले, कुछ की तड़प होती है, कि वह उनकी हमसफर  
बने, कुछ की पाढ़न होती है, कि वह उनकी हमल्याल बने।

कोई रूप का जादू देखने को मचल रहा होता है, कुछ  
उसकी आशाओं की कशिश में भुला देना चाहते हैं — बस खुद को  
ही नहीं, इस सारे जहां को भी, पर जो समझने की बात होती है,  
जो समझ नहीं पाते, जो शायद समझना ही नहीं चाहते कि एक

कसक की भी तो बात होती है इस लुकाछिपी के खेल में।

करक का एक जादू होता है जिसमें छिपे होते हैं जीवन  
के सात रंग। मिलना तो बस एक रंग की बात होती है। मिल-मिल  
कर बिछुइना, बिछुड़ बिछुड़ कर मिलना तो सात रंगों की बात  
होती है।

बात ही ब्रह्मोकि बरसात होती है, ब्रह्मोकि इसी में तो होते हैं  
शिक्षे, शिकायतें, रुठाए, मनाना और मान भी जाना। इसी में  
तो सजते हैं सपने, जबां होती हैं हसरतों और रवां बना रहता है यह  
उप का प्रकैक सफर....

**उम्मे दराज से मर्याद कर लाए थे चर विक,  
दो अररण् में कट जए, दो इतंजरर में**

पर हीरत की ब्रात तो थह है कि इस तरह में कट-कट कर  
गुजरते दिन फिर भी काटने की बात नहीं लगती, गुजर जाने की  
बात लगाने लग जाती है।

कोई खुमारी और बेकिंगी का दौर जेहन पर ही नहीं  
छाया रहता, रस-रग में उत्तर कर कुछ धड़कता भी चला जाना है।  
कितनी के नशील में हीती होगी ऐसी बेकिंगी की ऐसी, रखानगी?

अगर होती सब में यह रखानगी तो ब्रह्मोकि विखाइ पढ़ते



‘सितम्बर’ १४ मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान ६२

बाते और मुद्रा चेहरे, बुद्धिली से झूलसे हुए मन? मानों पीकर  
तो अनुम रह गए हों।

यूं हुस्न को पीने वाले भी शिकार होते हैं एक तिथियों के  
जब उन्होंने तिथियों को अपना नरसीब बना लिया होता है। उनकी  
तिथियों में फकन कक्ष क्षेत्री है द्वय नहीं।

बस यहीं फर्क होता है और फर्क बया है, अप्सरा साधना  
बद्ध या सीन्दर्य साधना, बात दरअसल तो खुब कोही संवारने की है।

क्योंकि जिसने हुस्न को समझा ही नहीं, जिसने हुस्न  
जो परखना जाना ही नहीं, परख कर उसे अपने ही मन में सराहने  
की जबा नहीं जानी वह चाहकर भी न तो अप्सरा या सीन्दर्य को  
या सकता है न खुद में उस कशिश को उतार सकता है जिस  
कशिश की तड़प से बना रहता है रगों में बिजली सा जादू।

क्यों आ जाता है अप्सरा साधना करने से सारे तन-  
बद्धन में एक निखार? क्यों कहते हैं कि अप्सरा साधना कर देती  
है सारे शरीर का कायाकल्प? कठों से वापस आ जाते हैं जाते हुए  
साल, अप्सरा साधना करने के साथ-साथ?

रहस्य कोई बहुत गहु नहीं है, जो इस साधना को समझ  
गया वही तो बना रह सकता है भर पल घड़कता हुआ, उसे ही तो लग  
सकता है अगला छर पल जिसी उम्मीद से भरा हुआ, फिर जिसके  
मन में चल पड़ा हो ऐसा कुछ उसकी ही तो जाती हुई उग्र भी कुछ रक  
कर, हेरानी से इस नामानी को देखने पर मनवूर हो जाती है।

लेकिन हुस्न के बारे में कहना एक बात होती है उसे  
समझ लेना दूसरी बात। कोई अपनी जिंदगी में इसे मुमकिन करे  
गी तो कैसे करे? क्योंकि जब तक हुस्न आंखों के सामने ख्वाब  
सा बनकर दिलमिलाया ही नहीं तब तक कठों उत्तर सकता है  
सीने में रुपहली रातों का बिखर कर खिलता हुआ जादू?

इसी नामुमकिन को मुमकिन बनाने के लिए ही तो को  
जाती है अप्सरा साधनाएं। सोई-सोई रातों को खोई-खोई रातों  
में बदल देने के लिए हसरतों में तड़प उठने के लिए . . .

**बूं अंजुमब उजरालों से भरी तरे हैं स्त्रेकि द  
आज की रात महताव की रात नहीं है . . .**

आसमान में कितने ही सिनारे खिल रहे हीं, अगर  
माहनाब (चंद्रमा) नहीं है तो भव कुछ फीका हो जाता है और सब  
कुछ के होते गी अगर अप्सरा साधना की बात नहीं है तो कुछ  
कमी रह ही जाती है।

दिल पर कुछ नवश नहीं हो पाना है, आंखों में चमक  
नहीं उत्तर पानी है, बस यूं ही उष का सफर हिचकोले खाता हुआ  
बढ़ता रह जाता है। नाउमीदी की अधेरी रातों में जगर माहनाब  
को उतारना हो है तो क्यों नहीं कर लेते किसी माहरुख (चन्द्रगुरु) की  
साधना?

और इसी के लिए स्वर्णिम द्वाण बन कर आ रहा है  
दिनांक 25.11.98 को 'उर्वशी सिद्धि दिवस', जिसकी प्रतीक्षा  
केवल गृहस्थ साधकों को ही नहीं संयस्त साधकों को भी व्यग्रता  
के साथ बनी रहती है।

इस बात का विशेष महत्व नहीं है, कि क्या आप पूर्व  
में कई अप्सरा साधनाएं कर चुके हैं अथवा साधना के थोड़े में  
नए ही हैं, क्योंकि प्रत्येक वह साधक जो जीवन में सीन्दर्य के  
अर्थ को समझता है। जो यह समझ सकता है, कि यदि सीन्दर्य  
साधनाओं का वेग न हो तो साधना का पथ किंचित शुक्त हो  
जाता है, वह इस दिवस का उपयोग करता ही है।

यदि प्रारम्भ में उर्वशी साधना सम्पन्न कर चुके हों, तब  
भी इस साधना का विशेष महत्व है क्योंकि इसी साधना की इस  
वर्ष एक नए क्रम में प्रस्तुति की जा रही है। यह साधना आप किसी  
भी माह की पूर्णिमा को सम्पन्न कर सकते हैं।

उर्वशी केवल अनिन्द्य रूप की स्वामिनी ही नहीं स्वयं में  
जीवन की सरसना से, प्रवाह से सम्बन्धित अनेक अनेक पद्म  
समेटे हुए हैं और संक्षेप में कहे तो यही है वह साधना जो समस्त  
अप्सरा साधनाओं की आधारभूत साधना भी है।

## बूतो जब भी आए, जादू सा जगाता आए

जंथियारी रातों में जब जादू सा जगाता निकल पड़ा है  
पूर्णिमा का चांद, लाज का पीला धूंधट दाल कुछ शर्माता सा,  
कुछ ढंलाता सा तो किससे की जा सकती है उसकी तुलना?  
किससे दी जा सकती है उसकी उपमा?

बस यूं ही उर्वशी की भी कोई उपमा देना कठिन है। हाँ  
यह जरूर कहा जा सकता है, कि पूर्णिमा के चन्द्रगा की ही तरह  
'उदित' होकर वह चांदनी की ही तरह बिखर जानी है, रुपहली  
रातों के जादू को कुछ और भी रहस्यमय बनाती हुई, एक-एक  
स्पर्श से मन को कहीं से कहीं ले जाती हुई . . .

इस वर्ष का श्रेष्ठतम मुहूर्त है जोकि इन्हीं श्रेष्ठतम  
अनभूतियों को प्राप्त करने का — दिनांक 25.11.98 जो 'चंपा  
घट्ठा' होने के साथ-साथ 'उर्वशी सिद्धि दिवस' (सिद्धाश्रम  
पंचांगनुसार) भी है। साधक को चाहिए, कि वह समय रहते  
'अप्सरा यंत्र' एवं 'अप्सरा माला' आवश्यक सामग्री के रूप में  
प्राप्त कर ले। बख्त, साधक अपनी रुपि के अनुसार पड़ने और  
धी की दीपक लगाकर उत्तर दिशा की ओर गुल करके निम्न मंज  
की मात्र भ्यारह माला मंत्र जप के सम्पन्न करें —

**// उौं स्त्रौन्द्रवृत्तमावै व्रमः //**

Omo Sam Soundaryottamayuci Namah

साधना के अगले दिन सभी रामणियों को विसर्जित

कर दें।

साधना सामग्री पैकेट — 300/-

# तारकाय दृष्टि



आपके अत्यधिक रनेहुक्त पत्रों को प्राप्त कर हम आपके किसी भी सुझाव को मानने के लिए उत्साहित हो जाते हैं, आप लोगों के अनुरोध पर यह स्तम्भ आसन्न किया है, जो व्यक्ति के शारीरिक तथा मानसिक शोरों के निदान से सक्षमित है, आप हण प्रयोगों को अपनाकर अवश्य ही इसके बारे में हमें अपने विचार हों।

## १. अऐ कहीं आप दिल के मरीज तो नहीं हैं!

दिल का बोडा नाजुक सा मामला होता है, है न! जरा सा कुछ हुआ नहीं, कि धड़कने लगा जोर-जोर से, बैरेन हो गया और मीं न जाने क्या-क्या उच्चम करता है आप का दिल कि आप इसकी ओर अपना सम्पूर्ण ध्यान केन्द्रित कर दें।

और सही भी है आप क्यों न ध्यान दें अपने दिल पर, आखिर आपके शरीर का यह प्रमुख अंग जो है, उसकी बजह से ही तो आपका अस्तित्व इस सुंदर पृथ्वी पर है। आप उस पर ध्यान न देकर स्वयं पर ही अत्याचार कर रहे हैं, क्योंकि यह तो आपके सुख, दुःख, परेशानियों सभी में समान रूप से सहयोगी है। इसको सम्पूर्ण रूप से स्वस्य रखना आपको जिम्मेदारी ही नहीं करता भी है। यदि डॉक्टर ने आपको दिल का मरीज घोषित कर दिया है या आपको स्वयं ही लगने लगा है, कि आपका दिल कमजोर होता जा रहा है और वह उतना तत्परता से आपका साथ नहीं देता रहा है, तो उसके लिए यह प्रयोग सम्पन्न करें—

किसी पात्र में अष्टगंध से त्रिमुज बनाकर उसके मध्य में अष्टगंध से ही बिन्दी लगाकर उस पर 'तारक बीज' स्थापित करें। 'तारक बीज' का संक्षिप्त पूजन कर, धी का दीपक लगा दें। निम्न मंत्र का जप १५ मिनट तक नित्य न्यारह दिन करें—

मंत्र

॥ उै क्लीम तारकाय हीं उै कट ॥

Om Kleem Ayeem Taarakay Hreem Om Phat

न्यारह दिन तक लगातार हल्के व्यायाम भी करें,

यदि आपके डॉक्टर ने सलाह नहीं हो तो। न्यारह दिन के बाद तारक बीज किसी नदी में विसर्जित कर दें।

साधा सामग्री पैकेट - ५०/-

## २. पठा नहीं क्यों आजकल भूलने की बीमारी हो गई है?

यह बाब्य आजकल लगभग हर दूसरे व्यक्ति से सुनने को मिल जाता है। आखिर ऐसा क्यों होने लगा है, कि व्यक्ति स्वयं को मानसिक रूप से एकाग्र कर पाने में अलगम महसूस करने लगा है? ऐसा इसलिए हो रहा है, कि सामाजिक तथा आर्थिक परिवेश के कारण व्यक्ति में स्वार्थ की भावना निरन्तर बढ़ती जा रही है, स्वार्थ न होना चाहते हुए भी उसे स्वार्थमय जीवन व्यक्तित बनाया फ़हना है और एक साथ कई रूपों में स्वयं को बांटकर जीवनन्यापन करने के कारण वह सदैव तनाव में रहता है।

इस तनाव युक्त जीवन के कारण ही व्यक्ति मानसिक रूप से स्वयं को एकाग्र नहीं कर पाता और उसकी स्मरण शक्ति धीर-धारे क्षीण होती जाती है। यह अवस्था मेडिकली तो ६०-७० वर्ष की आयु के पश्चात आती है, लेकिन आजकल सामान्य रूप से २०-२५ वर्ष की अवस्था से ही शुरू होने लगती है और कुछ बर्षों में ही विशाल रूप ध्वाण कर लेती है। इस प्रकार भूलने की बीमारी पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए आप यह प्रयोग सम्पन्न करें—

उत्तर दिना की ओर मुख कर पांच पीपल के पते लेकर पांचों पर कुंकुम से स्वरित बनाकर उस पर चावल की ढेइयां बना दें। प्रत्येक ढेरी पर कमशः पांच प्रकार के पुष्प

नहीं। नव्य के पते पर पृथ्वी के साथ 'प्रकृतिसंतुलिता' स्थापित करें। प्रकृतिसंतुलिता का पूजन कर दीपक लगा दें। निम्न मंत्र का जप  
निम्न मंत्र: दीपक ६ बजे ३१ बार करें—

三

॥ ਤ੍ਰੈ ਕਿੰ ਕਾਂ ਕਾਂ ਕਾਂ ਕਾਂ ਕਾਂ ਕਾਂ ਕਾਂ ॥

Om Jam Jam Kshoum Kshoum Om Phat

यह प्रयोग (५) नौ दिन तक करें। नौ दिन के बावजूद 'डीर्टिंग' को नदी में विसर्जित कर दें।

साप्तरा सामग्री पैकेज - 65/-

३. आप स्वस्थ हो सकते हैं इस प्रकार ले।

बौमारी, रोग, जरा, व्याधि इनसे आज के बातावरण  
 ३ फैलकर सभी को जबड़ रखा है अपने शिकंजे में। कोई भी ज्वरिया हो, शिशु हो, वृद्ध हो, स्त्री हो या किरोर हो सभी इसकी चपेट में हैं और उससे निकलने के लिए कर्मी तो विटामिन स खाते हैं, कभी आवश्यन तो कभी कोई अन्य दवा। जरा सोचिए। आज के नवयुवकों का यह हाल है, तो आने वाली पीढ़ी तो रोगावस्तु ही रहेगी ही। वह तो रोमांसक हो जाएगी। नई संकेती

आखिर इसका निदान कुछ न कुछ तो करना ही होगा और यह निदान प्राप्त होगा अस्थान्त्र से, मंत्रों के माध्यम से, क्योंकि पूर्वकाल में जब प्रयेक घर में हवन पूजन होते रहते थे तथा वानावरण सात्विक था, तो लोगों की आयु भी अधिक थी, वे रस्वस्थ जीवन व्यतीत करते थे। जैसे-जैसे व्यक्ति सुख और ऐश्वर्य के लिए धनलोलप ढोता गया वैसे ही वह बीमार होता गया। आज रस्वस्थ व्यक्ति को ढूढ़ना वैसा ही है जैसा भीड़ में तिनका खोजना।

क्या आप स्वस्थ व्यक्ति में से एक नहीं बनना चाहेंगे? यदि चाहते हैं, तो यह प्रयोग सम्पन्न करें।

किसी पात्र में नागार्जुनं स्थापित कर उसका संक्षिप्त पूजन करें, पूजन के पश्चात उस पर अपनी दृष्टि एकाग्र करते हुए निम्न संबंध वा जप २३ बार करें—

३८५

“ॐ तत्त्वे भगवत् आत्मेन्द्रियैः ॥

Om Namah Bhagavate Agnayam Dehi Om Namah

यह प्रयोग सात दिन तक करें। सात दिन के बाद 'नागार्जुन' को नदी में प्रवाहित कर दें और नित्य प्राप्ति: उठकर स्वस्थ चिंतन करें।

आवास आवासी प्रेस्स - ६० / -

४. आंखों की दोग से कैसे बचायें ?

आंखें दैह की भवसे नाजुक और कोमल अंग होते हैं। उनकी देखभाल के लिए प्रत्येक को सजग रहना हो चाहिए। आंखें यदि स्वस्थ रहती हैं, तो वे मूलसूरत भी लगती हैं, अन्यथा किसी भी चेहरे के आकर्षण को कम करने के लिए चश्मा लगाना ही पर्याप्त होता है। अपनी आंखों को सैदैव स्वस्थ बनाना सुनने के लिए निम्न पर्याप्त सम्पत्ति बर्दे-

विस्ती पाथ मे एक निलास ठण्डा जल लै, उस पर आपनी  
पुष्टि एकाग्र करने हए निम्न मंत्र का जप और स्मिन्ट तक करें -

३८

“ ये ज्वालिसते अविद्याव ही ये कह ॥

#### Om Jxstimates And Itsaxx Hessm Om Phat

मंथ जप करने के पश्चात अपनी आस्थों को उत्सी ठण्डे पानी से धोयें। ऐसा नित्य करें। इस प्रयोग के माध्यम से आप ऊपरे नेत्रों को विमुक्ति प्रकार के रोगों से बचा सकने में समर्थ तो होंगे ही साथ ही आपके नेत्र स्वस्थ सुन्दर कटावदार और आकर्षक भी विरुद्ध होंगे।

५. मार्यादिक धर्म का अनियमित होना भी ब्रीमार्जी है।

स्थितियों में मासिक धर्म की अनियमितता का प्रमुख कारण तनाव ही दिखाई देता है। आजकल स्थितियां अपने आपको इतने तनावों के बीच धिरा पाती हैं, जिसके चलते वे स्वयं को मानसिक रूप से स्वतंत्र अनुभव नहीं कर पाती। यह बंधन की भावनाएं उन्हें तनाव प्रदान कर देती हैं, जिसके कारण उनके शरीर की क्रियाओं में परिवर्तन अने लगता है। इसमें नीकरी करने वाली महिलाएं भी हैं तो वे महिलाएं भी हैं जिनका पूरा दिन घर में व्यतीत होता है और इस अनियमितता के कारण के विषय के अनामिक रहती हैं। इन स्थितियों पर भी नियंत्रण पालन किया जा सकता है जब प्रकार -

‘स्वास्थ्यका’ को मासिक धर्म के पश्चात धारण कर लें। नित्य प्रातः स्नान कर पूर्व दिशा की ओर मुखकर निम्न पंख का तपा ३-५ बाप दर्ते।

“સુરતાંગ”

Om Bream Bream Bream Om Phat

जप के पश्चात साधिका को चाहिए कि वह नित्य प्राणायाम भी करें। 'स्वस्थिका' को २१ दिन के बाद नवी में प्रदानित कर दें।

साधना सामग्री प्रेस्ट - 40/-

## ऑडियो कैसेट्स

प्रत्यं पूज्य गुणदेव डॉ. नाकायणदत्त श्रीमाली  
जी के श्रीमुख से लिकले साक्षर्मित प्रवचन  
जिनको सुनते मात्र से ही साधना पथ पर  
अग्रसर होते की किया प्राप्तम् हो जाती है।



गुणदेव  
श्रीमाली



प्राप्ति:  
श्रीमाली  
गुणदेव  
द्वारा



गुणदेव  
श्रीमाली  
द्वारा



गुणदेव  
श्रीमाली  
द्वारा



गुणदेव  
श्रीमाली



गुणदेव  
श्रीमाली  
द्वारा

गुरु शिष्य के अट्ट सम्बन्धों पर पूज्यपाद सद्गुरुदेव की दिव्य  
ओजास्ती वाणी में ये कैसेट भी बेजोड़ हैं -

- |                               |                                    |
|-------------------------------|------------------------------------|
| १ दुर्लभोपनिषद                | ८ शिष्योपनिषद                      |
| २ शिव सूत्र                   | ९ नीरा महल से उतरी                 |
| ३ गुरु हमारी आरामा            | १० शिव ताण्डव सूत्र                |
| ४ शिष्यता : जीवन सौन्दर्य     | ११ गुरु बिन रह्यो न जाय            |
| ५ गुरु वाणी                   | १२ अज्ञात रहस्यों का सुनहरा प्रभात |
| ६ गुरु हमारो गोत्र हैं        | १३ गुरु गति पार लगावे              |
| ७ काहि विधि करूं उपासना       | १४ गुरु बिन गतिलासित               |
| ८ गुरु बिन ज्ञान कहां से पाऊं | १५ गुरु गीता                       |
| ९ अकथ कहानी प्रीत की          | १६ समाधि की ओर                     |

\* न्यौछावर प्रति कैसेट - 30/-

.. सम्पर्क इस पते पर करें ..

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-32209, टेली फैक्स : 0291-32010

अ. 'सितम्बर' ९१ मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '०६' ॥

जे  
र्या  
हो  
स  
देर

दास  
देख

गई,  
तरह  
और  
बैठा  
ओर  
तन  
बन  
गिर

कोई प्रतिक्षण हमें देख रहा है,  
यदि विश्वास न  
हो तो स्वयं  
सम्पन्न कर  
देख लें

# दिल्ली व्यासाधना



... कहीं ऊपर से  
आभी भी लुढ़क रही चट्टानों  
में से कोई चट्टान बश परन  
आ गिरे, यही शोच कर उस  
उत्साही ब्राह्मण ने बैक  
नियर लनाकर बस को पीछे  
कर लेना चाहा, लेकिन  
अनुग्राम से कुछ दूर हो गई  
और बस बजाय मङ्क पर  
पीछे जाने के उसी मलबे में  
फंस कर आधी के करीब  
चाटी की ओर लटक गई...

**द**

ही ५५५५५  
वातावरण में बच्चों, बूझों, जिवयों एवं पुरुषों की  
दारण चीख इस प्रकार फैल गई जैसे कसाई को सामने आता  
वेख बकरे की करण पुकार मन को मध देती है।

एक स्टॅके से बस वापस उड़ान कर सड़क पर आ  
गई, पहिए जैसे जाम गए थे, लेकिन इंजन किसी कुछ सोंड की  
नरह गुर्रावट करता हुआ दबाड़ता ही जा रहा था। रोने, चीखने  
और हड्डियों के साथ बस से उतरने की धक्का-मुक्की में मृत्यु  
बैठा-बैठा, सिर को जरा सा तिरछा कर देखा, तो अपनी दानों  
ओर उत्तर गई गहरी खाई और बीच में उमरी नुकीली चट्टानों की  
तलहटी में सीपिणी मी रेगती नदी में हुग मापों की जीवित गमाई  
बन गई थीं या जिर समाधि बनती ही बगों? इस ऊँचाई से  
गिरने के बाद शरीर का कौन सा अंग साकुत रह ही जाता, जो

समाधि में जाने लायक बचता ... यह कल्पना करके भी मेरे  
रोम-रोम झनझना उठे।

नीचे ऊतर कर देखा, तो ग्रमशन भूमि का ही दृश्य था,  
यथापि कोई मृत्यु नहीं हुई थी, किन्तु मृत्यु का भय ही तो व्यक्ति को  
जीवन में सबसे अधिक पीड़ित करता है। दाढ़वर दोनों हाथों में  
मिर पकड़े कुदानियों की स्टेयरिंग पर टिकाए बैठा था, लग रहा  
था, कि उसमें प्राण शेष नहीं रह गए हैं। मजदूरी, यात्रियों आदि  
का समूह कोलाहल कर रहा था। अपनी-अपनी झटकलों में जास्त  
थे और नकली ठाके लगाकर स्वयं को आश्वस्त कर रहे थे, कि  
वे सब बाक़ी जीवित हैं।

कुछ ही क्षण पहले जब तेजी से ऊपर की ओर  
जाती इस ने एक तीखा गोड़ काटा और अचानक सामने देखा  
कि गू-स्खलन से हुई मिहो और चड़ानों का देर एक पहाड़ की

तरह सड़ा है, तो अबकचा कर ड्राइवर को तेज बैक लगाने की मनमूरी आ ही गई थी। कहीं ऊपर से अभी भी लुढ़क रही चट्टानों में से कोई चट्टान बस पर न आ गिरे, यही सोच कर उस उत्साही ड्राइवर ने बैक गियर लगाकर बस को पीछे कर लेना चाहा, लेकिन अनुमान से कुछ चूक हो गई और बस बजाय सड़क पर पीछे जाने के उसी मलबे में फंस कर आधी के करीब घाटी की ओर लटक गई।

... बस एक ही पल और था, कि जीवन की दोर सबके शरीर से टूट जाती, कि अचानक एक धक्के के साथ बस पुनः सड़क पर थी। नीचे खड़े, जो सफाई मजदूर सारे घटनाक्रम को अपनी आखों से देख रहे थे, उन्हें समझ नहीं आ रहा था, कि आखिरकार हुआ क्या? कोई कह रहा था, कि अचानक टायरों के नीचे सड़क आ गई, तो कोई उसे ड्राइवर की प्रत्युत्पन्न मति का चमत्कार मान रहा था।

न ही सड्योगी यात्रियों के वार्तालाप में कोई सच रह गई है, वह अज्ञात विम्ब कीन था, उसने क्यों मेरी ही नहीं सभी को रक्षा की, यह प्रश्न मेरे मन में उगड़-घुमड़ रहा था। खिड़की से आती मंद पवन के झोंकों के साथ मुझे तन्द्रावस्था ने घेर लिया था और प्रसुष्ठि की उस दशा में स्वतः ही अन्तर्मन के तनु जाग्रत होने प्रारम्भ हो गए। कड़ियां एक दूसरे से जुड़ती जा रही थीं और जिस प्रकार कम्प्यूटर को 'सर्च' (दृढ़ने) का आदेश देकर व्यक्ति कुछ देख चुप बैठ जाता है, उसी प्रकार मेरा मस्तिष्क भी स्वतः 'सर्च' कर रहा था। स्मृतियों की कहीं जुड़ते-जुड़ते उस घटना क्रम तक जा पहुंची, कि मैंने लगभग बार वर्ष पूर्व पूज्य गुरुदेव द्वारा दी गई दिव्यात्मा साधना की थी और पूज्य गुरुदेव द्वारा ने कहा था, कि यह साधना कभी यथिष्ठ में समझ पाओगे, कि मैंने तुम्हें क्या विलक्षणता प्रवान की है।

किन्तु तब अनेक साधनाओं के मध्य में मैं उस साधना

... किन्तु मेरी आंखों के सामने उसी वृद्ध का चेहरा तैर रहा था, जो झटके से किसी एक सूक्ष्म अंश के लिए आया था और अनले ही क्षणांक में बस एक छाटके के साथ पुनः सड़क पर थी। जैसे किसी बहुत बड़ी हथेली ने बस के पूरे पृष्ठ भाग को अपने मंद आधात से सड़क पर ढकेल दिया था। यद्यपि पीछे का दृश्य मैंने देखा नहीं था, किन्तु पता नहीं क्यों मुझे एक गुदू स्पर्श अपनी पीठ पर अनुभव हुआ था, जैसे कि व्यस्त कुरुष की मांसल हथेली, कुछ ऊपर के साथ थपकी बनकर मेरी पीठ से टकराई हो और अगले ही पल वह सुखद स्पर्श लुप्त हो गया।

... यह ने युथिष्ठिर से प्रश्न पूछा था, कि जगत का सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है? और उत्तर में धर्मराज ने कहा था - 'इस जगत में नित्य सेकड़ों-हजारों व्यक्ति मरते हैं, किन्तु प्रत्येक व्यक्ति यही समझता है, कि उसे कभी भी गृह्ण का स्पर्श नहीं होगा।'

इस भावना के अनुरूप कुछ देर के बाद सभी लोग पिछली घटना को भूल चुके थे और बस का चालक भी प्रकृतिस्थ होकर बस को तेजी से गन्तव्य की ओर ले कर बह चुका था, किन्तु मुझे अब न तो प्राकृतिक दृश्यावलियां सुखद लग रही थीं

का महत्व समझा ही कहां था? यद्यपि यह अवस्थ हुआ था, कि साधना सम्पन्न करने के कुछ दिनों बाद से मुझे यदा-कदा एक श्वेत विम्ब प्रायः विखाइ देने लग गया था। मैं उसका रहस्य नहीं समझा और प्रमवता मान बैठा था, कि हो न हो कोई प्रेतात्मा ही इस तरह भेष बबल कर मुझे छलने को आती रहती है। साधना सम्पन्न करने के उपरांत गुरु-साहचर्य की महत्ता को न समझने की मेरी जो भूल थी, उसका मैं अनुभव कर रहा था, क्योंकि जिसे आज तक मैं किसी प्रेतात्मा का स्वरूप समझता था, वही आज मेरी रक्षा का हेतु बनी।

... हड्डियों कर मेरी तन्द्रा टूट गई। तो क्या वह कोई दिव्यात्मा थी? क्या वही मेरी रक्षा कर गई? क्या उसे पहले से भान था? क्या वह प्रतिक्षण मुझ पर वृष्टि रखती ही है? जैसे अनेक प्रश्नों को मेरे मन में इश्वी सी लग गई। बस का सफर लम्बा था और मैं मन ही मन विचार विमर्श करते हुए एक-एक घटना को याद करते हुए इसी निष्कर्ष पर पहुंच रहा था, कि वह अवस्थ ही कोई दिव्यात्मा थी, जिसने आज पता नहीं किस आपदा से मेरे प्राण बचा लिए। मुझे याद आ रहा था, कि किस प्रकार से इस साधना को करने के बाद मुझे अजीबों-गरीब दृश्य विखाइ पड़ने

जैसे  
लिल  
प्रवास  
पहुंच  
यात्रा  
पास  
इच्छा  
प्राकृ  
परिण  
मेरी  
मुख्य  
समरा  
साध  
ही प्रा  
इसी

ता गए थे और मैंने घबण कर साधना समाप्त कर दी थी। मुझे ऐसे कुछ दोस्तों ने समझाया था, कि यह सब तंत्र-मंत्र के चक्रकर में पहले का दुष्परिणाम है और मैंने भी उनकी बात को मानकर किरन तो गुरुदेव से भेंट की थी, न ही कोई पत्र व्यवहार किया था। मेरा मन पश्चात्तुप और ज्ञान से भरता जा रहा था। मैंने जननामे में और अपने प्रमाद के कारण पता नहीं किस-किस दीमान्न की उपेक्षा कर दी थी, क्योंकि जो दिव्यात्मा आज इन वर्षों बाद भी बिना मेरे किसी आल्लान के दीड़ कर मुझे बचाने के लिए उपस्थित हो गई, उसने पूर्व में श्री मुझे बचाने के लिए कैसे ब्रह्म संकेत देकर साधारण करना चाहा होगा, मेरी उन्नति में सहायक बनान चाहा होगा, इसका मैं अनुमान कर रहा था।

बस अत्यधिक ऊचाई पर पहुंच गई थी, जहां आकाश की स्वच्छता, पैद-पीढ़ी की साधनता और स्वच्छ वायु के झोंके आ-आकर मेरे मनोमालिन्य पर मरहम के समान लग रहे थे तथा वर्षों से महानगर की दबी-दबी फिजां में सांस लेने के बाद मुझे तो

गुरुदेव के निर्देशानुसार श्वेत आसन पर ही उत्तर गुरु द्वेष्ट कीठा। पूज्य गुरुदेव ने साधना में कुछ और संशोधन भी कर दिए थे, क्योंकि सामग्री आदि में अन्तर मनुष्य ही रहा था। इसका कारण बाद में पूज्य गुरुदेव से ज्ञात हो सका, कि जिस प्रकार विज्ञान में निरन्तर शोध कार्य चलता रहता है, उसी प्रकार से ज्ञान के एवं साधना के छोंत्र में भी निरन्तर शोध कार्य चलता ही रहता है; अतः यह कोई आवश्यक नहीं कि जिस विधि से कोई एक साधना सम्पन्न कर ली, उसे दोहराने रहें, वरन् अन्य विधियों को प्रयोग में लाते रहना ही साधकोचित लक्षण होता है।

पूर्व क्रम के अनुसार 'गुरु यंत्र' (तास्पत्र धर अंकित एवं दिव्यात्मा साधना हेतु चैतन्य किया गया), साधना का आधार था, साथ ही एक 'सियारसिंगी', 'सात लघु नाश्यत' आनिरिक सामग्री भी थी। मेरे विचार से पूज्यपाद गुरुदेव ने पहले यह साधना मांत्रोक्त ढंग से सम्पन्न कराई थी, जबकि इस बार वे तांत्रोक्त पद्धति से कराने के इच्छुक थे, जिससे साधना

हल्की पदधार, अंगोंके रांचालन से उत्पन्न मंद धृति एवं अत्यन्त हल्की खांसने-  
खस्तारने की आवाज भी रात्रि के उस शान्त वातावरण में आभासित हो ही रही थी।

... सामने एक वृद्ध योगी की आकृति स्पष्ट होने लग गई थी, मैं हङ्कड़ा कर  
उठने जा ही रहा था, कि...

ऐसे ही लग रहा था मानों किसी मृतप्राय व्यक्ति को आवसीजन का सिलेंडर लगा दिया गया हो। मेरे मन-मिस्त्रिक में विचारों का जो प्रवाह चल रहा था उसके बशीमूल ही मैंने अपने अन्तर्ब्रह्म स्थल पर पहुंच आवश्यक कामों को जल्दी से जल्दी समाप्त कर वापसी की यात्रा की तैयारी कर ली, क्योंकि मैं अब शीशातिशीघ्र गुरुदेव के पास पहुंच कर अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त करने का इच्छुक हो गया था, यद्यपि पहले मेरा विचार कुछ दिन पर्वतों की प्राकृतिक दृश्यावलियों के मध्य रहने का था।

गुरुदेव के सभी पहुंच मैंने उनको सभी घटनाओं से परिचित कराया और डिज़ाइन कर यह भी पूछ लिया, कि क्या मेरी रक्षा करने में सहायक कोई विद्यात्मा ही थी? उत्तर में वे मुस्करा भर दिए और मुझसे बोले, कि तुमको तो अब साधना समरण भी नहीं रह गई होगी, तुम आज यहां रुको एवं उस साधना को पुनः सम्पन्न कर अपने प्रश्न का उत्तर कर्यों न स्वर्य ही प्राप्त कर लो?

उस दिन 'संकल्प सिद्धि विवर' था, जो संयोगवश इसी साधना का विवर भी है। मैंने श्वेत वस्त्र पहने और पूज्य

का हाथों हाथ लाम मिल सके।

मैंने पूज्यपाद गुरुदेव के निर्देशानुसार रात्रि के द्वितीय प्रहर प्रारम्भ होने पर जब वातावरण शान्त एवं निःस्तब्ध हो गया तब साधना प्रारम्भ की। अपने सामने एक श्वेत वस्त्र विश्वकर उसपर तास्पत्र में 'गुरु यंत्र-स्थापित किया। यंत्र का पूजन श्वेत चन्दन एवं अक्षत से किया। यत्र के मध्य भाग में 'सियार सिंगी' को स्थापित कर दी का दीपक, मधुर सुगन्ध की अगरबत्तियां प्रस्तुति कर ली।

पूज्यपाद गुरुदेव ने यह भी निर्देश दिया था, कि गुलाब के पुष्टों का अधिक से अधिक प्रयोग करना। अतः मैंने सम्पूर्ण साधना स्थली को एक प्रकार से गुलाब के पुष्टों से ही भर दिया तथा यंत्र पर गुलाब का इवं भी लगा दिया था। वातावरण को इस प्रकार स्वच्छता एवं माधुर्यता से भर कर मैंने मूल साधना प्रारम्भ की। एक बात मैं बताना मूल ही गया, कि सामने बिछे आसन पर दायीं और एक बड़ी देशी भी गुलाब के पुष्टों से बगा दी थी, जिस पर दिव्यात्मा का आहवान करना था।

प्रारम्भ में संक्षिप्त गुरुपूजन कर एक माला गुरु मंत्र की

जप करके मैंने 'दिव्यात्मा सिद्धि माला' से निम्न मंत्र की २१  
माला मंत्र जप सम्पन्न किया। यह मंत्र इस प्रकार था—

### दिव्यात्मा मंत्र

दं सिद्धाश्रमे सिद्धाश्रमे अवाहव अवाहव फट  
Vam Siddhaashramme Siddhaashramme Avavahay Avavahay Phat

प्रथम माला के मंत्र जप के साथ ही साथ वातावरण में  
एक विचित्र प्रकार को रहस्यात्मकता छँ गई थी। ऐसा लग रहा  
था, कि मेरे अतिरिक्त उस एकान्न साधना कक्ष में कोई और  
उपस्थित है। हल्की पदचाप, अंगों के संचालन से उत्पन्न मंद  
छवि एवं अत्यन्त हल्की खांसने-खुखाने की आवाज भी यथि  
के उस शान्त वातावरण में आभासित ही ही रही थी।

अन्नम माला के मंत्र जप को समाप्त करते करते मेरे  
समझ एक बृद्ध की आकृति स्पष्ट होने लग गई थी। मैं हडबड़ा  
कर आसन से उठ खड़ा होने वाला ही था, कि अचानक मुझे बोध  
हुआ, कि मैं तो पूज्यपाद गुरुदेव के स्थान पर रखकर साधनारत  
हूँ अतः मय कैसा? इसके साथ ही साथ मैंने ध्यानपूर्वक देखा तो  
यह 'आकृति' इतनी अधिक सौम्य एवं शान्त था, कि मन में एक  
अनोखी सी चेतन्यता का संचार होने लग गया था। जिस प्रकार  
बादलों में आकृति बनती—बिंगड़ी है तीक उसी प्रकार मेरे समझ  
एक आकृति बिघ्मान थी। एक बार किर मेरी बुधि ने मुझ पर  
हाथी होना चाहा और मुझे लगा कि शायद मेरा प्रग्रह ही होगा तथा  
अगर अस्तियां धूप आदि के धूए से कोई आकृति बनकर मुझ प्रभित  
कर रही होजो किन्तु शायद वह गुरुदेव के समीप होने एवं उस  
स्थान की चेतन्यता का ही फल था, कि मैं शीघ्र ही अपने तकों पर  
विनय प्राप्त की और अनुभव कर लिया, कि वास्तव में मेरे समझ  
कोई चेतन्य शक्ति उपस्थित है।

सत्य तो यह है, कि मैं स्वयं को विश्वास दिला ही नहीं  
पा रहा था, कि मेरी साधना सफल ही गई है और किन्तु दूसरे  
कारणों की खोज कर रहा था। मैं जब तक स्वयं को संयत करूँ  
तब तक वह दिव्य आकृति एक सौम्य स्मित के साथ पूनः शृण्य में  
विलोन हो गई और मैं उसमें न तो कोई प्रग्रह कर सका न ही  
अपनी भावनाओं को निवेदित कर सका।

दूसरे विन प्रातः मैंने पुनः साधना स्थान पर जाकर जब  
विसर्जित की जाने वाली साधना सामग्रियों को एकत्र करना चाहा  
तो अनुभव किया, कि अन्य सभी पुष्प जहां कुहला गए थे वहीं  
पूष्पों की वह ढेरी यथावत बनी छुई है, जिसे मैंने दिव्यात्मा के  
आकृति पर लगापन हेतु बनाया था। मैंने कौतूहलवश उसे छेड़  
दिया तथा सभी लघु नारियलों को ले जाकर विसर्जित कर दिया।  
सायंकाल तक वे पुष्प उसी प्रकार बने रहे और तब मैं समझ  
गया, कि ये पुष्प उसी दिव्य आत्मा से संस्पर्शित हो जाने के

### इस वर्ष संकल्प सिद्धि दिवस

1.1.98 को पढ़ रहा है . . . साथ ही इसी  
संवत् का नव वर्ष भी इसी दिन से प्रारम्भ  
हो रहा है। आप यह साधना इस दिवार  
को अवश्य ही सम्पन्न कर अनुपूर्णता  
प्राप्त करें

कारण अब विशिष्ट हो गए हैं और उन्हें मैंने सम्मान कर बढ़े से  
पात्र में एकत्र कर लिया।

दूसरे दिन सायंकाल अवसर मिलने पर मैंने पूज्य गुरुदेव  
को अपने सभी संस्मरणों परं अनुभूतियों से परिचित कराया।  
गुरुदेव ने प्रसन्न होकर पूर्णता का आशीर्वाद दिया।

उहोंने यह भी कहा, कि यदि मैं प्रथम साधना के बार  
प्रमाद में न भर जाता और साधना की निरन्तरता रखते हुए  
व्यक्तिगत रूप से अपना पता, कोन आदि के माध्यम से उनके  
समझ उपस्थित होकर अपनी गतिविधियों से परिचित कराता  
रहता तो यह सफलता मुझे और भी पहले मिल गई होती।

दिव्यात्मा साधना रहस्य के विषय में मैं पूज्य गुरुदेव  
की आज्ञा से बद्ध होने के कारण अधिक कुछ कहने में असमर्थ हूँ,  
किन्तु यह अवश्य कह सकता हूँ, कि इस साधना के माध्यम से  
मैंने जीवन के अनेक ऐसे पड़ाव पार किए हैं, जहां यदि मैं केवल  
अपने ही बल से यह रहा होता तो धरयरा कर बैठ जाता। दिव्य  
आत्माएं, प्रेत आत्माएं होती हैं, मेरा यह धूप कब का समाप्त हो  
चुका है। साथ ही यह भी उल्लेखनीय है कि इस प्रकार की  
साधनाओं के माध्यम से वास्तव में हम यह आग्रह ही प्रकट करते  
हैं, कि हम उनकी कृपा पाने को आत्मरह हैं।

यदि कोई यह यह समझे, कि उसने उस प्रकार की किसी  
चेतन्य शब्द को अपनी साधना के बल से आबद्ध कर लिया है  
और वह जब चाहे तब प्रकट होने को बाध्य कर सकता है तो  
उसकी गम्भीर भूल होगी, क्योंकि इस प्रकार की शक्तियां आवश्य  
नहीं होती, न ही इच्छा से प्रकट या उपस्थित होती है बरन, वे  
स्वयं ही निर्धारण कर लेती हैं, कि उन्हें किस अवसर पर कब  
और कहा उपस्थित होना है। उनकी बुद्धि अपनी साधना करने  
वाले साधक पर प्रतिक्षण रहती ही है और इसी बात का दूसरा  
पक्ष यह है, कि ऐसी उच्चकोटि की साधना करने के उपरान्त  
साधक को आगमी जीवन में अत्यन्त सच्चरिता, श्रेष्ठता एवं  
गम्भीरता का जीवन व्यतीत करना चाहिए।

साधना सामग्री पैकेट - 320/-

# ਕਥਾਂ ਕੀ ਵਾਣੀ

३५

ओंध कंधी भी व्यक्ति को जीवन में कुचा उठने के लिए  
उत्तमक नहीं होता बरन उस काण विशेष की गुणवत्ताओं को नष्ट  
कर देता है, जिसके द्वारा व्यक्ति आगे बढ़ सकता है। अतएव आप  
के लिए श्रेयस्कर होगा, कि आप अपने इस अवगुण पर काल धारे  
और अगर आप ऐसा कर सकें, तो वह माह आपके लिए शुभ  
होगा। मित्र, परिवारण्णण एवं आपके अधिकारों सहायक होंगे।  
इस लेत्र में सफलता आपकी प्रतीक्षा कर रही है, चाहे वह  
नुकसानोंबाजी हो, इंटरव्यू द्वारा यो कोई और परीक्षा। पूर्ण अनुकूलता  
के लिए गुरु मंत्र की नित्य चार मालाएं जप करें -

॥ उम परम तत्त्वाद नारायणाद गुरुभ्यो नमः ॥  
Om Param Tatvat Naarayanaat Gurubhyo Namah

२४

आपकी प्रकृति शांत, सुरभुर है, निसके कारण आप बेष्टना प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे। परन्तु आप में एक बड़ी भी है, वह यह है कि आप जिहा है और कई बार जिहा में आकर आप अपना दी नुकसान कर बैठते हैं। इसलिए आपके लिए ब्रेयरकर यही है, कि जिद्दों स्वभाव त्याग दें। ऐसा करने के पश्चात आपको स्वयं ही अपने जीवन में सुखद अनुभव होने लगें। लोगों के बीच आप सराहनीय होंगे, आपका हर कम सरलता से हो पाएंगा और परिवारिक जीवन भी सुखी रहेगा। यह माह सामान्य ही कहा जा सकता है। 'नवार्ण मंत्र' के एक माला नित्य करने से पूर्ण ग्रन्थलता प्राप्त होगी।

॥ ए हीं करी बामण्डुदे दिचे ॥

Ayeim Bream Kleem Chasmundusaxei Viechke

मिथ्या

पुरानी बोगारी ये परेशान रोजियों को खास ध्यान देना होगा। यह माह आपके जीवन में परिवर्तन लाएगा, परन्तु इसके लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। दो सकता है इस माह आप कोई नवान कार्य शुरू करे या नई नोकरी प्राप्त करें। परिवार में समझ-बूझ से कई मौके पर गंभीर स्थितियां टल जाएंगी। फिजूल की अनन्बन को प्रोत्त्वाहन न दें और अच्छों की पक्काई और स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। पूर्ण सफलता हैन् 'गं गणपतये नमः' मंत्र की १ माला नित्य करें।

१०८

कल्पना की दुनिया में बाहर निकल आइए और वास्तविकता का सामना कीजिए। स्वयं के अम और पौस्त से ही सफलता प्राप्त हो सकेगी। आप में निश्चय ही अनेक गुण हैं, पर आप उनकी ओर पीछ करके बैठे हैं, अतएव उन्हें देख नहीं पा रहे हैं। आपने गुणों का पूर्ण क्षमता के साथ उपयोग करिए। आपके शत्रु आपको नीचा दिखाने या बदनाम करने की चेष्टा करेंगे, इस ओर विशेष सावधानी बरतें। किसी भी प्रकार की गुकदमेबाजी से फिलहाल दूर रहें तो अच्छा होगा। धन के मामले में यह माह सफल रहेगा और आप अगर अपने परिव्राम पर निर्भर हो जाके, तो आप पाएंगे, कि यह माह आपके लिए बरदायक सिद्ध हुआ है। माह की अनुकूलता के लिए दुर्गा समझाती का पाठ करें।

सिंह

इस माह आपके घर में कोई मार्गलिक कार्व सम्पन्न होगा और आप अपने खियजनों एवं मित्रों से मिल पाएँगे। आपके लिए यह माह अत्यधिक उल्लास, प्रसन्नता एवं आनंद से भूत्त होगा। परन्तु फिर भी यह गोंकर से संकेत होता है, कि इस माह का मध्य भाग कुछ कम गोरे हैं और इस दौरान आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आफिस में अधिकारियों के गमले में ज्यादा न बोलें और न ही बिना पढ़े किसी कागज पर दस्तखत करें। माह की पूर्ण अनुकूलता के लिए दुर्गा चालीसा का नित्य पाठ करें।

कर्णया

अहं पवं दूसरों के प्रति ईर्ष्या का भाव आपके लिए यह माह विषमय बना सकता है, इसलिए उचित होगा कि आप इन माहों त्याग दें और उत्तम आप ऐसा कर पाएं तो जीवन का प्रक बिलकुल ही नया आयाम आपके समझ खुल जाएगा, आपके अनुकूल स्वभाव के कारण हर कोई स्वतः ही आपके प्रति सहायक होगा, नया काम शुरू करने के लिए यह माह शुभ है। आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए 'सिद्धि माला' धारण करें।

३८०

इस माह आपको अन की धिंत नहीं रहेगी। जहाँ तक स्वास्थ्य का प्रश्न है विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है। इस

२४	अमृत, रेति पुष्टि, गुरु पुष्टि छिद्र योग
१८	इन दिवसों पर आप किसी भी सामना को सम्पन्न कर सकते हैं।
५ सितम्बर	- सर्वार्थ सिद्धि योग, रवि योग
७ सितम्बर	- विषुष्कर योग
८ सितम्बर	- सर्वार्थ सिद्धि योग
१२ सितम्बर	- सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग
२० सितम्बर	- सर्वार्थ सिद्धि योग
२३ सितम्बर	- रवि योग
२५ सितम्बर	- रवि योग, सर्वार्थ सिद्धि योग
२७ सितम्बर	- रवि योग, सर्वार्थ सिद्धि योग
३० सितम्बर	- रवि योग, सर्वार्थ सिद्धि योग

माह हो सकता है, कि आपके किसी लम्बे दूर पर बाहर जाना पड़े और वह भी हो सकता है, कि आपका तबादला भी हो जाए। आप अपने शत्रुओं के प्रति निश्चिन्ता न बरतें, क्योंकि वह आप पर प्रहार करने की ताक में है। जीवन में हर प्रकार की सफलता प्राप्त करने हेतु बगलामुखी कवच (बगलामुखी पुस्तक से) का पाठ करें।

### वृष्टिचक

वृसे बहुत ही कम लोग हैं जो आपको चालाकी और तेजी में मात्र दे सकते हैं परं फिर भी जरूरत से ज्यादा घमण्ड कभी भी उचित नहीं होता, क्योंकि वह व्यक्ति को उसी तरह छुटो देता है, जैसे कि लेद युक्त नाव। अनेक जितने अधिक नम्र और स्वेदनशील बनेंगे आप उतने ही अपने जीवन को सुगंधित बनाने में सफल हो सकेंगे और अगर आप ऐसा कर पाएं, तो वह मास एक प्रकार से आपके लिए विशेष मास है, जब परिवार में, आफिस में, कार्यस्थल में अथवा मित्रों में आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी और हर कोई आपके प्रति सहायता होगा। शत्रु भी आपके समक्ष निष्क्रिय होंगे। पूर्ण अनुकूलता के लिए आप नित्य महाकाली कवच (महाकाली पुस्तक से) का पाठ करें।

### ध्यान

इस माह ध्यानिक कार्यों में आपके धन का व्यय होगा और आपको शांति का अनुभव होगा। आपके मन में अस्ताह, प्रसवता का प्रातुर्भव होगा। आप अपने कार्य क्षेत्र में सबल और लोकप्रिय होंगे। परिवारिक मामलों में नानुकूलता से कम लेना पड़ेगा अन्यथा मानसिक तनाव और क्रोध का सामना करना पड़ेगा। दोनों गण कार्य नाश्ते ही रह जाएंगे, कोशिश एवं कठिन परिश्रम से भी अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं हो पाएगी। पूर्ण अनुकूलता की प्राप्ति के लिए 'हुं दुर्गायि नमः' मंत्र की एक माला नित्य करें।

### मंत्र

स्वस्येवकी विशेषता इस माह की यह है, कि अत्यधिक कठिन परिस्थितियों में भी धन आपके साथ नहीं छोड़ता, खर्च बढ़-चढ़ कर ही होगा और आपको सर्विस या आपके व्यवसाय में कठिन समस्याओं का सम्पन्न करना पड़ेगा। व्यार्थ का बोध, चिंता बोझ अपने लोटी-लोटी बातों पर बोधित नहीं हैं। अपने गुणों को समझे। द्वामाह विशेषी आपको नुकसान पहुंचने की भरसक कोशिश करें, परं वे कमज़ोब नहीं होंगे। इस माह में पूर्ण अनुकूलता के लिए वेदी सूक्त का पाठ करें।

### दुर्भ

आप निश्चित ही बहुत असुलों के पक्के हैं और आपकी यह प्रकृति धूमरों को पीड़ा पहुंचाती है। उचित होगा, कि आप ही अपने जीवन को योद्धा बदलें, जो व्यक्ति केवल अहं पूर्वक जीवन को जीता वे हमें आनंद से कोसो दूर रहते हैं, जब्ती तो उन्हीं होते पर विराजमान होते हैं, जो हर क्षण को गंधीरता पूर्वक लेते हुए निश्चिन्ता पूर्वक कार्य करते हैं। आप केवल एक दो दिन ऐसा करके तो देखिए आप निश्चित ही स्वयं के भी एक भारी बोझ से मुक्त होता हुआ पाएंगे। आपके इस परिवर्तन में आपकी सहायता के लिए हर कोई तप्तर हो जाएगा सम्पूर्ण अनुकूलता के लिए नित्य दुर्भासमशरी का पाठ करें।

### मीन

आप समय पर सही निर्णय नहीं ले पाते यहीं करारा है, कि चाहते हुए भी आप जीवन में आने नहीं बढ़ पाते। बस एक बार आप इस कमी के दूर कर लीजिए, तो आप पाएंगे, कि अभी तक आपका असफल होने का भय या वह व्यर्थ और निर्यक शा, जिसके कारण आप ठीक निर्णय लेने में संकोच करते थे। इस माह आपको अपने दृष्टि की हुंडी हुई कमताओं का ठीक जान हो पायगा। आफिस और कार्यालयमें व्यर्थ के वाद-विवाद में उलझे और नहीं किसी पारिवारिक झगड़े को बढ़ावा दें। नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।

### इस मास के द्रवत, पर्व एवं त्यौहार

२ सितम्बर	- भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११	पद्म एकावली
३ सितम्बर	- भाद्रपद शुक्ल पक्ष १२	मुवनेश्वरी जयंती
५ सितम्बर	- भाद्रपद शुक्ल पक्ष १३	अवत जयंती
७ सितम्बर	- आश्विन कृष्ण पक्ष ०१	पितृ पश्चात्यभ
१० सितम्बर	- आश्विन कृष्ण पक्ष ०४	किलर जयंती
१२ सितम्बर	- आश्विन कृष्ण पक्ष ०५	महालक्ष्मी जयंती
१३ सितम्बर	- आश्विन कृष्ण पक्ष ०८	काली जयंती
१६ सितम्बर	- आश्विन कृष्ण पक्ष ०१	इन्द्रिया एकावली
२० सितम्बर	- आश्विन कृष्ण पक्ष ०३	सर्वपितृ आवद
२१ सितम्बर	- आश्विन शुक्ल पक्ष ०५	नवरात्रि आरम्भ
२५ सितम्बर	- आश्विन शुक्ल पक्ष ०५	उपाय लक्ष्मी व्रत
२९ सितम्बर	- आश्विन शुक्ल पक्ष ०८	दुर्गाष्टी
३० सितम्बर	- आश्विन शुक्ल पक्ष ०९	मुहूर मार्गिक आवद

दिल्ली  
जाती  
हो रही  
होगी  
दिनां

दिनां

उपरोक्त  
१.  
२.  
३.  
४.

सम्पर्क

## इस मास दिल्ली में विशेष : प्रत्येक साधना निःशुल्क

केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्यों के लिए निःशुल्क योजना

समरत् साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएँ पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 6 बजे 8 बजे के बीच सम्पन्न होती हैं और यदि अद्वा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधना सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

साधना में भाग लेने वाले साधक को यंत्र, पूजन सामग्री आदि संस्था द्वारा निःशुल्क उपलब्ध होगी (धोती, दुपहा और पंचपात्र अपने साथ में लावें या न हों, तो यहां से प्राप्त कर लें)।

दिनांक 18.9.98 भाव्योदय सिद्धि प्रयोग

यदि वर्ष में एक बार इस प्रयोग को सम्पन्न कर लिया जाए तो फिर साधक को उन्नति को कोई नहीं रोक सकता है। भन धान्य सुख ऐश्वर्य प्रदायक है यह प्रयोग।

दिनांक 19.9.98 चन्द्रघटा प्रयोग

भगवती दुर्गा की साधना की प्रारम्भिक सीढ़ी है यह प्रयोग। जो साधक को ऊर्जास्विता तेजस्विता और प्रखरता प्रदान करने में सहायक है।

दिनांक 20.9.98 सर्व पितृ दोष निवारण दीक्षा

क्या आप घर में छोने वाली कलह से कुशी है?

क्या आप कार्य की असफलताओं से परेशान रहते हैं?

क्या आपका भाग्य बंधा हुआ सा लगता है? तो आप पितृ दोष से प्रभावित हैं . . .

आप इस प्रयोग को सम्पन्न कर पितृ दोष को समाप्त कर सकने में समर्थ हो सकते हैं।

उपरोक्त दिवसों पर भाषना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मात्र होंगे -

1. आप अपने किसी एक मित्र या सज्जन से पत्रिका की वार्षिक सदस्यता हेतु 195/- वार्षिक शुल्क तथा 24/- डाक व्यय और 12 दुर्लभ अंकों के सेट का शुल्क 180/- इस प्रकार कुल शुल्क (219/- + 180/- = 399/-) जमा कर साधना में भाग ले सकते हैं। आपको निःशुल्क साधना सामग्री के साथ ही उपहार स्वरूप निःशुल्क 'हनुमत बाण चंत्र' प्रदान किया जायेगा, जो कि आपके जीवन में सहायक सिद्ध होगा एवं उस सदस्य को पूरे वर्ष भर आपकी तरफ से उपहार स्वरूप मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका प्रतिमाह भेजते रहेंगे।
2. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं के लिए एक वर्ष की सदस्यता और 12 दुर्लभ अंक प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं, किन्तु आपको उपहार स्वरूप 'हनुमत बाण चंत्र' प्राप्त नहीं हो पायेगा।
3. आप यदि किन्हीं कारणों से पत्रिका सदस्य बनाने में असमर्थ हैं, तो कार्यालय में 375/- रुपये जमा करके भी साधना में भाग ले सकते हैं।
4. साधकों के लिए रात्रि में आवास या भोजन की यहां कोई व्यवस्था नहीं है।

सम्पर्क सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्सेलेय, पीताम्बरा, नई दिल्ली - 34, फोन 011-7182248, टेली फैक्स 011-7196700

अ 'सितम्बर' 98 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '73' ८

# The Divine Wonder-worker

You could even envision thousands of stars exploding all at once in a divine display of pyrotechnics or feel yourself travelling at the speed of light through the universe, with millions of worlds zooming past!

**L**ife is the most absorbing motion picture with its own wonderful characters and players. As we go about interacting with them, the mind weaves hundreds of gossamer dreams, projecting a rosy image that almost deludes the senses in taking it for real. Almost, for there are those rare moments when like a flash the conscience, the soul takes over and reveals the true nature of life, its events and the relations we feel so proud of.

It's a virtual horror to look at, once life has been disrobed of its false, rainbow-like resplendence. It's a realisation that raises the goose pimples as the falseness of life becomes obvious. Even the sweet relations turn out to be nothing more than sugar-coated bitter pills. And horror of horrors even the smile on one's lips is revealed to be a mere mask, a formal clothing intended to trick someone into 'friendship', or to win some selfish favour.

To the eyes, to the mind the same world, the same people, the same actions appear wonderful. But the Soul, impervious to the subtle games of Maya, presents a denuded picture, so grotesque at times that one feels like shutting it out and not believing it at all. And not so surprisingly this is what most of us do. The soul lets you into the Truth and the Truth is Bitter. So we throttle and suffocate the Soul till its earlier cry of warning sounds no more than a whisper or is fully cut out.

What the Soul unravels is no elixir for the Ego. None could in fact deal a harsher blow to the Ego than can a Soul bent upon 'enlightening' a man of the true picture of the world around us. It takes the Ego years to build so many castles in air and when it fears that the

wind of Truth is going to blow them away, it hits out, it retaliates till the mind is the Master once again and the Soul is left licking its wounds.

The mind can delude, it can well lead you to the very edge of your doom, but the Soul can never act thus. It's there to protest, to make you see that this world and all its charms are but chimerical. And there are two ways in which you can react to the Soul's warning - either you can stifle anxiety, in poverty, in anguish; or you can heed it, wake up and start off on the path of spiritualism that leads to supreme bliss, happiness, joy, perfect health and contentment.

If you believe there are other ways to get rid of the nightmares, the tensions, the anxieties most courteously gifted to you by the overly mundane world, you might as well try them! However know it that although science and its wonderful paraphernalia could help you get rid of physical pain and discomfort, it can't banish the fears, the commotion, the disturbance which haunt you mentally and spiritually.

You might even run away from the din and roar of the city, but there's no place in the universe that could give refuge to you from your mental, pain and distress. And yes, forget about popping a pill in, for it can never drive away the demons pounding in your head; it just dulls your sensitivity to the pain.

If there is any true panacea it can be offered only by the Guru, for as the holy texts state -  
*Agyaan Timiraandhasya Gyaanunjan Shalaakayaa Chukshuroonmeelitam Yen Tasmed Shree Gurave Namah.*

I pray to the Guru, the Spiritual Master who can drive the evil demons of darkness infesting my brain by lighting in it the Torch of Knowledge and by awakening my Soul.

And in fact the Guru does more than this, for he awakens the Soul permanently and for good, so that one's mind could never again override its wise dictates. When this happens, a balance is instilled into one's life, one remains no longer vulnerable to the Maya of this world and one learns to look at it as if one is actually watching a movie *ie*, one then knows that all the razzmatazz is just a subterfuge, a deception.

Linking up to the Soul means enjoying life to the full, for then a human becomes free of the base tendencies of the mind, like hatred, jealousy, envy and anger. It's only when the obscuring veils of these evil proclivities are burnt down by the Torch of Knowledge, that the world appears truly enjoyable. Each moment then spent in this world becomes a true celebration of life.

But the key to this Wonderland of Enlightenment is held by the Guru. No treasures, no riches can make him part with it. Yet the moment he perceives true humbleness, true love and unselfishness in a disciple he gladly gifts it away. Even his arsenal is unlimited and he can use any subtle means to channelise Divinity into you — a mere glance, a hypnotic stare, gentle loving words, flash of his smile, loud thunder-like laughter, a simple pat, a teasing pinch on the cheek, angry words and even a severe scolding or beating.

A simple and innocent looking gesture from him and you could be left swimming in an ocean of divine ecstasy, or soaring free as a bird in the open blue sky! You could even envision thousands of stars exploding all at once in a divine display of pyrotechnics or feel yourself travelling at the speed of light through the universe, with millions of worlds zooming past.

Simply unbelievable are the tricks that he has up his sleeves, yet when he wishes to be formal and ceremonious he transfers his divine energy through the means of *Diksha* or the ritual of Spiritual Initiation. And though this subtle process might last just a few seconds, its effects continue to echo down the lanes of the future, even into future births.

*Diksha* is no ordinary ritual, no everyday event and when it occurs the disciple fuses into the ocean-like, rather the universe-like vastness of the Guru. Once spiritually initiated life starts to miraculously transform, physically, mentally and spiritually, propelling one towards the highly cherished goal of Full Realisation, Total Enlightenment, where each moment of life is spent in creative endeavours, where success is assured even before one attempts something. Words cannot describe this experience. Can anyone tell how a rose smells?

You can only know by actually inhaling the

fragrance of the flower. Likewise in order to know how delightful and marvellous is this phenomenon of beholding the Infinite in a grain of sand, or merging into the Ocean and attaining oneness with its limitless expanse, you shall have to undergo the experience yourself.

But this can happen only when you get up and go to the Guru, when you let your Ego fall off and lovingly caress his feet and wash them with tears of devotion. This subtle chemistry is indispensable for it is in the sunshine of love that the lotus of your heart shall burst into full bloom. Only the tears of love and devotion for the Lord, the Guru can wash away all one's sins, pains, troubles and weaknesses.

And don't pinch yourself to make the tears flow, for it's the feeling that springs from the bottom of your heart which matters. Moreover you can never deceive the Guru; just empty words of praise or loud chants of 'Jai Gurudev' or 'Hail the Holy Master' won't have any effect on Him. In an instant He shall know that you are shamming devotion. Without love, without feeling even your prayers to the Almighty are futile!

Also you can't circumvent the Guru and approach the Almighty directly. And there's a good reason for this. The Guru, the Master is nothing but the Almighty in human form, who has chosen to descend to the mortal plane in a limited form, only to help unenlightened humans see Light! He is the channel to the Lord and fusing into Him means knowing the Divine fully and truly.

And the moment this happens the disciple is transformed into a virtual child, for only a child can enjoy even bits of happiness to the full, for only a child can cast off the specs of the mind and look at the world through the kaleidoscope of his heart. It's in fact while feeling, probing and searching with the heart that one has the first and true glimpse of the Divine.

This is what the texts call Realisation of the Soul. Once one has fused oneself totally with the Guru one can then easily find one's way to the *Para Brahman* — the Supreme One. Then the journey of life is not alone, one has the Guru who keeps guiding the person in various forms — as a solicitous teacher, as a helping friend, as a strict father and as a loving, caring mother.

This is the journey that takes one on the path of Spiritualism, the path of Divine Joy, the path of Total Fulfilment. But now that the spark of Divinity has been ignited in one's heart through Diksha, one feels reassured that one won't get lost on the way, one won't stop and turn back, for there is a gentle voice urging one to go on and on.

It's no doubt an individual journey but one is not alone now. And there's no prize for guessing whose are the fingers that caringly put one back on track whenever one starts to wander off, whose is the voice that hums encouraging songs or who keeps sending out streams of light that illuminates the path ahead!

# Bless me Mother



ॐ दु  
क्तापि  
तः ॥

**G**oddess Durga epitomises Mother Nature and the days of Navratri (21.09.98 to 29.09.98) constitute a very propitious time for praying to the deity and seeking her blessings for the year ahead. Wealth, health, success in education, job or trade, early marriage, riddance from problems, diseases and enemis – all boons can be had from the Mother. The Shastras specify a definite pattern of worship of the Goddess which is being produced here.

Take a bath early in the morning. Dress up in a yellow Dhoti / Saree and wrap yourself up in a *Guru Chadar* (special shawl). Sit in a clean, calm place on a yellow mat facing the North. On a low wooden seat spread a red cloth. Over it place a picture of Goddess Durga. The articles of worship in this Sadhana are – *Durga Yantra, Khadag Malu, Suraksha Gunika*, vermillion, rice grains, betel nuts, cardamom, fruit, sweets, a coconut, a copper tumbler, a pitcher, milk, curd, ghee (clarified butter), honey, sugar and flowers.

## Pavitrikaran (Consecration of the Self)

Take water in the hollow of your right palm and chant –

*Om Apavitrah Pavitro Vaa Sarvaasthaam Gatopi Vaa,  
Yah Smaret Pundareekaaksham Sa Baahyaa-bhyantarah  
Shuchih.*

Sprinkle this Mantrised water over your whole body.

## Achman

Take water in your hand and chant –

*Om Amritopastaranamasi Svaha.*

*Om Amritaapidhaanamasi Svaha.*

*Om Satyam Yashah Shreermayi Shree  
Shreyataam Svaha.*

## Disha Bandhan

Take rice grains in the right hand and throw them in all directions chanting thus –

*Om Apsarpantu Te Bhootaah Ye Bhootaah Bhoomi  
Sansthitaah.*

*Ye Bhootaa Vighnakartaaraste Nashyantu Shivaagyaa.  
Apkraamantu Bhootaani Pishaachaah Sarvato Disham.  
Sarveshaam-virodhen Poojaakarma Samarabhe.*

## Ganesh Smarann

Place a betel nut over a rice mound as a symbol of

Lord Ganesh. Pray to Lord Ganpati for success in Sadhana. Chant thus –

*Sumukhashcheik-dantashcha Kapilo Gajkarannakah.  
Lambodarashcha Vikato Vighnanausho Vinaayakah.  
Dhoonraketur-gannaadhyaksho Bhaalchandro Gajaanahan.  
Dwaadashei Taami Naamauni Yah Parachechhunnuyaadapi.  
Vidyaarambhe Vivaahे Cha Praveshe Nirgame Tathaa.  
Sangraame Sankate Cheiv Vighnastasya Na Jaayate.*

Offer vermillion, rice grains, flowers and sweets on the betel nut.

## Shree Guru Dhyan

*Dwidal Kamal-madhye Buddhsanvit Samudram.  
Dhrishivmayagaatram Saadhakaanugrahaarthatum.  
Shamit-timir-shokam Shree Gurum Bhaavyaami.  
Shree Guru Charom Karmalekhyo Narath Dhyaman Samapayam.*

Offer vermillion, incense, flowers, rice grains and sweets on the picture of the Guru.

## Sankalp

Take water in the cup of your right palm and speaking out the wish(es) which you would like to see fulfilled, utter your own name and surname. Let the water flow onto the floor.

## Kalash Poojan

Over the wooden seat covered with red cloth, place the pitcher filled with water on a mound of rice grains. On the side of the pitcher draw a Swastik with vermillion. Drop a betel nut and a rupee coin in the pitcher. Place a coconut wrapped in red cloth over the mouth of the pitcher. Join your hands and chant –

*Kalashaya Mukhe Vishnumuh Karthe Rudruh Samaashritah.  
Moole Tatrushtito Brahmaa Maadhye Matriganvaah Smritaaah.  
Kukshou Tu Suagaraastasya Septadweepaa Vasundharau.  
Rigvedo Yajurvedah Saamvedohyatharvannah.  
Angeishcha Sanhitaah Sarve Kalashantu Samaashritaah.  
Atra Gaayatri Saavitri Shaantih Pushtikari Sadaa.  
Aayaantu Yaj-maanasya Duritakshay-kaarakaaah.  
Devdaanav-samyaade Madhyamaane Madhaadadhou.  
Upannosii Tadua Kumbha Vidhira Vishnnunaa Svayam.  
Tvatah Sarvaanni Teerthaani Devaaah Sarve Trayi Sthitaa.*

Offer flowers on the pitcher.

Shower a few drops of water on the picture of the Goddess. Wipe it dry with a clean cloth. Offer on it vermilion, rice grains, flowers, incense, ghee lamp chanting the following verse –

*Durgaakshamaa Shiva Dhaatri Svadhaa Namostute.  
Aagachch Varade Devi Deityadarpanisoodani.  
Poojaam Grihaann Sumukhi Namaste Shankarpriye.*

### Yantra Poojan

Place the *Durga Yantra* in a steel plate. Bathe it with water or Ganga Jal. Prepare a mixture of curd, milk, ghee, honey and sugar (*Panchamrit*) and bathe the Yantra with it. Again bathe with water. In another plate draw a Swastik with vermilion and on it place the Yantra. Offer on it vermilion, rice grains and flowers respectively, chanting thus –

*Tilakam Samarpayaami Om Jagadambaayei Namah.  
Akshataan Samarpayaami Om Jagadambaayei Namah.  
Pushp Maalyaan Samarpayaami Jagadambaayei Namah.*

Thereafter take rice grains in the left hand and offer them on the Yantra, chanting thus –

*Om Durgaaye Poojyaami Namah.  
Om Mahaakaalyei Poojyaami Namah.  
Om Mangalaaye Poojyaami Namah.  
Om Kaatyayanyaei Poojyaami Namah.*

*Om Umaaye Poojyaami Namah.  
Om Mahaagouryei Poojyaami Namah.  
Om Ramaaye Poojyaami Namah.  
Om Singhvaabinyei Poojyaami Namah.  
Om Koumaaryei Poojyaami Namah.*

Offer incense, lamp, sweets respectively, chanting thus.  
*Dhoopam Aaghraapayaami Jagadambaayei Namah.  
Deepam Darshayaami Jagadambaayei Namah.  
Neivedyam Nivedayaami Jagadambaayei Namah.*

Thereafter offer clove, cardamom and a betel leaf on the Yantra chanting –

*Tamboolam Samarpayaami Namah*

Join your palms and pray to the Goddess –

*Durge Smritaa Harasi Bheetimshesh Jantoh.  
Svasthei Smritaa Mati-Mateev Shubhaam Dadaasi.  
Dauridrya Dukh Bhaya Haarinni Kaa Tradanya.  
Sarovkaar Karannaay Saraardra Chittaa.*

Thereafter chant four rounds of Guru Mantra, otherwise just pray to the Guru for success. Then take up the *Khadag Mala* and chant 11 rounds of the following Mantra –

*Ayein Hreem Kleem Chaamundaayei Vichche*

Chant eleven rounds daily for 9 days. Thereafter throw the Sadhana articles in a river, pond or well.

Sadhana Packet : 24/-

Do this before you go to bed at night. And sure enough in a dream you shall have your answer. If the dream is not clear try again the next night. Then throw the Braatya in an unfrequented place.

Sadhana Packet : 51/-

### FOR HENPECKED HUSBANDS ONLY

Most of the times it's the wife who is harassed, beaten, molested and abused by the husband. But there are cases where wives act out the part of the domineering partner. If you are troubled by your wife's callous nature this is the remedy for you. Take *Durbuddhi Nashika* in your right hand and chant *Om Hreem Vaam From Prashamay Phat* 35 times. After that offer the Nashika in a temple and see the wonders of this charm for yourself.

Sadhana Packet : 66/-

### OBEDIENCE IN CHILDREN

If parents have any weakness it's their child or children. But if the latter turn out to be disobedient, uncooperative and revolting in nature the home looks as if a tornado has hit it. If it's obedience, good manners and perfect behaviour that you wish from your child then start working this magic.

On *Shathuni* write the name of your child. Place it on a plate with five cardamoms and five cloves. Chant *Om Ayein Soum Kum Namah* 35 times regularly for 3 days. After that eat the cardamoms and cloves. Also offer a piece each to your child or children. The third day throw Shathuni into a river.

Sadhana Packet : 45/-

### HARASSED BY YOUR BOSS?

You are dedicated, you are always on time and up to the mark in your work, still there seem to be no end to the complaints from your boss who insults you, abuses you, creates problems for you and shouts at you without no apparent reason. Don't you fly off the handle! Just stay cool and try this for a change.

Tie *Jaya* in a white cloth and keep it in your drawer at your office. First thing in the morning on reaching the office just repeat *Om Ayein Loom Draam Namah* 11 times, while seated in your chair.

Do this for 7 days and after that throw the bundle in an unfrequented place.

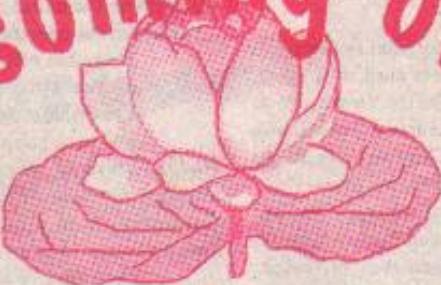
Sadhana Packet : 30/-

### DREAM YOUR WORRIES AWAY

Troubled by some problem? Well, so is everyone in this world. But racking your brains is not going to get you anywhere. For a quick and effective solution just go to sleep!

No pun there! Just observe this ritual before you hit the sack. In a steel plate draw a Swastik with vermilion or turmeric. On it place a *Braatya*. Speak out your problem aloud and chant *Om Hreem Hleem Greem Swapne Darshay Phat* 51 times.

# Blossoming of Life



*I*t was the age when chants of *Buddham Sharannam Gacchaam!* rent the air and thousands were taking to the life of monkhood in order to seek Nirvana in the feet of Lord Buddha.

Shronn was then a name epitomising the limit of epicurean pleasures and a life of total abandon. His days and nights were spent lost in the heady world of wine, women and wealth.

Then one day the Divine Grace of the Lord gently tugged at his soul. The touch instantly woke him up, and soon from one extreme he drifted into another. He became as harsh with himself as he was carefree earlier. When other monks would sit in meditation for an hour, he would stand stork-like on one foot in the harsh sun, meditating for hours; while they had one meal in a day, he would just nibble at a handful of grams once in a week; and while they rested four hours daily, he would lie down for an hour at the most.

The severe penance had its toll on his health and the once handsome, fair looking prince was reduced to a living skeleton and his skin was roasted ebony black by hours of standing in the sun.

The news was bound to reach the Lord and one day he accosted the determined monk. "Shronn", he said "I have heard that you play on the Sitar very well!"

"It's true, Tathagat!"

"Well! Then tell me, can music be produced if the strings are left too loose."

"Never!"

"Well, what if they are made too taut?"

"They shall go snap the moment you pluck at them. For perfect music the strings must be just right, neither too loose nor too tight."

"You know so much and still you are punishing yourself so severely. Why?"

The words struck home and like lightning it

flashed in Shronn's mind that it is perfect balance which can produce the best music in life, which can bring joy, happiness, contentment and fulfilment in life.

This is what Buddha meant by *Majhim Nikaya* or the middle path and this is what all savants over the ages have been preaching ie. it's the golden mean that can lead to Nirvana, Moksha or salvation.

But it is an irony that a human is always swayed by the extreme, he just cannot follow the middle path and is time and again pulled towards one end (pleasures) or the other (spiritualism).

A balance has to be struck if you wish to enjoy life to the full. Both aspects of life – material and spiritual – are equally important. Both have to be equally assimilated, otherwise the result shall only be problems, anxieties, troubles, poverty and tensions. Food you cannot do without but gluttony shall only mean falling prey to maladies; and even not eating is not going to open any doors to the Heavens, but might well make you end up on a hospital bed.

Running the whole show is the mind which takes devilish pleasure in pushing one to the limit, to the extreme. And the moment the mind stops wandering, true contentment sets in.

But to wander is mind's inherent nature. Suppressing it won't help. Only way out is fulfilling all wishes in life. Once you have had the taste of all pleasures, the mind shall itself remain perfectly poised. But still there is a danger of indulging too much in pleasures and the more you have of them the more the craving seems to increase.

For this one needs to give place to spiritualism too in one's life. Both materialism and spiritualism must go together and when this happens the most beautiful symphony of life is produced. When you are fully satiated both physically and spiritually, then only shall joy flow out of your being. Think, can a joyous, contented man be violent, jealous or greedy?

Just a material life shall reduce you to a wreck spiritually, with the finer feelings like love, kindness, compassion completely missing. And what would be the result — high blood pressure, a heart attack, tumour! And if you neglect the material aspect, and remain ever lost in spiritual ecstasy your body shall have to suffer, poverty shall haunt you and living in this world shall become impossible.

So it's a perfect balance which we seek and this can be best achieved through Rajyog Sadhana, a very marvellous ritual conceptualised by our ancient Yogis. It holds the key to totality in life wherein one can have wealth, health, comforts and pleasures, and at the same time delve into the spiritual world.

The most propitious day for the Sadhana is Thursday. You can also try it on 30.11.98. Early morning is the right time for it. Have a bath and get into a white Dhoti/

Saree and sit in a calm place on a white mat facing the East. On a wooden seat spread some fresh blossoms and on it place the *Poornnata Pradayak Yantra*. Light two ghee lamps. Offer flowers, rice grains, incense, fragrance and vermillion on the Yantra. Pray to the Guru for success. If spiritually initiated chant four rounds of Guru Mantra. Speak out any wish that you would like to get fulfilled. Pick up the *Poornnamadah Mealya* (rosary) and chant 10 rounds of the following Mantra —

*Om Hreem Trecm Poornnaram Svaatmaasiddhaye  
Om Namah*

This is a remarkable ritual that can completely change your lifestyle, bringing into it a refreshing gust of newness and fulfilment. Be undoubting and fully concentrated in Sadhana. On completion take the Yantra and rosary and throw them in a river.

Sadhana Packet : 190/-

## Shakambhari Sadhana

27. 11. 98

### The Divine Goddess

**F**amily life looked a waste of time, and with spiritual quest as an easy excuse, I ran away from home, friends, family and relatives. Little did I then understand that this was nothing but escaping from reality. This realisation came much later in the feet of my Guru. My true Master entered my life after several years of useless wandering, but it can be said that the first proper direction given to my wayward life came from Ma Nandita. And this way she was my first Guru, my first spiritual teacher, though I had been an unwilling and even untrusting disciple.

My perambulations took me to the North-East and there in the countryside I first heard the name, Ma Nandita. This was how all country folks called her. It seemed to stir some past memories. I had never met her before, this I was sure of, yet as soon as I would hear someone say — Ma Nandita, some strange feeling would grip me. I enquired from at least a score of villagers and each would delightfully burst into encomiums for the lady. This only served to magnify my curiosity and finally I decided to call upon her.

I reached her place and as soon as she saw me her face lit up with joy and she said — 'You have come!'

She must have been not more than fifty-five, give or take a year. Her hair was jet black, streaked with a few silver strands. Yet her face radiated with youthfulness and

motherly compassion showered incessantly from her eyes.

Despite the initial feeling of discomfiture, due to her almost smothering motherly love, I took a liking to the gentle lady. I stayed there for a night, then another and then another till it was a week before the wanderlust in me surfaced again.

The first night I was an eager enthusiast, craving to know something of the spiritual realms from Ma. I questioned her, probed her and tried to know all I could. This enthusiasm lasted for two more days whereafter I would sit silently and she would keep telling me new things. I wished to discuss, to argue but my limited knowledge had run out and I was forced to be a mere listener. Finally one day my patience ran out and I told her that I was leaving.

A look of concern flashed on her features and she said, "Why are you going? And where shall you go?"

I myself didn't know the answer, but I did not wish to look like a fool before the sagacious lady, hence I said, "Flowing water and a Yogi can never be stopped, Ma."

And before the words were out of my mouth I knew that I had ended up looking even more foolish than if I had accepted my helplessness.

The painful look that came into her eyes tore at my heart. I wouldn't have felt more embarrassed if she had slapped me. "Is this what your Guru has taught you?" she asked.

I was too stunned to try any more gimmicks and plaintively I told her that I had no Guru.

The words seemed to act like magic. The look of pain evaporated from her eyes and was replaced by the same old motherly love. She stood there lost in deep thought for some time, and then asking me to sit down she went into her small hut.

I did not have the heart to disobey her and quietly I sat down outside. It was mid-day and I waited till sun-set. Still there was no sign of her. Night started to creep in and I feared lest she was unwell. But I seemed to be under a strange spell and did not have the courage to get up and go inside.

It was almost midnight and I must have dozed off. There was a sudden rustling movement and in a moment I was wide awake to see Ma emerging from her hut. Her face shone with a divine glow and I looked at her with my mouth agape. Without uttering a single word she motioned me to follow her and started off at a brisk pace along a time-worn path that went uphill.

The climb was strenuous and at last reaching a spot where there was a large flat-topped rock she stopped. "Go and sit there", she said. I obeyed and a few feet from me she assumed her seat, facing away from me. Without turning her head, she strictly directed me not to leave my place and then she became engrossed in some Mantra recital.

It was a moonless night and very dark indeed. Yet an ethereal radiance seemed to dance all around Ma Nandita's seated form. I was curious what she was doing, but soon the curiosity gave way to anger and irritation under the fierce onslaught of bugs. I dared not to get up or make noise hence I let the bugs have a feast.

Very soon my head started to nod and I was lost to the world. What woke me up was a terrible sound 'Dhunnn!' And when I opened my eyes in shock, I saw a bewildering scene before me. I had to pinch my skin hard to convince myself that what I was seeing was no nightmare.

Ma Nandita sat as before, a few feet away, but right before her a mountain of a human form seemed suspended in mid-air. It was a woman, dark as the rain clouds in complexion and her belly swollen to amazing proportions. Her mammoth form was clad in deer skin and strings of sea shells adorned her neck, wrists, arms and ankles. The whole of her forehead was plastered with layers of vermillion, blood red in colour, and a similar ruby radiance poured out of her grotesque form.

Even more frightening and awestrking than her form was her way of breathing. She did it with her mouth and with such force that it seemed a gale was blowing. Was this the reason why Nandita Ma had stopped me?

Then a strange electric feeling pervaded my body, wave after wave of ecstatic current seemed to run through it till I could take it no more and fainted.

When I came to there was no one around. I was lying alone on the rock. Even Ma Nandits had disappeared. I did not even remember the way back to her hut properly and I felt indignant for having been left in the lurch thus.

Somehow I managed to find my way back and when I reached the hut the sun was just beginning to peer over the eastern horizon. She sat there with child-like innocence at the doorstep and looking at her love-filled face my anger too subsided.

Nevertheless I did complain why she had left me all alone. She only smiled at me and went inside to return with a bundle.

"Here take this! And go where you wish to.

I untied the cloth and found in it a Yantra inscribed on a copper plate, a Gutika and a rosary with strange beads.

When I looked at her questioningly she said, "It matters not whether one is a Sanyasi or a householder. Both are splendid lives, but it is never good to be a dependant.

This is a special Yantra and a Gutika. On the fourth night of the dark fortnight of a lunar month place these two on a red cloth and chant the Mantra. Do this regularly and this shall fulfil all your needs. Remember, it befits not a man to be dependent on others." Then she recited the Mantra and asked me to leave.

"But Ma where shall I go?" I asked.

She burst into merry laughter and said, "Don't you worry son, your stars shall direct you."

And how true her words proved to be, for only a few months later I came into contact with Param Poojya Gurudev Dr. Narayan Dutt Shrimati. It was he who revealed to me that Ma Nandita had gifted me with not just the glimpse of the Goddess Shakambhari, but also Her Sadhana, which as I have experienced, can help one restyle and ornament one's material life with all comforts and riches.

I have since returned to a family life and I feel indebted to the loving mother who without asking gave me such a wonderful food. And how true were her words that my stars would direct me, for I have reached the feet of a Sadguru whose mere presence in my life has made a desert bloom into an oasis. Thinking of Ma, sometimes I wonder how many others are there silently guiding lost souls onto the right path of Sadhanas?

*Who was this Ma, why had she helped me, was she some divine soul from the Spiritual Land of Siddhashram? I have myself had the vision of one Goddess, Shakambhari. Gods and Goddesses sure are real. Will I be able to have a glimpse of any more?*

My spiritual quest is on and in fact in the loving guidance of Revered Gurudev it is in earnest now. For the time being I feel delighted to be blessed by the Goddess Shakambhari who bestows no less than 14 boons, namely - handsome and healthy physique, longevity, happiness, happy married life, beautiful spouse, sons and daughters, victory over enemies, wealth, comforts, spiritual enlightenment, pilgrimages to holy places, a kind charitable disposition, a Sadguru, and salvation after death.

According to Revered Gurudev besides the fourth day of the dark fortnight of a lunar month, this Sadhana can also be tried on a Tuesday or a Friday of the same fortnight. There are no strict rules for the Sadhana. Only one needs a Shakambhari Yantra, Kamali Gutika and Shakambhari Mala. The Sadhak must place these in a copper plate and offer water, vermillion, rice grains and flowers on them. Then picking up the rosary one must chant 31 rounds of this Mantra -

Try it in the night and the next day throw the articles in a river or pond. The form of the Goddess might look frightening but she is very gentle and kind at heart. Hence have no fear and try the Sashana with an undoubting and dauntless mind.

# Magic Key

**S**uppose I told you that there is a single magical key to all comforts in life, which can not just open the doors to wealth, health, happiness, success and fame but can also help overcome all negative forces like tensions, pain, diseases, anxieties and even enemies. Do you find it hard to accept? Do I see you shaking your head in disbelief?

Well, push your doubts aside and get ready for the revelation! And also know it that when I talk of magic, I don't mean the Aladdin Lamp or its Genie. We are talking about a Real Force, a Real Power and not just an 'Open Sesame' charm extracted from the pages of fantasy.

Talking in terms of science, whose language we claim to best understand today, the basic energy in the universe is a combination of the positive and the negative, the proton and the electron. Translated into the esoteric this becomes *Yin* and *Yang* as the Chinese would allude to them, and *Shiva* and *Shakti* as the Ancients of the Land of Vedas would describe them.

*Shiva* is the Father and *Shakti* the Mother. And though Sadhaks and Yogis love to pray to *Shiva*, the natural instinct, the child in one prefers to supplicate the Mother, for succour, for strength, for help, for nourishment. Of all the forms of *Shakti*, the Jagdamba or Universal Mother is the most benevolent, the most compassionate and the most powerful too. To her it is simply unbearable to see her children in distress. Hence to win attention of the Mother, the Shastras prescribe a very potent ritual made all the more electric and dynamic by a very amazing Mantra –

*Ayam Navma Klim Chaumundae Vichche*

The Mother is loving and kind, but the Sadhak too has to prove his love and devotion for Her and for this one has to accomplish the Navamma Mantra Sadhana. Let's see how this ritual is performed. First of all one needs a *Hakeek* or *Sfutik* rosary. Next one has to chant the above Mantra 1.25 lakh times. This has to be done in 9 or 21 days, which comes to about 14,000 or 6,000 recitals respectively daily. This can mean anything upto 3 to 6 hours daily depending upon the duration you have chosen i.e. 9 days or 21 days. There are Sadhaks and Yogis who complete the day's recital in one continuous sitting. But the Shastras are lenient and one can even go in for 2 or 3 sittings in a day.

Why do the Yogis and Sadhaks go through such severe penance? Well the reason is simple enough, for looking at the boons that the Sadhana can produce the time and effort put in is simply nothing. Besides material accomplishments this ritual can bring much spiritually too. The Navaroma Mantra is also the basis of activation of the Kundalini and to make the recumbent energy in the Muladhara to spurt up there's no better way. It's the shortest, most powerful, yet most safe way to full enlightenment.

This Mantra is no ordinary one for it assimilates the power of the three Great Goddesses – Mahalakshmi (signifying wealth), Mahakali (signifying health, success and victory over enemies) and Mahasaraswati (signifying intelligence and sharp brains). Having all this means nothing can then stop one's progress in the material world as well as the spiritual realms.

But for the common man, a family man who hardly gets enough time for his own entertainment, this Sadhana might well remain just a dream, for it would be impossible for him to even think of devoting so much time. Then does it mean there's no hope for him. Well despair not! For as they say, where there's a will there's a way. Ordinarily there would be no alternative, but if one knew a Sadguru he could surely help. Any Guru would not do. It has to be a Sadguru, a Master nonpareil who has fully assimilated the power of Navaroma Mantra through Sadhana, who has Mastered all Siddhis and Mahavidyas.

And the wonderful way he could adopt is Diksha or spiritual initiation. Even Yogis first get initiated before they try this Sadhana. For the householders the kind Sadguru has a special Diksha, the *Shaktipaat Diksha*, through which he transfers the power of his own Sadhana into the Sadhak.

*Shaktipaat Diksha* means 80–90% Siddhi has been gifted to the person by means of a touch or a mere gaze or a Mantra by the Guru. After that the Guru prescribes a very short ritual that can make up for the rest and bestow 100% Siddhi upon one. An effort has still to be made, one still has to perform the Navaroma Mantra Sadhana but only in an abbreviated form.

The main essence has already been instilled into the Sadhak's body and soul by the Guru through Diksha, hence when the aspirant then chants the Mantra the Mother Jagdamba has no choice but to appear. She has to manifest and bless the Sadhak. Such is the power of the Diksha and the Mantra.

If you ask me there can be no better boon in life than such a spiritual initiation. But you too shall have to make an effort, you shall have to pray to the Sadguru for the Diksha. It's very rare to find such a Master but once you do reach Him don't leave his feet till he has initiated you. This special Diksha shall be given in the coming Navratri Sadhana Camp. Do avail this opportunity, otherwise you shall have missed a chance of not just a life time rather of several lives, of a millennium!

# पूज्य!

## आष्टमाब्दी वरद दी

### पूज्य हमारी लो

उ

दग्म से अन्त तक एक याचा है, जीवन एक प्रवाह का नाम है, जहाँ जीवन के प्रवाह में स्कावट आती है, तो जीवन अन्त होने हो जाता है। नदियाँ जीवन के विशाल स्वरूप को स्पष्ट करती हैं, कि हमें निरन्तर बहते हुए अनन्त सागर में बिलीन हो जाना है।

**समझायः** जार्यात् निस प्रकार सागर अपने आप में पूर्णता का दोतक है, सद्गुरुदेव का सम्पूर्ण जीवन भी मर्म की स्कावटों को तोड़ते हुए निरन्तर उच्चल जल से आप्नायित एवं प्रवाहमान रहा है। वे स्वयं अपने जीवन में ही समुद्र की भाँति पूर्ण धीर-गम्भीर एवं विशाल व्यक्तित्व रहे जिस प्रकार सागर अनन्त है, उसी रूप में गुरुदेव का पूरा जीवन अनन्त स्वरूप रहा और वे अनन्त में स्थापित हो गए, उन्होंने अपने जीवन में कई धाराएं स्थापित कीं, वे नदियाँ अज प्रतीक बन गई हैं।

बंचभूतात्मक देह आज अस्थि स्वरूप, भस्मीस्वरूप कलशों में स्थापित है और पूज्यत्री को श्रद्धाङ्गल देने के लिए यह भस्मी भारत वर्ष की विभिन्न नदियों में, विभिन्न स्थानों में प्रवाहित की जाएं, यह सभी शिष्यों की इच्छा है। किस स्थान को चुनूं और किस स्थान को छोड़ दूं, यह निर्णय कर पाना अति कठिन है। रोज पत्र आ रहे हैं, केन आ रहे हैं कि हमारे स्थान पर पूज्य गुरुदेव की विक्षण भस्मी का विसर्जन हो, उस कलश का हम पूजन करें, अतः तात्कालिक निर्णय लेना सम्भव नहीं हो पा रहा है।

पूज्य माताश्री की इच्छा के अनुसार दो कार्यक्रम निश्चित किए गए हैं, सर्वप्रथम तो हरिद्वार में दिनांक ३ सितम्बर को यह अमृत कुम्भ रूपी अस्थि कलश विसर्जित किया जाएगा। ३ सितम्बर, भाद्रपद शुक्ल १२, गुरुवार को यह अमृत कुम्भ रूपी अस्थि कलश विसर्जित किया जाएगा। दिनांक २ सितम्बर को **गुलान भवन, गोदाठ अस्थाश्रम, निकट ललतारा पुल, हरिद्वार** में रखा जाएगा। सब शिष्य आकर अपनी श्रद्धाङ्गल अपित करेंगे। दिन भर भजन कीर्तन एवं गुरु गान सम्पन्न होंगा। ३ सितम्बर को शुभ मुहूर्त में पूर्ण वैदिक रीति से विसर्जन किया सम्पन्न की जाएगी।

चैत्र नवरात्रि के प्रवाम दिन पर पूज्य गुरुदेव का प्रिय स्थान आरोग्य धाम, जिसका नया नामकरण शिष्यों के अनुरोध पर शक्ति स्थल कर दिया है, वहाँ स्थापना की जाएगी, जिससे हम भविष्य में उस स्थान पर एक जीवन्त स्मारक बना सकें और हजारों शिष्य आकर निरन्तर अपनी बात पूज्य सद्गुरुदेव को कह सकें।

ये दोनों ही कार्यक्रम अन्यन्त मल्ल, गरिमापूर्ण एवं भ्रावपूर्ण रूप में आयोगित करने हैं। किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रह सकती है। वे हमारे पूज्य सद्गुरुदेव, हमारे प्राणों के रूपन्दन थे और सदैव उसी रूप में रहेंगे। हमारी हर घटकन से एक ही आवाज “जय गुरुदेव” निकले।

गुलान, औंकारेश्वर, ट्यास, कृष्णा, कावेश्वरी, प्रयाण औंर वाशणी आदि स्थानों पर जो विसर्जन का कार्यक्रम होगा, उसकी पूर्ण जानकारी पत्रिका के अन्दे उंक में अवश्य दी जाएगी।

गु  
रु

किया से  
पूजन से  
तथा धू  
निम म  
अन्य प  
छोड़ उ  
वः स

करें तथा  
संबल्प

शाखाए  
स्वरूपा

वर्णा

स्पर्श क

ओ नार  
नमः मुर  
ह द्यार

अ  
त्त  
अ  
च

गुरु

# गुरुमारिक श्राद्ध

प्र

ता: ब्रह्मभूतं मे विस्तार से उठकर पूज्य गुरुदेव का मानसिक चिन्नन करें, उसके बाद स्नान आदि नियम किया से निवृत होकर शुद्ध घोटी पहने तथा गुरु चादर ओढ़ें। सभी पूजन सामग्री को पक्का करके पूर्वाग्रीष्मपूजा होकर शुद्ध आसन पर बैठें तथा धूप, दीप जलाएं। पवित्रीकणा के लिए बायं धाय में जल लेकर निम्न मंत्र बोलें और वाहिने हाथ से अपने ऊपर पानी छिड़के तथा उन्हें पूजन सामग्री को भी पवित्र करें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्ववस्थां जर्तोऽपि वा /  
वा: स्मरेत् पुण्डरीकरकं स वाहाम्बन्तः सुषिः ॥

इसके बाद दोनों हाथ जोड़ कर भगवान गणपति का स्मरण करें तथा पंचोपचार से पूजन कर वाहिने हाथ में जल लेकर निम्न संकल्प वाक्य का उच्चारण करें।

ॐ अष्ट मौदग्न गोशीयाणां विप्रवराणां यनुवेद  
शाखाध्यायिनां भग्न गुरुदेव नारायण वत्त श्रीमालिनां निखिल  
स्वस्पाणां श्राद्ध भूमि करिष्ये।

जल भूमि पर छोड़ दें।

## तर्जा ध्यास

निम्न स्वर्गों को बोलते हुए निर्दिष्ट अंगों को वाहिने हाथ से स्पर्श करिये—

ॐ परम नमः ब्रह्म रन्धे । ॐ तत्त्वाय नमः दक्षिणे नेत्रे ।  
ॐ नारायणाय नमः वाम नेत्रे । ॐ गुरुभ्यो नमः दक्ष वाम कर्णे । ॐ  
नमः मुखे । ॐ ऋन्मी नमः सर्वगे ।

## ध्यान

दोनों हाथ जोड़कर पूज्य गुरुदेव का ध्यान करें।  
अस्त्रण्ड मण्डलरक्तरं ब्राह्मं वेद वराचरम् ।  
तत्पवं दक्षितं वेद तस्मै श्री गुरुदेव नमः ॥  
उक्ताक्षतिमिरान्धस्व इकावाचलस्तस्तरक वा ।  
वक्तु उत्तरीस्तिं वेन तस्मै श्रीगुरुदेव नमः ॥

## गुरु पूजन

ॐ श्री पार्व, अर्च, स्नानं समर्पयामि नमः ।  
ॐ ही वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि नमः ।  
ॐ ऐ चन्दनं, अक्षतान् पूष्पगाल्याम् समर्पयामि नमः ।  
ॐ कल्पी धूपं, दीपं दर्शयामि नमः ।  
ॐ हल्ली नेवेदं, फलं, ताम्बूलं समर्पयामि नमः ।  
दोनों हाथों में पुण्य लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

प्रत्येक लाज के गुजल पड़ तो जलमी को पूज्यपाद शुद्धदेव का मानसिक श्राद्ध दिवला लान्पन्न होगा । पञ्चतृत व्रातशोक विधि साध्यकाँ व द्विष्ठाँ के लिए उत्तुकूल मिर्द्द होगी, जिसके ते वर्ष पर्यन्त हब माछ श्राद्ध अर्पित कर जाकरे हैं ।

ॐ ब्रह्मा लुभन्न धुम्पाणि वधा कलोदभवानि च  
युध्यत्प्रसिद्धि मंथर वत्तं गृहाण यरमेश्वर ।  
पुण्य को समर्पित कर दें।

## प्रार्थना

युरुर्द्वारा युरुर्विष्णु युरुर्वदो महेश्वरः ।  
युः: लक्ष्मीत् यरद्वारा तस्मै श्री गुरुदेव नमः ॥

फिर गुरु प्रसाद की याली भजाकर वीकी पर मध्याहित करें तथा निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ ब्रह्माद्यासालीवन्तरिक्ष (मूँ) श्रीष्टो द्वौः समवर्तत ।  
पद्मस्तं भूमिर्दिः श्रोत्रांस्तथालोकः अकल्पवद् ।

ॐ इहारपर्णं इहाहविः इहाग्नो इहाप्नार हुतम् ।  
इहो व तेज वर्ततव्यं इहाकर्म समाधिना ॥  
पांच आचमनी जल इन मंत्रों को बोलते हुए छोड़—

ॐ प्रणव स्वाहा, उमे अरपालाय स्वाहा, उमे व्याजाय  
स्वाहा, उमे उद्बालाय स्वाहा, उमे समानाय स्वाहा ।

इसके बाद गोग्रास के लिए याली में भजाकर भोजन को रखें। और निम्न मंत्र का पाठ करें—

ॐ नमो नमस्ते ज्ञेविनव पुराणपुरुषोत्तम ।  
इवं श्रद्धं हृषीके श रक्षतां सर्वतो दिशि ॥

तत्पत्तात् एक आचमनी जल छोड़ दें। इसके बाद भवान आदि के लिए पंचशास्त्र के रूप में दूसरी याली भजाकर स्पर्शित करें तथा हाथ जोड़ कर निम्न मंत्र का तीन बार उच्चारण करें—

ॐ तत्र पितरे सरवद्वद्वं वधर भाजमावृष्टवद्वद्वद्  
एक आचमनी जल भूमि पर छोड़ दें तथा करबद्ध प्रार्थना करें—

ॐ नमो वः पितरो रसाय, नमो वः पितरः शोकाय, नमो वः  
पितरः जीवाय, नमो वः पितरः स्वधायै, नमो वः पितरः षोशय, नमो वः  
पितरः गन्धय, नमो वः पितरः पितरो, नमो वो गृहान्, पितरो  
वत्तसतो वः पितरो देव्या ।

इस प्रकार प्रार्थना के बाद प्रणाम अर्पित करें। गुरु प्रसाद की याली को प्रसाद के रूप में सभी गृहण करें।

इस दिन नुस्खे से ये गठबहिष्ठत  
पित्री तिशेष कार्य का संकल्प आवश्यक है। और  
आदर्शों को पूर्ण करने हेतु गपाला भाव  
रखायित करें।

## साधना शिविर पुर्व दीक्षा समारोह

6 वित्तम्बर 98

वलसाड, बुजूदत

पितृ दोष निवारण, व्यक्ति शान्ति, तंत्र वादा नियारण शिविर

शिविर स्थल - ज्योति हाल, हाक भाजी गार्ड के सामने

- रमेश पाटिल, नवसारी 02637-53188 • रमेश प्रजापति, वलसाड 02632, 46738, 53303 • सुदरेश जैयर, स्टेट हॉक आफ इडियो, अहमदाबाद 079-5506830, 5506476, जयश आम वेसाई, वलसाड 41690 • देवन्द्र पंचाल, उदवाडा 02638-70249, संजय आर पारीक, वलसाड 49098 • राजूशाही प्रजापति, वलसाड 41469, • सुमन प्रजापति, वलसाड 46714

21-22-23 वित्तम्बर 98

हिल्सी

सर्व सिद्धिप्रदा नवरात्रि साधना शिविर  
शिविर स्थल - भाद्रोब्यधाम, पीतमपुरा 011-7028044, 7182248, 7196700

28-29 वित्तम्बर 98

मुम्बई

महादुर्ग महालक्ष्मी साधना शिविर  
एवं नवचण्डी यज्ञ  
शिविर स्थल - भूला भाई देलाई आरोग्य भवन हाल, कवंदीवली(पाठिघाट), मुम्बई

- राजेन्द्र नागभिरे 022-4984932 • जयन्तदास गुप्ता, वारी 7601780 • नरेन्द्र आयाय 8101522 • विल सोनी 5492333 • विदेक शही, माडिंग 4485514 • अनिल बरेगा, बोरिवली 8067375 • डॉ किशोर डमोया 4128763

11 अक्टूबर 98

बुद्धत, बुजूदत

नवद्युह शान्ति साधना शिविर  
शिविर स्थल - लेवा पाटीदार समाज की वाडी, अहमदाबाद छाइपटल के सामने।

- किरीट भाई पटेल, गुरुत 0261-424766 • दशरथ प्रजापति, सूरत 483227, • नागजी भाई सूरत 432199 • सन्देश पाटिल, नवसारी 02637-53188 • जितन दलाल

18-19 अक्टूबर 98

जोधपुर

दीपावली महोत्सव  
शिविर स्थल - गुरुद्वारा, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कालोनी, जोधपुर - 342 001. फोन : 0291-32209

31 अक्टूबर - 1 नवम्बर 98

जगाली

महालक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल - (बाग धमसू) नगर एवं जगाली के नव्य  
• श्री एस. आर. ठाकुर, मनाली, 01902-52201, • श्री एम. आर. वशिष्ठ, पण्डोह, 01905-82221.

6-7 नवम्बर 98

ओधाल

संन्यास दिवस समर्पण समारोह

शिविर स्थल - दशहरा मैदान, टी.टी. नगर  
• श्री अरविन्द सिंह • डॉ. साधना सिंह 0755-583637

विदेश - शिविर की भाँति के अन्तर्गत खेपत लगानी विनापन समाज में अधिक रव वस्त्री कलरा लगानी स्थापित होगा। फोन : 0755-583637/554623

22 नवम्बर 98

चारीबाह

दस महात्मिया साधना शिविर

शिविर स्थल - सजातन धर्म मण्डिर, वर्मगाल, लैकटर 37-सी.

- आम्र काशीलय, (डॉ. एस. चौधरी), वार्डीगढ 0172-600488.
- श्री आर. डॉ. जोशी, चम्पीगढ 0172-562826.571914.
- श्री अरुण विश्वास, वार्डीगढ 0172-700756.
- श्री विजय मलोत्रा.
- श्री टी. एल. गोपल • श्री विनोद कपिला, रोपड 01881-22022.
- श्री रवि कुमार, रामराला, 06128-62583.
- श्री रोजन जेम्स, लुधियाना 0161-665699

12-13 वित्तम्बर 98

जादुजोड़ा

स्वर्णायिती महालक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल - दाटानगढ़ से 20 किलोमीटर दूर

- श्री आर. एस. राध. जादुजोड़ा 0657-730432.
- श्री दीपक शिंका 0657-730734.
- श्री एस. एल. ओझा, राजी, 0651-541938.
- श्री देवार्थीश महापात्र.
- श्री गोपाल गांवी

दीक्षा समारोह, (विसर प्रान्त में)

15 वित्तम्बर 98 - जगदेवपुर, 17 वित्तम्बर 98 - गंगी,

19 वित्तम्बर 98 - डाल्टनगढ़, 20 वित्तम्बर 98 - बजाद आयोजक • श्री एस. एल. ओझा, राजी, 0651-541938

## आनंदनारी

आनंदनारी यह नियम परिक्रमा 'मन-तत्र-यत्र विज्ञान' दो महीने अग्रिम गतिशील होती है। अर्थात् यह अक शिवम्बर वा है, जो हमने नवम्बर मास की साधनाएं व प्रयोग दिये जाते हैं।

ऐसा क्यों? इसलिए, कि साधनाओं के लिए यह उपकरण आवि की अवश्यकता होती है, जो यह लिया हो। प्राप्तवेतना युक्त है। आपकी सुविधा के लिए पीस्टकार्ड परिक्रमा में सामग्री होता है, जिस पर कोई डाक अथ नहीं देना होता यह अप साधने रहते हैं और दिलन छोड़ा रहता है, जिस लकड़ी में आप ऐसे दालन पर पीस्टकार्ड रखते हैं, जो समय पर नहीं नहुए पाता और आप उस कालाना से यक्षित रह जाते हैं। योकि आपका पीस्टकार्ड हम तक पहुँचने में 15-20 दिन का समय लगता है, फिर तुम्हारी ऐसेंग उसमें में 7-8 दिन का समय लगता है तथा आप तक वीपीयी प्रमुखने में 20-25 दिन लग जाते हैं, इस साथ प्रक्रिया में 50-65 दिन, अर्थात् दो महीने लग जाते हैं, कलर्सलप विलम्ब वै पीस्टकार्ड भेजने से वह साधना मुद्रौन्निकल जाता है और उस साधन से आप अधिकत यह जाते हैं।

इसलिए यह अन्यको केवल तो ही सब लिया जानी है, तो बिना हीना-हायाला किये, तुरन्त पीस्टकार्ड भर कर मैज देना चाहिए, योससे कि सामग्र धमसू की जगाली विलम्ब वै पीस्टकार्ड भेजने से वह साधना मुद्रौन्निकल जाता है और उस साधन से आप अधिकत यह जाते हैं।

(मन-तत्र-यत्र विज्ञान के नवीनतम अक में प्रकाशित नियमों के अन्तर्गत)

वाल है - आप आपकी या दीवा में लगायित सभी दार्त नव विनापन को यह दीवा है।

यदि आप 60 रु. से कम की राम्री मांदते हैं तो आप राम्री युक्त

तथा 20 रु. की वी ने शुक्र योड़ कर यनरायी अग्रिम भेज दे।





**COLLECTION OF VARIOUS**  
→ HINDUISM SCRIPTURES  
→ HINDU COMICS  
→ AYURVEDA  
→ MAGZINES

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

Made with  
  
By  
**Avinash/Shashi**

[creator of  
**hinduism**  
**server!**]

